मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532

मासिक जागरण पत्रिका

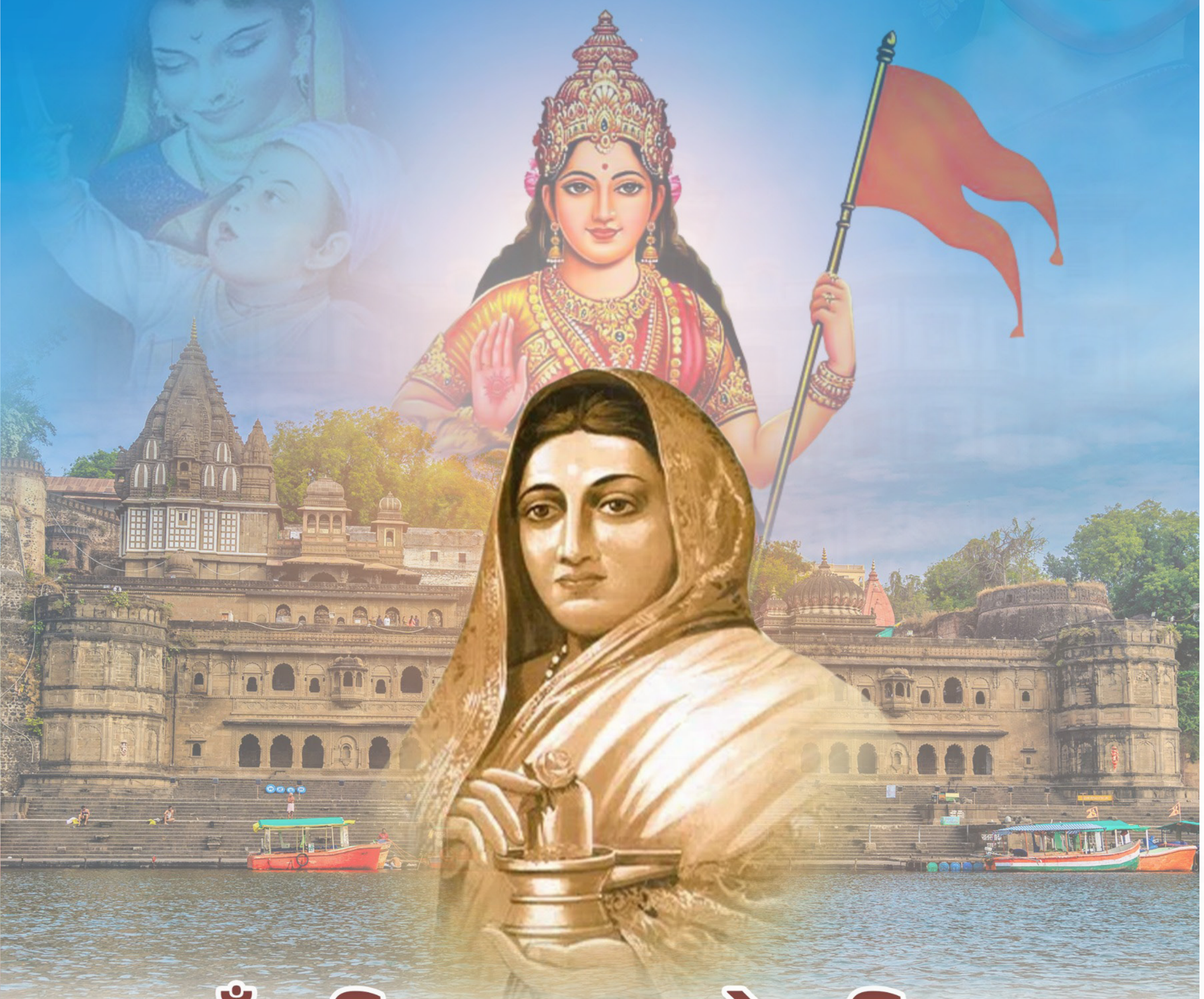

माँ अहिल्या: मातृत्व के प्रतिमान

सृष्टि में माँ का अद्वितीय स्थान है। माँ वात्सल्य,करुणा, ममता, स्नेह, दया की साक्षात् प्रतिमूर्ति है।
इन्हीं भावों को जीवन में लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर ने धारण किया।
मातृत्व भाव पर आधारित जाग्रत मालवा का विशेषांक।

MPIDC MP INDUSTRIAL DEVELOPMENT CORPORATION LTD.
MSME
निवेशकों का बढ़ता विश्वास, क्षेत्रीय उद्योगों का संपूर्ण विकास
INVEST MADHYA PRADESH
ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट
फरवरी 2025, भोपाल
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव
मध्यप्रदेश में औद्योगिक निवेश की गति को बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल पर
क्षेत्रीय औद्योगिक विकास के लिए रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव का श्रृंखलाबद्ध आयोजन किया जा रहा है।
नये निवेश से क्षेत्रीय स्तर पर उद्योगों की उन्नति के साथ युवाओं के लिए रोज़गार के अवसरों की नई राहें खुल रही हैं।
उज्जैन, जबलपुर, ग्वालियर, सागर, रीवा इंडस्ट्री कॉन्क्लेव और मुंबई, कोयम्बटूर, बेंगलूरु, कोलकाता में हुए
निवेशकों के साथ इंटरेक्टिव सत्रों में कुल 2 लाख 76 हजार करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए
जिनसे 3.28 लाख से अधिक रोज़गार के अवसर सृजित होंगे
निवेशकों को विशेष सुविधाएं और नीतियां-
सरकार ने औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए सिंगल विंडो सिस्टम, निवेश प्रोत्साहन योजना और कस्टमाइज पैकेज जैसी सुविधाएं प्रदान की हैं। नए निवेशकों को उद्योग मित्र नीतियों के साथ सरल और सुगम निवेश प्रक्रिया सुनिश्चित की जा रही है।
एक्सपोर्ट हब बनता मध्यप्रदेश
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रयासों से मध्यप्रदेश न सिर्फ औद्योगिक हब बन रहा है बल्कि हर क्षेत्र में उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। कनेक्टिविटी, उद्योग-अनुकूल नीतियां और मजबूत अधोसंरचना से मध्यप्रदेश निवेशकों की पहली पसंद बन चुका है। औद्योगिक विकास के साथ-साथ निर्यात में अभूतपूर्व वृद्धि : पिछले वित्त वर्ष में 13,158 करोड़ रुपए के दवा उत्पादों का निर्यात। निर्यात दोगुना करने का लक्ष्य : आने वाले तीन वर्षों में निर्यात को दोगुना करने का संकल्प, जिससे प्रदेश की अर्थव्यवस्था में मजबूती आएगी।
Website : invest.mp.gov.in

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय

सेवा सुशासन और जनकल्याण का अडिग संकल्प

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

नागरिक सुविधा और राज्य की प्रशासनिक प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए तकनीकी सुधार डिजिटलाइजेशन, ई-रिकॉर्ड के माध्यम से आम-जन के कार्यों को आसान बनाना और हितधारकों को सीधा लाभ देने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है।

सरकार ने सुशासन और नागरिक सेवा को प्राथमिकता देकर हर वर्ग का लाभ सुनिश्चित किया है। इन अभूतपूर्व प्रयासों से मध्यप्रदेश अब उन्नति के नए युग में प्रवेश कर रहा है।

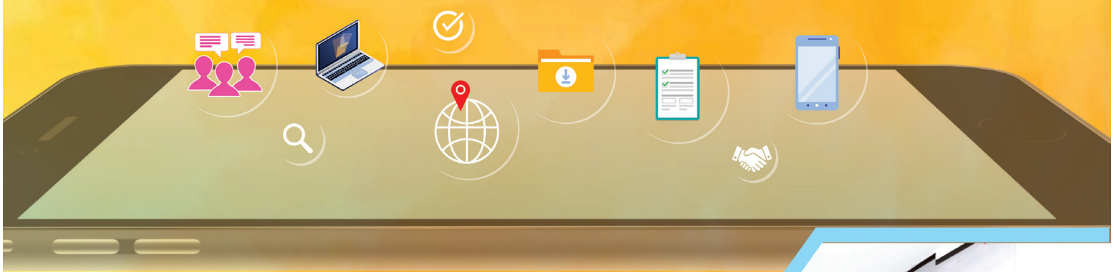

- नामांतरण, बंटवारा जैसे विभिन्न राजस्व प्रकरणों के ऑनलाइन निराकरण के लिए सभी 55 जिलों में साइबर तहसील परियोजना लागू। यह पहल करने वाला मध्यप्रदेश पहला राज्य।
- संपदा 2.0 रजिस्ट्री के लिए ई-पंजीयन एवं ई-स्टैम्पिंग की नवीन प्रणाली। दस्तावेजों के ऑनलाइन निष्पादन, डीड वेलिडेशन आदि कार्य होंगे आसान।
- मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में संभागीय समीक्षा बैठकों का आयोजन। कानून व्यवस्था के साथ बड़े पैमाने पर किए गए विकास कार्यों के भूमिपूजन एवं लोकार्पण।
- राजस्व महाअभियान के दोनों चरणों में 80 लाख राजस्व प्रकरणों का निराकरण।
- जिला, संभाग, तहसील आदि की सीमाओं के पुनर्निर्धारण के लिए पृथक प्रशासनिक इकाई पुनर्गठन आयोग बनाने का निर्णय।
- मध्यप्रदेश सरकार के मंत्री अब स्वयं भरेंगे अपना इनकम टैक्स।
- प्रदेश की अंतरराज्यीय सीमाओं पर 1 जुलाई, 2024 से परिवहन जांच चौकियों के स्थान पर रोड सेफ्टी एंड इन्फोर्समेंट चेकिंग पॉइंट की व्यवस्था शुरू।
- वॉरंट और समन की तामील के लिए ई-तकनीक का उपयोग प्रारंभ। मध्यप्रदेश ऐसा करने वाला देश का पहला राज्य है।
- प्रदेश के किसी भी जवान के शहीद होने पर दी जाने वाली सहायता राशि में से 50% शहीद की पत्नी और 50% माता-पिता को देने का निर्णय।
- 105 वर्ग मीटर तक के आवासीय भू-खंडों के लिए ऑनलाइन आवेदन कर डीम्ड अनुज्ञा प्राप्त करने और 300 वर्ग मीटर तक के आवासीय भू-खंडों पर त्वरित अनुज्ञा प्रदान करने की व्यवस्था लागू।
- बालाघाट के कमकोदादर में हुई मुठभेड़ में नक्सलियों को धूल चटाने वाले 24 शासकीय पुलिस सेवकों का आउट ऑफ टर्न प्रमोशन।
- प्रदेश में थानों की सीमाओं के पुनर्निर्धारण का कार्य तेजी से जारी।
- शासकीय सेवाओं में महिलाओं को अब 35% आरक्षण।
- भूतपूर्व सैनिकों को शासकीय नौकरियों में आरक्षण।

मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2024

भारत माता की आरती

आरती भारत माता की
जगत की भाग्य विधाता की

सर पर हिमगिरिवर सोहे
चरण को रत्नाकर धोये
देवता गोदी में सोहे
रहे आनन्द, होय ना द्वन्द, समर्पित छन्द
बोलो जय बुद्धि प्रदाता की
आरती भारत माता की ... 1

जगत से लगती यह न्यारी
बनी है इसकी छवि प्यारी
ये दुनिया देख जले सारी
देखकर झलक झुकी है पलक, बड़ी है ललक
कृपा जहाँ बरसे दाता की
आरती भारत माता की ... 2

गोद में गंगा–जमना लहरे
भगवा फहर–फहर फहरे
लगे है घाव बहुत गहरे
हुए है खण्ड, करेगें अखण्ड, देकर दण्ड
मौत परदेशी दुःख दाता की
आरती भारत माता की ... 3

पले जहाँ रघुकुल भूषण राम
बजाये बन्शी जहाँ घनश्याम
जहाँ का कण–कण तीरथ धाम
है अपना धर्म, साथ शुभकर्म, यही है मर्म
गूंजे ध्वनी श्रीराम की गाथा की
आरती भारत माता की ... 4

बढे हिन्दू का स्वाभिमान
किया केशव ने जीवनदान
बढाया माधव ने सम्मान
चलेगें साथ,हाथ से हाथ उठाकर माथ
शपथ गीता गौ माता की
आरती भारत माता की ... 5

– देवकृष्ण व्यास, देवास

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.
शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

HIGH PERFORMANCE CHIP
MULTIPLE PROTECTION
AUTOMATIC RECOGNITION
LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
PWN CHARGE
SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

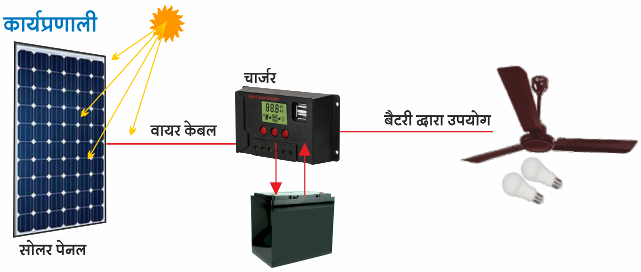

India : Toll Free No. 1800 103 5555

* नियम व शर्तें लागू

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

जाग्रत मालवा
मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 04 अंक : 09

अहिल्या पर्व विशेषांक

माघ मास
युगाब्द ५१२६

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास

संपादक
राकेश दाँगी

संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
राजेश सोनी
अशोक वर्मा
योगेश भोपे
सौरभ मारु
अमन व्यास

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341

Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक राकेश दाँगी
फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

भारतवर्ष मातृप्रधान देश है। हमने अपने राष्ट्र को माता के स्वरूप में देखा है और भारत माता मानकर इसकी पूजा करते हैं। बहुत ही श्रद्धाभाव से हम भारत माता की जय का उद्घोष करते हैं। हिन्दू संस्कृति में नारी को कन्या, माता और गृहिणी के रूप में पूजा जाता है। नारी माता के रूप में सदैव पूजनीय है। वह शक्तिस्वरूपा है। माँ ज्ञान और समृद्धि का प्रतीक है। माँ मानव की प्रथम गुरू है। माँ सृष्टिकर्ता, पालक और मार्गदर्शक होती है। माँ प्रत्येक परिवार की धुरी होती है और दो कुलों को जोड़ने वाली होती है। माँ श्रद्धा, प्रेम, भक्ति, सेवा, समानता, समरसता, एकात्मता, त्याग, बलिदान, समर्पण, समन्वय, कर्मठता, सहिष्णुता व ममता की साक्षात प्रतिमूर्ति है।

माँ राष्ट्र और समाज की श्रेष्ठ गौरवशाली व मानवता के विकास की पोषक, संरक्षक एवं संवर्धक होती है। गुरू से भी अधिक वन्दनीय, क्षमा की मूर्ति तथा साक्षात् ईश्वर का स्वरूप है। माँ विश्व कल्याण की भावना से परिपूर्ण है। माँ के बिना सृष्टि की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। हिन्दू जीवन दृष्टि से इस भूखण्ड को हिन्दूभूमि, पुण्यभूमि, मातृभूमि, धर्मभूमि, कर्मभूमि, महामंगलमयी मानकर श्रद्धा से शीश झुकाया है और इसके लिए जीने-मरने की प्रार्थना की है।

आज भी अपनी मातृभूमि का खंडित रूप हमें बहुत दुःखी करता है और अखंड भारतभूमि का सपना हम सब के मन में पल रहा है। कब तक खंडित माता का पूजन करते रहेंगे। अतः एक दिन हमारी भारत माता अखंड होगी ऐसा मन में पूर्ण विश्वास है। अखंड भारत हमारा सपना ही नहीं संकल्प है।

सिर्फ मातृभूमि को ही नहीं हमने गौमाता, गायत्री, लक्ष्मी, सरस्वती, नवदुर्गा और अनेक शक्ति पीठों को माता के साक्षात् रूप में पूजा है। इसके अलावा सप्तनदियों में गंगा, गोदावरी, यमुना, सिन्धु, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा को भी माँ के रूप में सदा पूजते हैं। अन्न की देवी माँ अन्नपूर्णा सदैव पूजनीय है। मानव जीवन में जितने भी रिश्ते होते हैं उन सब में माँ का रिश्ता अत्यन्त पवित्र और श्रद्धामयी होता है। यह अंक मालवा ही नहीं अपितु संपूर्ण राष्ट्र की गौरव लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर को समर्पित है। किसी एक अंक में उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को समेटना संभव नहीं है। महासागर को एक छोटी सी गागर में भर तो नहीं सकते किन्तु उनके जीवन के प्रमुख अंशों को समावेशित करने का प्रयास किया है। मातृशक्ति के चरणों में यह पुष्प श्रद्धा सहित समर्पित है।

सादर वन्दे मातरम्, भारत माता की जय

- देवकृष्ण व्यास

MANGUBHAI PATEL
GOVERNOR, MADHYA PRADESH
BHOPAL - 462052

सत्यमेव जयते

मंगुभाई पटेल
राज्यपाल, मध्यप्रदेश
भोपाल - 462052

क्रमांक 408/राजभवन/2024
भोपाल, दिनांक-06 दिसम्बर, 2024

संदेश

हर्ष का विषय है कि मासिक जागरण पत्रिका जाग्रत मालवा, इंदौर द्वारा जनवरी माह में **अहिल्या पर्व** विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

देवी अहिल्या बाई राज्य के कुशल प्रबंधन के लिए विख्यात है। उनके धार्मिक, प्रशासनिक और लोकोपकारी कार्यों ने उन्हें लोकमाता का दर्जा प्रदान किया है। ग़रीब, वंचित, स्त्री शिक्षा और सम्मान के प्रति उनकी विशेष संवेदनशीलता ने उन्हें जनमानस में पूजनीय बनाया है। माता अहिल्या बाई, भारतीय नारी के आदर्श के रूप में वर्तमान और भावी पीढ़ी के लिए हमेशा प्रेरणादायी रहेगी।

आशाा है, विशेषांक माँ अहिल्या बाई के महान व्यक्तित्व और कृतित्व के यशोगान से समाज और नई पीढ़ी को परिचित और प्रेरित कराने में सफल होगा।

शुभकामनाएं,

मंगुभाई पटेल
(मंगुभाई पटेल)

दूरभाष : 0755-2858828, 2858830, फैक्स : 0755-2858832, ई-मेल : mprajbhavan@mp.gov.in

अनुक्रमणिका

विषय	लेखक	पृष्ठ क्रं.
मातृभूमि पूजनीय माता है	डॉ. मोहनराव जी भागवत	10
सृष्टि की रचना और परमात्मा	दीदी माँ साध्वी ऋतंभरा	12
माँ अहिल्या -: मातृत्व के प्रति मान	अमन व्यास, इन्दौर	
जीवन प्रबंधन की पाठशाला लोकमाता देवी अहिल्याबाई	डॉ. माला सिंह ठाकुर	15
लोकमाता अहिल्याबाई होलकर : आदर्श शासक, महान नारी	अमित राव पवार, देवास	17
महान रानी - माता अहिल्याबाई	दुर्गेश कुमार साध	19
राष्ट्र की सच्ची सेविका माँ अहिल्या	निखिलेश माहेश्वरी	21
अहिल्या काल के त्योहार	अरूंधती सिंह चंदेल	25
सनातन वाग्मय में "माँ"	पद्मनाभ तिवारी	27
धार की रानी, द्रौपदीबाई	लोकेंद्र शर्मा, उज्जैन	28
कुलदेवी परम्परा	आदित्य पांडे	31
शत-शत-शत अभिवादन	लक्ष्मीनारायण भाला	32
स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन: संवाद, सामर्थ्य और समृद्धि की त्रिवेणी	डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री	35
जीवन की प्रथम पाठशाला : माँ	स्मृति आदित्य	37
मोक्षदायिनी: माता शिप्रा	डॉ राजेश रावल 'सुशील'	40
भारत माता : राष्ट्र को माँ की उपमा	डॉ. भारती जोशी	46
भारत की महान माताएं	अर्चना मंडलोई	49
संस्कार और मूल्य : माँ की शिक्षा	राजेश्वरी भट्ट, बुरहानपुर	50
माँ- शिक्षा की पहली सीढ़ी	जितेन्द्र चौधरी	53
विरासत के साथ विकसित मध्यप्रदेश निर्माण के संकल्प का एक वर्ष	डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री	54
भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति में मां की महिमा और स्थान	डॉ. मनमोहन प्रकाश	56
कल्पनाओं से परे एक व्यक्तित्व: सुधा मूर्ति	डॉ मनीष काले, इंदौर	60
प्रकृति माँ का आँचल	डॉ सोनल मेहता, भोपाल	64
जननी होना प्रकृति है, माँ होना संस्कृति	पं. श्याम मनावत	65
नदी माँ और मानव	डॉ. सुनीता फडनीस	67
परंपरागत पूजन से सदैव रहती है मां कुलदेवी	रिंकेश बैरागी, झाबुआ	68
मातृभूमि की संकल्पना	अनिल वानखेडे, बुरहानपुर	70
भारतीय समाज में माता का स्थान	सनी राजपूत, उज्जैन	71
भारतीय संस्कृति में मातृत्व का महत्व	निलेश कटारा, झाबुआ	73
माँ शबरी की ममता	श्री गोपाल सोनी, उज्जैन	74
संचार का सर्वोच्च माध्यम है माँ हिंदी	डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'	75
वैदिक वाग्मय में मातृत्व भाव	डॉ. अभिषेक पाण्डेय	76
माँ नर्मदा	श्रीधर जोशी, इन्दौर	80
माँ और मातृभूमि एक दूजे के पर्याय	डॉ विकास दवे	81
माँ की सनातन संकल्पना	डॉ. सुब्रतो गुहाँ	84
चतुर्वेद-उपनिषद एवं पुराणों में माँ- 'या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता'	डॉ. कामना लाड़	85

मोयरा® सरिया
CRS - Fe 550
CRS
CRS – घर को दे दो गुनी उम्र
जंग रोधी
क्योंकि इसमें है NICKLE, CHROME
और COPPER जैसी महंगी धातुएं
Fe 550 ग्रेड – 30% तक सरिये की बचत
E-mail : sales@moirasariya.com | www.moirasariya.com

मातृभूमि पूजनीय माता है

परम पूजनीय सरसंघचालक
डॉ. मोहनराव जी भागवत

मनुष्य समाज सृष्टि इन तीनों को एक साथ चला के परमात्मा की ओर ले जाता है। अर्थ, काम उनको मोक्ष की तरफ चलाने के लिए धर्म का अनुशासन देता है। ये जो अध्यात्म है, उसको समझने से सृष्टि का ज्ञान होता है। सृष्टि कैसे चलती है, उसमें मुझे कैसे चलना चाहिए ताकि इस लोक में भी और उस लोक में भी मैं सुख प्राप्त कर सकूं और सार्थकता प्राप्त कर सकूं, इसका एकमात्र उपाय है और हम सब लोग जानते हैं कि हमारा राष्ट्र उसके लिए खड़ा है। योगी अरविंद जी ने कहा था कि जब जब सनातन धर्म का उत्थान हो, इसी भगवान की इच्छा होती है तब तब हिंदू राष्ट्र का उद्धार होता है । उत्तरपारा के भाषण में उन्होंने कहा था कि अब भगवान की इच्छा है कि फिर से दुनिया में सनातन धर्म का उत्थान हो, इसलिए भारत का उत्थान अवश्यंभावी है।

आदिशंकराचार्य ने पूरे भारत की परिक्रमा की, उस समय जितने संप्रदाय थे सबको अपने तर्क से पराजित किया, अद्वैत मत की स्थापना की, सबका खंडन किया, लेकिन इतना कर के रुके नहीं जिन जिन का खंडन किया था उनका फिर से महिमा मंडन भी किया। खंडन करना इसकी आवश्यकता की आपस में लड़ रहे थे भिन्न पंथों और मतों को लेकर। आप सारे भारत भर से ओंकारेश्वर आए,आपके रास्ते एक थोड़ी न हैं । कोई एक रास्ता हो ही नहीं सकता, जहां से निकलना है, वहां से आना पड़ता है। जहां पहुंचना है, वहां जाने के लिए किसी भी मार्ग का चयन करें अंतिम सत्य एक ही है। संप्रदाय आगे चल के छूट जाते हैं । संप्रदाय में पीछे से आने वालों को रास्ता ठीक पता रहे, कैसे चलना, इसका उदाहरण रहे, इसका पालन तो सब करते हैं । लेकिन संप्रदाय के ऊपर लोग हो जाते हैं । लेकिन जो लोग उपर हो जाते है उनका कर्तव्य है कि मतावलंबियों को ध्यान में रखे। गुरुदेव रानाडे एक साक्षात्कारी महापुरुष हो गए। वो कहते थे कि **रिलीजन ऑन दि टॉप ऑफ दी रिलिजन** जब यहा समझ में आएगा तो सारे झगड़े समाप्त हो जाएगें । तो ये **रिलीजन ऑन दि टॉप ऑफ दी रिलिजन** देने वाला भारत है। और भारत ऐसा क्यों बना क्योंकि उसको एक सत्य मिल गया, जो सत्य है, नित्य है, शाश्वत है बाकी सब बदल रहा है। वह सत्य मिल गया । तो ऐसा क्या हुआ कि वे दुनिया में सब लोग सुख खोज रहे, लेकिन हमारे पूर्वजों को मिला बाकी को नहीं मिला ऐसा क्यों हुआ? इसका जब विचार करते हैं तो ध्यान में आता है कि ये गुण हमारी मातृभूमि का है। विविधता तो इस धरती का गुण है । दुनिया के आह्वान के जितने प्रकार हैं सारे भारत में मिलते हैं । उसके चलते सब प्रकार के खानपान, रीति रिवाज, पहनावे यहां पर मिलते हैं और इसलिए विविधताओं की पहले से आदत है। विविधताओं को स्वीकार करके ही चलते हैं और इसलिए बाहर से भी कोई आक्रमण होगा ऐसी संभावना नहीं। हम सुरक्षित और इसलिए हमको समय भी मिला, हमको शांति भी मिली तो जहां दुनिया रुक गई, हम वहां से आगे बढ़ गए। हमें रुके नहीं। **भारत भूमि कर्मभूमि है। धर्मभूमि है। यहां धर्म पूर्वक कर्म करो और जीवन का श्रेयस प्राप्त करो। जीवन की अंतिम उपलब्धि को पाना है, परम लक्ष्य को पाना है, तो जन्म भारत में लेना अनिवार्य है। ऐसे ही इस धरती की महत्ता है। और यह हमारी मातृभूमि है** और ये अगर ऐसी नहीं भी होती तो भी क्या फर्क पड़ता? इस संदर्भ में हम कहते है कि अपने पवित्र हिंदू धर्म व हिंदू संस्कृति व हिंदू समाज का संरक्षण कर हिंदू राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति संभव है। राष्ट्र, धर्म, संस्कृति, समाज श्रेष्ठ है। लेकिन वो श्रेष्ठ है, केवल इसलिए नहीं, नहीं

होते तो ये अपने हैं । हमारा यह भाग्य है कि हमको यह माता मिली है ये बहुत श्रेष्ठ है लेकिन ऐसी नहीं होती तो भी ये हमारी माता है । ये मृण्मय नहीं है केवल, चिन्मय जगदंबा का मृण्मय रूप है, देवों की जननी है । विश्व देह है तो भारत आत्मा है। बार बार नूतन प्राणों का संचार दुनिया में करने वाली यही हमारी माता है। ये माता पूज्या है, देवों की जननी है। और इसलिए स्वामी विवेकानंद विदेशों से वापस आए तो पहला संदेश उन्होंने यही दिया । 50 साल तक आने वाले 50 साल, तक सब बाकी देवी देवताओं को भूल जाओ भारत माता की आराधना को उसके पुत्रों की सेवा करो। **सुखदुखम समे कृत्वा लाभा लाभं .... और इसलिए मानव सेवा ईश्वर सेवा नर सेवा नारायण सेवा ये संदेश इसी भूमि में मिलता है । सेवा से तात्पर्य केवल चैरेटी प्रोजक्ट्स ऐसा नहीं है, प्रोजक्ट्स बहुत लोगों के हैं परंतु निरपेक्ष सेवा की परंपरा केवल भारत मे है** क्यों सेवा करनी है क्योंकि सब अपना हैं सेवा नहीं की तो जिनकी सेवा नहीं करेंगे वो कल वे शत्रु बन जाएंगे। इस डर से नहीं करनी है। किसी लालच लोभ के कारण नहीं करनी सेवा करके उनको हमारे साथ लाना है इस स्वार्थ के कारण नहीं करनी नारायण है सर्वत्र, उसकी सेवा करनी है । निरपेक्ष सेवा कहां से सीखी। हमने हमारी मातृभूमि से ही सीखी । उसके चलते भारत के पुत्रों की प्रतिष्ठा आज भी सर्वत्र है। किसी भी देश में जाओ। भारत को एक विशेष नजर से देखते हैं। कई देशों में तो नम्रतापूर्वक प्रणाम करते हैं। ये प्रतिष्ठा हमको देने वाली ये हमारी भारत माता है और इसलिए है इसकी सेवा इसकी पूजा करने में सब पूजाएँ सब सेवाएं समाहित हो जाती और जो स्थिति आज हम देखते हैं देश की और दुनिया की उसमें तो ये आवश्यक हो जाता है करोड़ों हम इस भारत के पुत्र है, भारत की ये अवस्था क्यों है? अज्ञान और दारिद्र का अंधकार से अभी भी पूर्णता से उसको विदाई नहीं मिली। स्वतंत्र होकर इतने वर्ष हो गए। उसके लिए जीवन देने की आवश्यकता है। उसके लिए सतत निरंतर पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है। उस पुरुषार्थ की प्रेरणा हमको इसी भूमि से मिलेगी। इसके इतिहास से मिलेगी। इसके वर्तमान से मिले इसके महापुरुषों से मिलेगी और सुदूर गिरी कंदराओं में झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले इसके पुत्रों से बालकों से मिलेगी और मिलती है ।

गणू जी महाराज कहते हैं कि ये भूमि हमारी सब कुछ है। हमारे मोक्ष का भी यही कारण है। हमारे धर्म का भी यही साधन है उठाकर धर्म का झंडा करें। उत्थान भारत का, यही संदेश है। भारत भूमि में तपस्या साधना करते हैं। उनके लिए तो है । सर्व सामान्य सब भारतवासियों के लिए ये सेवा करना मातृभूमि की सेवा, भूमि, जल, जंगल, जमीन, जानवर सबकी सेवा करना है। इन सब के लिए देना इन सबके लिए देना याने हमारे लिए एक अक्षय उपादेय प्राप्त कर अपने जीवन का सार्थक करना । ब्रह्मचर्य का पालन करना है। उत्तम मनुष्य बनने की गृहस्थ धारण करना है। समाज को चलाने के लिए गृहस्थ धर्म पालन करना समाज आगे चलना चाहिए। इसलिए गृहस्थ चाहिए। अभी भी समाज चलना चाहिए। इसलिए भी गृहस्थ ही चाहिए। इतना दीजिए जामे कुटुंब समाय मैं भी भूखा न रहूँ साधु भी भूखा न जाए। तो कुटुंब को भूखा नहीं रखना है, लेकिन साधु भी भूखा न जाए। वो गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों का आधार इसलिए है। क्योंकि वो पालन करता है। उसके कारण धर्म रहता है। और फिर एक समय होने के बाद इस सबसे बाहर नई पीढ़ी को करने देना। मेरा पेट भरने के लिए मैं कुटुंब नहीं चलाता हमारे ऐसा नहीं होता है। बाहर होता है। जीवन भर परिश्रम करने के बाद विश्राम की आवश्यकता है इसलिए वानप्रस्थ नहीं है। और भोग करने की शक्ति नहीं रही इसलिए संन्यास का ऐसा नहीं है। बाकी दुनिया में जीवन को किसी भी संस्कार और आश्रम के आधार पर नहीं देखा गया है इसलिए भारतीय जीवन पद्धति दुनिया के अन्य देशों से भिन्न है। **भारत माता पूजन हम करते हैं देशभक्ति जगाने के लिए करते, लेकिन देशभक्ति क्या है, ये भारत माता है। इसका पर्यावरण है, इसका जल है, जंगल है, जानवर है। इनकी सेवा करना इसका जन है। वो साक्षात नारायण है। साक्षात शिव शंकर है इस भाव से उसकी सेवा करना हम उपकार नहीं कर रहे इसका अवसर हमें मिला है। तर जाने का जीवन के पाप धोने का।** जिस किसी उपेक्षा के कारण वो दरिद्र है, उपेक्षित है, उस उपेक्षा को दूर करके हम अपना स्वर्गलोक साध रहे हैं। इन्हीं आंखों से इसी देह में हम भारतवर्ष को परम वैभव संपन्न और विश्व गुरु पद पर आसीन होकर संपूर्ण दुनिया को शांति प्रदान करने वाले देश के रूप में देखते है। संपूर्ण दुनिया के मन में शांति प्रदान करने वाला, सारे कलहों को मिटाने वाला और सब को मोक्ष के रास्ते पर चलाने वाला ऐसा विश्व गुरु भारत भी अपनी आखों से देख सकेंगे। ऐसा हम सब देख पाएं ऐसा संकल्प और उसके लिए आवश्यक जो गति की वृत्ति है, उसका संकल्प लेते हुए हम आज भारत माता पूजन संपन्न करें। इतनी बात आपके सामने रखता हूं।

सृष्टि की रचना और परमात्मा

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

सृष्टि रचयिता परमपिता परमात्मा ने अपनी कोई भी रचना निष्प्रयोजन नहीं की है। जड़-जंगम और मनुष्य से लेकर एक चींटी तक का भी इस सृष्टि के संचालन में सबका अपना विशेष महत्व है। सब जीवों को परमात्मा ने उनकी प्रकृति के अनुसार आहार की व्यवस्था की है। मांसाहारी और शाकाहारी जीव अपनी-अपनी शारीरिक रचना के अनुसार ही अपना आहार-विहार करते हैं। इन सबमें केवल मनुष्य ही एक ऐसा जीव है जो प्रकृति प्रदत्त शारीरिक व्यवस्थाओं का उल्लंघन करते हुए अनेक प्रकार के कष्ट भोगता है। अनेक प्रकार के जीवों को मांसाहार के रूप में भक्षण करते हो वो आज उस गौमाता के मांस को खाने से भी नहीं चूक रहा है जिसके शरीर से उत्पन्न पंचगव्य एक माता के समान उसका पोषण करता है। **गौमाता धार्मिक आस्था होने के साथ ही ऊर्जा का अक्षय भण्डार है। उसका दुग्ध अमृततुल्य है। सूर्य के प्रकाश में रहने के कारण गाय की रीढ़ में सूर्यकेतु नाड़ी जाग्रत होती है जो स्वर्ण रंग का पदार्थ छोड़ती है। इसी कारण गाय का दूध और घी पीले रंग का होता है। यह तत्व गाय के दूध और माँ के दूध के अतिरिक्त और कहीं नहीं पाया जाता। गौमाता के गोबर और गोमूत्र के चमत्कारिक प्रभावों को आज का विज्ञान भी मान चुका है।**

ऐसी कल्याणकारी जीव गौमाता को पूजने वाले देश में गौवंश की यह दुर्दशा मन को व्यथीत करती है। हमारा जूठा खाकर भी हमें अमृततुल्य दूध देने वाली गौमाता की रक्षा के प्रति क्या हम इतने निर्दयी हो जायें कि उसके जीवन का कोई मोल ही न रहे? गोपालक कृष्ण की भूमि जिसपर कभी दूध की नदियां बहा करती थीं आज विदेशी डालरों के लालच में गौमाता के रक्त से उसकी हर सुबह रंजित हो जाती है। तथाकथित **'सेक्युलरिज्मों'** के इस देश में भले ही गाय के धार्मिक महत्व को मान्यता न दी जाये लेकिन कम से कम उसके वैज्ञानिक और आर्थिक महत्व को तो समझा जाना ही चाहिए जो कहीं न कहीं सीधे हमारी अर्थव्यवस्था से जुड़ा हुआ है। दिनों दिन महंगी होती जा रही स्थानीय माल ढुलाई को बैलों की श्रम शक्ति के द्वारा करके हम कितना डीजल बचा सकते हैं? गोमूत्र के द्वारा कीटनाशकों का व्यापक उत्पादन हमारे फसलों को कितनी पौष्टिकता प्रदान कर सकता है? गोबर खाद हमारी जमीनों की उर्वरक क्षमता को कितने दीर्घकाल तक बचाये रख सकता है? इन सब प्रश्नों पर गंभीरतापूर्वक विचार करने पर तथ्य सामने आते हैं कि यह सब संभव है अगर हमारे देश में प्रचुर मात्रा में गौवंश की उपलब्धता हो। हमारे लिए बहुत शर्मनाक बात है यदि हमें यह समाचार मिलता है कि हमारा प्रशासनिक तंत्र गोबर का आयात कर रहा है। शायद हम जानते नहीं कि परमात्मा की इस अनन्त सत्ता में सबसे अन्तर विहित सुख-दुःख के ताने-बाने एक दूसरे को जोड़ते हैं। गाय रोयेगी, गाय क्रन्दन करेगी, गाय चीत्कार करेगी तो हम भला सुख-शान्ति से कैसे रह सकते हैं।

इसीलिए धन का मार्ग भी है, पदवी है, प्रतिष्ठा भी है, दौलत भी है, यश भी है, फिर भी शान्ति नहीं है, तृप्ति नहीं है, हँस नहीं सकते हम खुल कर, प्राणों में नृत्य क्या पदों में भी नृत्य उतर नहीं पाता क्योंकि चराचर सृष्टि में हम किसी के दुःख का कारण बने हैं। हजारों सैकड़ों पशुओं को कत्लखाने में काटा जा रहा है। विदेशी डालर कमाने की इस प्रवृत्ति ने हमको इतना कसाई बना दिया है कि हम अपनी ही गौ माता के गले में छेद करके अपनी ही गौ माता का रक्त एकत्रित करते हैं। हीमोग्लोबिन बनाने वाली दवाइयों के प्रयोग में लाना है, उसकी चमड़ी उधेड़ते हैं रक्त माँस मज्जा ! चिथड़े-चिथड़े हो जाती है गाय और जहाँ-जहाँ कत्ल खाने ज़्यादा हैं भूकंप भी ज़्यादा हैं, प्राकृतिक आपदायें भी ज़्यादा हैं। अगर मानते हैं स्नायुविक तरंगों को तो ये तरंगें भी प्रभावित करती हैं प्रकृति में पृथ्वी को। हम वृक्षों में छिपे देवत्व का दर्शन करते हैं वनस्पतियों का पूजन करते हैं।

चींटियों को चोगा चुगाते हैं। विष उगलने वाले नाग को भी नागपंचमी के दिन दूध पिलाते हैं। फिर दूध देने वाली गायों के हम हत्यारे कैसे बन गए। हमको वात्सल्य का भाव गाय से मिला। घोड़ा तो हिनहिनाता है, बकरी तो मिमियाती है, सिंह तो दहाड़ता है, पक्षी चहचहाते हैं, लेकिन गाय का वत्स बछड़ा जब बोलता है तो लगता है जैसे माँ कह कर पुकार रहा हो। माँ शब्द हमें गाय के वत्स से और उनके बीच के वात्सल्य से मिला निष्काम प्रेम गाय का। भैंस के सिर पर, शरीर पर हाथ फेरोगे तो भैंस आपको चाटेगी नहीं। मरा गाय को प्रेम करके देखना, शरीर पर हाथ फेरोगे, गाय आपको ऐसे चाटना शुरू कर देगी जैसे अपने बछड़े को, पुत्रों को, अपने वत्स को चाट रही हो। तुमने कभी गाय की आंखों में डूब कर देखा, कितनी करुणा, कितनी सहजता, कितना ममत्व, कितना वात्सल्य के उनमें। हमें समय नहीं, हमें फुरसत नहीं है। पूर्वजों ने जो दिया है उसको हम कर्मकांड मान बैठे हैं, हमारा उसके भीतर की संवेदना से परिचय हो नहीं पाया।

मैं समझती हूँ कि गौवंश की रक्षा के लिए हमें सरकारों के भरोसे पर ही न रहकर गौशालाओं की व्यवस्थाओं को व्यवस्थित करना होगा। हम न केवल गौशालाओं का निर्माण करें बल्कि गांव-गांव तक इस बात का प्रचार-प्रसार भी करें कि बूढ़ी हो गई गाय केवल दूध देने में अक्षम होने के तर्क पर ही कसाई के हाथों का शिकार नहीं बनाई जा सकती। वह अपने जीवन के अंतिम समय तक आपको गोबर और मूत्र देकर अपने भरण-पोषण का खर्च स्वयं ही निकाल सकती है। मैंने कई स्थानों पर यह व्यवस्था देखी है कि गौशालाओं द्वारा गौमाता के भरण-पोषण के लिए हर घर से प्रतिदिन गौ-ग्रास के रूप में रोटी आदि लेने की व्यवस्था की जाती है। नियमित रूप से गौशाला की एक गाड़ी घर-घर जाती है और बड़ी मात्रा में यह गौ-ग्रास एकत्रित करती है। ऐसी गौशालाएं जहाँ धन की बहुत बड़ी व्यवस्था नहीं की जा सकती वहाँ यह तरीका कारगर सिद्ध हो सकता है।

ममता और वात्सल्य की साक्षात मूर्ति गौमाता का रक्त जिस भूमि पर गिरता हो वहां कोई व्रत-अनुष्ठान सफल सिद्ध नहीं हो सकते। यही कारण है कि आज भारत की पग-पग भूमि पर कोई न कोई धार्मिक अनुष्ठान चलता रहता है फिर भी चारों और अशांति है, अराजकता है। निर्दोष और निर्मल गौमाता के गले पर चलती छुरी और उसकी मूक हूक धरती का कलेजा भी थर्रा देती है। यदि हमारे छोटे-छोटे प्रयास हमारे देवी-देवताओं की आश्रयदायिनी गौमाता की रक्षा कर सकते हैं तो वो हमें जरूर करने चाहिए। अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब गौवंश की समाप्ति हो जाएगी और सारी सृष्टि में एक ऐसा भयानक प्राकृतिक असंतुलन उत्पन्न होगा जिसके लिए हमें आने वाली पीढ़िया कभी क्षमा नहीं करेंगी।

मातृत्व

उत्तम मोहन मीणा

मातृत्व एक ऐसी अवस्था है जिसमें पालन पोषण, प्रजनन का अधिकार प्राप्त होता है मातृत्व का अधिकार ईश्वर द्वारा एक महिला को प्रदान किया है क्योंकि वह जानते हैं कि उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति मनुष्य में भी उत्स पायदान पर स्त्री को पता है वह साहसी है कर्तव्यनिष्ठ है जितनी मजबूत है उतनी ही मार्मिक भी स्त्री की संरचना, गुण भाव ही उसे यह बल प्रदान करते है। स्त्री के लिए यह परम सौभाग्य, वरदान है क्योंकि पूर्वकाल में हमारा इतिहास साक्षी है बिना स्त्री (मातृत्व) के ईखर भी अपना ईश्वरीय कार्य संपादित नहीं कर सकते उन्हे पृथ्वी (मनुष्यत्व) के कल्याण के लिए जन्म लेकर अपनी लीला रखने के लिए स्ली (मातृत्व) का सहयोग परम आवश्यक है **जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी**

मातृत्व अर्थात जननी, मातृत्व अर्थात जन्मभूमि इनकी वंदना तो वेदपुराणों में भी उल्लेखित है इन्हे खर्वोच्च पद अर्थात स्वर्ग से केंवी महिमा बताई गयी है। कहते हैं माता के गर्भ में ही उसकी संतती शिक्षा ग्रहण करने लगती है, महाभारत संथ में अभिमन्यु ने अपनी शिक्षा का एक चरण माता के गर्भ में ही सिख लिया था।

माता के गर्भ में रहकर अपना भोज्य प्राप्त करता है संस्कार प्राप्त करता है और सबसे विशेष बात की संतती अपनी माता से ही साहस और वीरता प्राप्त करता है के इसलिए स्त्रीयों को साहसी होना देशभक्त होना उन्हे बानेवाली पीढीयों के लिये आदर्श बनाता है । वीरता एक साहासिक गुण हैं जो कठिन परिस्थिति में भी अड़िग रहकर परिस्थितियों का सामना करना सिखाता है इतिहास के पन्नो में उनका नाम स्वामि अहारों में लिखा जाता है वे आनेवाली पीढीयों के आदर्श होते हैं कहते है अपने लिये तो हर कोई जीता है जो समाज व राष्ट्र के लिये जीते है वही सच्चे कहलाते हैं। मनुष्य (देवतुल्य) मेरे शब्दो में मातृत्व से किसका संतति को वीरता व देशशस्त भी प्राप्त होती है।

माँ अहिल्या -: मातृत्व के प्रतिमान

अमन व्यास, इन्दौर

भारत के महान अतीत के निर्माण में मातृशक्ति का महान योगदान है, समाज जीवन के सभी क्षेत्रों में मातृशक्ति ने राष्ट्र के निर्माण में योगदान दिया है।

समरांगण में वीरो की खड्ग के साथ ही वीरांगनाओं के पराक्रम ने देश की स्वतंत्रता प्राप्ति और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपना जीवन खपाया और बलिदान की वेदी पर आहुत भी किया।

यह वर्ष लोकमाता-पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जन्मजयन्ती का वर्ष है। लोकमाता ने सुशासन- धार्मिक पर्यटन-आत्मनिर्भर समाज और महिला सशक्तिकरण के लिए अभूतपूर्व कार्य किए।

इंदौर की साम्राज्ञी का महेश्वर को राजधानी बनाने का कारण माँ नर्मदा और भगवान शिव के प्रति उनकी श्रद्धा को तो दर्शाता ही है, साथ ही प्राचीन माहिष्मती के वैभव को पुनर्स्थापित करना, माहेश्वरी साड़ी के माध्यम से उद्योग को बढ़ावा देना और साहित्य -संगीत-कला तथा धार्मिक पर्यटन को बढ़ाना भी है।

लोकमाता ने न्याय के वह प्रतिमान गढ़े, जो भारत के न्यायशास्त्र के लिए दृष्टांत का कार्य कर रहें है और राष्ट्र के **स्वत्व** के केंद्र और प्रतीक मंदिरों-घाटों-बावड़ियों का निर्माण और जीर्णोद्धार भी करवाया।

महारानी ने अपने राज्य का संचालन **तेरा तुझको अर्पण** के भाव से ही किया, भगवान महादेव की भक्त अहिल्याबाई अपनी राजाज्ञा में **श्री शंकर** लिखती थी। रुपयों पर शिवलिंग और बिल्वपत्र का चित्र और पैसों पर नंदी अंकित होते थे।

लोक माता-पुण्यश्लोक महारानी अहिल्याबाई होलकर का जीवन आज भी सभी भारतीय को प्रेरणा देता है और भारत के महिला सशक्तिकरण के उदाहरण को भी दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करता है।

यह वर्ष लोकमाता की जन्मजयंती का 300वाँ वर्ष है, लोकमाता के जीवन का आलोक सभी का मार्ग प्रकाशित कर रहा है।

जीवन प्रबंधन की पाठशाला लोकमाता देवी अहिल्याबाई

डॉ. माला सिंह ठाकुर

हम सभी के जीवन में उतार - चढाव आते रहते हैं। मुश्किल समय में भी पूरी दृढ़ता के साथ परिवार और समाज के साथ खड़े रहना, यह आसान नहीं लगता। लेकिन जब हम पूजनीया मां अहिल्या के जीवन पर दृष्टि डालते हैं, तो जीवन में सभी प्रकार की परिस्थितियों से लड़ने की प्रेरणा मिलती है। तो आइए चलते हैं, जीवन प्रबंधन की पाठशाला की ओर -

महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौंडी गांव में 31 मई 1725 को मानको जी शिंदे के यहाँ अहिल्या ने जन्म लिया। माता-पिता की लाड़ली बेटी को उस समय, जब लड़कियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी, ऐसे समय में पिता ने लिखना - पढ़ना सिखाया। मां ने बचपन से ही ईश्वर में आस्था और विश्वास के संस्कार का जागरण किया। पिता गांव के पाटिल थे और साधारण परिवार से थे। लेकिन नियति ने तय किया था कि अहिल्या को लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर बनना है।

एक दिन पुणे जाते समय चौंड़ी में विश्राम करते हुए सूबेदार मल्हारराव होलकर की दृष्टि मंदिर में पूजा करने के बाद भूखों को भोजन कराती आठ वर्षीय अहिल्या के सहज, सरल, संवेदनशील चरित्र पर पड़ी, और उन्होंने अपने पुत्र से अहिल्या का विवाह करना तय किया। वर्ष 1733 में विवाह हुआ और ततपश्चात् वे अहिल्या खांडेराव होलकर बन कर अपनी ईश्वर के प्रति आस्था को साथ लिए, होलकर राजघराने आ गई और समय के साथ - साथ विभिन्न परिस्थितियों का सामना कर राजपाट के गुर भी सीखती गई।

इसी बीच उन्होंने एक पुत्र मालेराव और तीन वर्ष बाद एक पुत्री मुक्ताबाई को जन्म दिया। समय बीतता गया। बच्चों में भी दया, करुणा, संवेदनशीलता, प्रेम के संस्कार का बीजारोपण करना उन्होंने जारी रखा। सब अच्छा चल रहा था, किंतु नियति बहुत निष्ठुर है। वर्ष 1754 में कुम्भार युद्ध के दौरान उनके पति खांडेराव होलकर वीरगति को प्राप्त हो गए। उस समय सती प्रथा जोरों पर थी। अहिल्या बाई के ससुर ने उन्हें सती होने नहीं दिया और अपने साथ राजपाट चलाना सिखाया। प्रशासनिक फैसले, जिम्मेदारियों का निर्वहन, कूटनीति, राजनीति के बारीक से बारीक दांव-पेंच जो आवश्यक थे, वो अहिल्या अपने पिता समान ससुर से सीखती गई।

वर्ष 1766 में ससुर की मृत्यु के पश्चात् शासन अहिल्याबाई के नेतृत्व में उनके पुत्र मालेराव ने संभाला। किंतु विधाता को कुछ और ही मंजूर था। अहिल्या बाई पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा, ससुर के जाने के दुःख से अभी वो उबर भी न पाई थीं कि मात्र एक वर्ष में ही 1767 में उन्होंने अपने युवा पुत्र को खो दिया। इतना विकट समय जब अपना कोई साथ नहीं, तब मानसिक संबल, साहस

और शौर्य के साथ अहिल्याबाई ने शासन किया। ऐसा शासन जिसकी तूती इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित है।

भगवान शिवजी के प्रति आस्था, प्रजा के प्रति ममत्व और राजगद्दी के प्रति कर्तव्यनिष्ठा के भाव ने उन्हें न्यायप्रिय बनाया। समय आने पर अस्त्र-शस्त्र से सज्जित होकर अपनी प्रजा की रक्षा भी की, हाथी पर बैठकर दुश्मनों पर तीर-कमान से हमला करने की छवि उन्हें साहसी और कर्मयोगिनी बनाती है। उन्होंने सदैव अपने राज्य को मुस्लिम आक्रमणकारियों से बचाने का प्रयास करने के साथ ही, अंग्रेजों के विरुद्ध पेशवा को आगाह किया, जो उनकी दूरदृष्टिता और कुशल रणनीतिकार होने के साथ-साथ बहुत बेहतर राजनीतिज्ञ होने का परिचायक है।

न्यायप्रिय अहिल्याबाई प्रतिदिन अपनी प्रजा की समस्याएं व्यक्तिगत तौर पर सुनती और हाथों-हाथ समाधान भी करती थीं। प्रजा को सदैव पुत्रवत स्नेह देने वाली, हर परिस्थिति में सदैव अपनी प्रजा के साथ खड़ी रहने वाली, सदैव प्रजा का हौसला बढ़ाने वाली.. अपने अत्यंत प्रिय स्वजनों के न रहने के बाद भी उन्होंने कभी व्यक्तिगत दुःख और विषाद को अपने कर्तव्य के मध्य नहीं आने दिया, जिसने उन्हें मां अहिल्या बनाया। उनकी मान्यता थी कि प्रजा का संतति की तरह संभाल ही राजधर्म है। उनके शासन में हर आम-खास के लिए समान प्रकार के नीति-नियम थे। प्रजा अपनी राजमाता से बहुत संतुष्ट थी। इसी कारण कई लोगों के निजामशाही और पेशवाशाही छोड़कर उनके साथ आने के आग्रह के उल्लेख मिलते हैं। अपने छोटे से साम्राज्य में सुशासन के लिए उनके द्वारा किए गए प्रयास, एक शासक से अधिक उन्हें महान व्यक्तित्व बनाते हैं।

उनके शासन में राजाज्ञाओं पर हस्ताक्षर के स्थान पर वह श्री शंकर लिखती थीं। रुपयों पर शिवलिंग और बिल्व-पत्र का चित्र और पैसों पर नंदी अंकित होते थे। उनका विश्वास था कि इस प्रकार ईश्वर को साक्षी मानकर कार्य करने से कभी किसी का अहित नहीं होगा।

अपने छोटे से कार्यकाल में उन्होंने केवल मालवा ही नहीं अपितु देश में कई धर्मस्थलों पर विश्रामालय, घाट, कुंए, बावड़ी, प्याऊ, मंदिर, पुलिया, अन्नक्षेत्र, सड़कें, किले आदि बनवाए। इतिहास कहता है कि भगवान शिवजी के प्रति आस्था ने उन्हें सदैव धर्मसम्मत, धर्मरक्षक और धर्म हितार्थ कार्य हेतु प्रेरित किया। साथ ही मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा तोड़े गए मंदिरों के विषाद के कारण ही उन्होंने सोमनाथ में शिवजी का मंदिर बनवाया। साथ ही काशी, अयोध्या, हरिद्वार, द्वारका, बद्रीनाथ आदि को संवारने में उनकी बड़ी भूमिका रही। हम प्रत्यक्ष भी विभिन्न प्रदेशों में धर्म स्थलों व उनके आस-पास उनके द्वारा लोकहितार्थ कराए गए निर्माणों को देख सकते हैं। जिसने उन्हें लोकमाता बनाया।

उन्होंने अपनी दूरदृष्टि से प्रयासपूर्वक कला, साहित्य, संगीत और उद्योग के द्वार खोले। उन्होंने महेश्वर को अपनी राजधानी बनाया। पवित्र नदी नर्मदा के आसपास कपड़ा उद्योग स्थापित करवाया। बहुत बुद्धिमानी से उन्होंने सरकारी धन लोकहित में लगाने के साथ-साथ अपने राज्य को समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाने हेतु सतत प्रयास किए। आज भी कला-कौशल, हस्तशिल्प, माहेश्वरी साड़ियों और कपड़ों का बाजार फलने-फूलने के साथ ही मालवा की संस्कृति को भी संजोए हुए है।

13 अगस्त 1795 को सत्तर वर्ष की उम्र में देवी अहिल्याबाई होलकर ईश्वरीय कार्य करते-करते स्वर्ग सिधार गई। तत्पश्चात शासन उनके अत्यंत विश्वासपात्र तुकोजीराव होलकर ने संभाला। मां अहिल्या का चरित्र समाज के लिए कल भी प्रासंगिक था, आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

मां अहिल्या के आशीर्वाद और प्रेरणा से आज अहिल्यानगरी इंदौर विश्वविख्यात है। सेवा, परोपकार, संवेदनशीलता के संस्कार को आज भी उसी रूप में मालव माटी में महसूस किया जा सकता है। मध्यप्रदेश की औद्योगिक और सांस्कृतिक राजधानी के रूप में अहिल्याबाई का साम्राज्य आज भी अनवरत प्रगति पथ पर अग्रसर है।

यह लेख मातोश्री के पुण्य स्मरण हेतु तो है ही, साथ ही हम सभी के लिए प्रेरणास्पद भी है। मां अहिल्या के जीवन के प्रत्येक प्रसंग से प्रेरणा लेकर वर्तमान चुनौतियों का जीवटता के साथ सामना किया जा सकता है। समाज के प्रति संवेदनशीलता, अपनों के प्रति अपनत्व, अक्षम के लिए मदद के हाथ, परिवार के लिए संबल, कर्तव्यों के प्रति निष्ठा, उम्मीदों के साथ दृढ़ संकल्प.. वर्तमान में जैसे मां अहिल्या ने बुद्धिमानी से अर्थ, परमार्थ को संयोजित किया, परिवार बिखरने पर स्वयं की आंतरिक शक्तियों को संग्रहित कर कर्तव्यों का पालन किया, जो पास था, जो साथ था.. उसका संबल और विश्वास बनकर जिम्मेदारियां पूर्ण कीं.. ठीक वैसे ही विपरीत समय में परिवार में आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन हम भी सक्षमता, सबलता और पूरे सामर्थ्य के साथ कर सकते हैं।

अपनी आंतरिक शक्तियों का संग्रहण कर विपरीत परिस्थितियों का सामना करना थोड़ा मुश्किल जरूर हो सकता है, किंतु नामुमकिन नहीं है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सभी मां अहिल्या के दिखाए मार्ग से प्रेरणा लेकर, इंदौर गौरव दिवस के अवसर पर शहर के प्रति अपनी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों को प्राथमिकता में रख वास्तव में गौरव की अनुभूति कराने वाले रचनात्मक कार्यों में संलग्न रहेंगे।

लोकमाता अहिल्याबाई होलकर : आदर्श शासक, महान नारी

अमित राव पवार, देवास

विश्व हो या भारत इतिहास के पन्नों पर राजा से ही रानी की पहचान को देखा गया है, लेकिन कुछेक रानियों ने अपनी एक अलग पहचान बनाकर अपने दो (पिता व पति के घर) वंश-परिवार को विश्वविख्यात किया है। उन्हीं में से एक प्रमुख नाम लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर का है। जिन्होंने समाज की बेड़ियों को तोड़ स्वयं की एक अलग पहचान बनाई। **मालवा के इंदौर में होलकर परिवार की पुत्रवधू अहिल्याबाई प्रसिद्ध मराठा शासकों में से एक शासक के रूप में रहीं। वे बहादुर, दूरदर्शी, जनहितैषी, बुद्धिमान, आध्यात्मिक, विदुषी थीं। अपने ससुर श्रीमंत महाराज मल्हारराव होलकर तथा पति खांडेराव की मृत्यु के पश्चात 11 दिसंबर 1767 से इंदौर का शासन संभाला।** ब्रिटिश इतिहासकार जॉन किए ने इन्हें **द फिलॉस्फर क्वीन** के नाम से सम्बोधित किया। वे मालवा की शासक उग्र रानी और कुशल प्रशासक होने के साथ एक समझदार राजनीतिज्ञ भी थीं। जब मराठा पेशवा अंग्रेजों और उनकी योजनाओं को समझ न सके तब इन्होंने पेशवा को आगाह किया था। संसार में जो भी प्रसिद्ध स्थान हैं उनकी ख्याति अथवा प्रसिद्धि के कुछ न कुछ महत्वपूर्ण कारण होते हैं। जहां प्राचीन इतिहास हमें गर्व का अनुभव कराता है, वहीं प्राचीन स्थान हमें सैकड़ों वर्षों के बाद भी वहां की संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, पहचान आदि का परिचय करवाते रहे हैं। जैसे श्रीराम की अयोध्या, कृष्ण की मथुरा। दुःख है कि इन नगरों में बोलने की शक्ति नहीं है, यदि होती तो यह अपने दुख, कष्ट और परिवर्तनों का इतिहास हमें बताते। इन्हीं में से एक है पुण्यश्लोका अहिल्याबाई होलकर का इंदौर शहर, जो मध्यप्रदेश राज्य के कार्य का मानो केंद्र बिंदु है।

अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 ईस्वी में अहमदनगर जिले के तालुका जामखेड़ के चौड़ी नामक गांव में रहने वाले मांकोजी शिंदे के यहां जगप्रसिद्ध कन्या रत्न के रूप में हुआ। यह समय वह था जब पढ़ाई-लिखाई का सामान्य परिवारों में चलन न के बराबर था। पर आपके पिता ने आपको थोड़ा अध्ययन करवाया। आप बचपन से ही ईश्वर भक्त थीं, पूजन-पाठ तथा पुराण का वाचन न हो जाए तब तक भोजन ग्रहण नहीं करती थीं। आपकी मृत्यु 13 अगस्त 1795 को हुई। आपका कुल शासन 30 वर्षों का रहा। जो आपने अपने सामर्थ्य के बल पर किया। (1 दिसंबर 1767 से 13 अगस्त 1795 तक) अपनी सूझबूझ तथा हिम्मत के बल पर आपने अपने राज्य को ताकतवर बनाया और दुनिया

को उस समय दिखाया कि महिलाएं भी पुरुष से कम नहीं और बराबर कदमताल कर सकती हैं। जबकि वह दौर पति की मृत्यु के बाद सती होने का था। आपने अपने संपूर्ण जीवनकाल में अपने परिवार, रिश्तेदार, संबंधियों की करीब 69 मौतें देखीं फिर भी आप अपने लक्ष्य राष्ट्र की सेवा से भटकी नहीं। साथ ही अहिल्याबाई ने अपनी 16 करोड़ की विरासत पर पास के राज्य और किसी विरोधियों का कब्जा नहीं होने दिया। यह बात आपके व्यक्तित्व पर और अधिक प्रकाश डालती है। आपकी दृष्टि अत्यंत व्यापक थी। पर्यावरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया, इसके साथ ही समाज के विभिन्न वर्गों के उत्थान के लिए नई परंपराओं का सूत्रपात किया। लोगों के पास जाकर उनके दुःख-दर्द, परेशानियों को स्वयं अनुभव कर सुना तथा जरूरत के आधार पर पर्याप्त सहायता के आदेश दिए। आपने न सिर्फ अपने राज्य में बल्कि संपूर्ण भारतवर्ष में सैकड़ों मंदिर, धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। साथ ही साथ सड़कें, तालाब, घाट, कुँए, बावड़ियां, पानी की टँकी आदि को सुविधाओं के साथ बनवाया।

21 वर्ष के अपने पुत्र मालोजी की मृत्यु के बाद आपने इंदौर से महेश्वर को अपनी राजधानी बनाया और वहीं से राज्य का कार्य करते हुए दूरस्थ अमरकंटक, केदारनाथ, बद्रीनाथ, रामेश्वरम, अयोध्या, पुष्कर, मथुरा, काशी, हरिद्वार आदि स्थानों पर धर्मशालाएं बनवाईं। धार्मिक नगरी उज्जैन में भी मंदिर और घाट का निर्माण आपके नाम से है। देवालय और सांस्कृतिक धरोहरों के नवनिर्माण का साहसिक कार्य किया, आपका योगदान ऐतिहासिक है। आपकी सोच एक राज्य तक ही सीमित नहीं थी। आपका विचार संपूर्ण मानव कल्याण का था। कर्तव्यपालक, धार्मिक एवं समाजसेवी होने से आपका नाम लोकमाता अहिल्याबाई हुआ। आपने भारत के गौरव को बढ़ाया। संपूर्ण जीवन दुख, संघर्ष, संकट समय के बीच ईश्वर की इच्छा के अनुरूप अपना कार्य किया। आपका जीवन प्रेरणादायी है। आपने सामाजिक क्रांति की, आप न्याय, सुशासन तथा वीरता की मिसाल हैं। आपने अपनी आत्मशक्ति के बल पर लोक कल्याण के कार्य किए। आपकी न्याय क्षमता राज्य व्यवस्था आधारित थी। युगों- युगों तक आदर्श शासक और महान नारी के रूप में लोकमाता देवी श्री अहिल्याबाई होलकर को लोग स्मरण करते रहेंगे।

आपने सामान्य परिवार में जन्म लेकर बाल्यकाल से ही जन के दर्द को समझने का प्रयास किया। सेवा भावना के आपके जीवन में अनेक उदाहरण हैं। अहिल्या बाई होल्कर ने महिलाओं की सेना बनाई थी, साथ ही जगह-जगह पर मंदिर, जलस्रोत, अन्नक्षेत्र आदि आरंभ करवाए। आपने अपनी शक्ति तथा बुद्धिमत्ता से एक मिसाल पेश की। आपका जीवन तीन सौ वर्ष पूर्व स्त्री सशक्तिकरण का जीवंत उदाहरण है। मध्यप्रदेश शासन आपके नाम से समाज में अग्रिम भूमिका निभाने वाली महिला को सम्मान पत्र व नगद राशि का पुरुस्कार देता है। आज भी आपको जनमानस आदर के साथ राजमाता देवी अहिल्याबाई होलकर से संबोधित करते हैं।

||माता अहिल्या||

-प्रो. योगेन्द्रनाथ शुक्ल

प्रातः स्मरणीया अहिल्या माता की जयंती पर नगर का गौरव उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया जा रहा था। कहीं वाहन रैली निकल रही थी तो कहीं अहिल्या माता के जीवन पर व्याख्यान हो रहे थे। कहीं उन पर नाटक खेले जा रहे थे। नगर के प्रमुख बाजारों, सरकारी भवनों में विद्युत सज्जा की गई थी। बड़ा ही आनंद का माहौल था।

.... उसी रात सड़क से निकलने वाले कुछ लोगों ने, प्राचीन छतरियों के पास एक दिव्य महिला को, स्वगत कथन करते हुए घूमते देखा। उसके स्वर में बहुत निराशा थी- ...अपना चित्त तो शुद्ध करते नहीं...! चारों और अनाचार, दुराचार फैल रहा...! बलात्कार, चोरी, हत्या, आत्महत्या की घटनाएं हो रहीं...! भ्रष्टाचार के दलदल में नेता, अधिकारी के साथ- साथ जनता भी डूबती जा रही... तुम सब लोग कैसे ढोंगी हो... मेरी मूर्ति को ही पूजते हो ... मेरे सिद्धांतों को नहीं! यह कैसा उत्सव?

महान रानी - माता अहिल्याबाई

दुर्गेश कुमार साध

बचपन में जब हम बड़े-बुजुर्गों से कोई कहानी सुनाने की जिद करते थे और अगर वे व्यस्त होते थे अथवा उनका मन नहीं होता था, तो अक्सर वे हमें टरकाने के उद्देश्य से ये कहते थे कि **एक था राजा, एक थी रानी, दोनों मर गये, खतम कहानी।** तब हम समझ जाते थे कि माज़रा कुछ और ही है एवं हमें अभी कोई भी कहानी सुनने को नहीं मिल पायेगी। इसी का दूसरा पक्ष यह है कि अगर कोई कहानी सुनने को मिलती भी थी, तो अक्सर वह यहीं से शुरू होती थी कि **एक राजा था**, मतलब कहानियाँ अधिकांशतः राजाओं को लेकर ही होती थीं, जबकि तथ्य यह है कि भारतवर्ष में अनेक रानियाँ हुई हैं, जिनका जीवन न केवल एक मिसाल था, बल्कि वे महान विभूति भी थीं। इतिहास लेखन के प्रति हमारी उपेक्षा का ही परिणाम है कि हम महान भारतीय रानियों के विषय में अपेक्षाकृत कम ही जानकारी रखते हैं।

ऐसी ही एक महान रानी भारत के मध्यप्रदेश के मालवा प्रांत के इन्दौर **(मराठी नाम - इन्दूर)** में हुई हैं, जो कि एक होलकर वंश की महारानी थी। दुर्भाग्य यह भी है कि इतनी महान विभूति होने के बावजूद माता अहिल्या के बारे में लोगों को अधिक जानकारी नहीं है। मध्य प्रदेश के बाहर के राज्यों में तो कइयों ने उनका नाम भी नहीं सुना, जबकि माता अहिल्या का जीवन एक मिसाल है एवं इन महान विभूति के बारे में अधिक से अधिक शोधकार्य की आवश्यकता है।

माता अहिल्या, होलकरवंशीय इन्दूर राज्य के मल्हार राव होलकर की पुत्रवधू थीं। आपने अपने तप और धर्म बल से लगभग 30 वर्षों तक राज्य की सत्ता संभाली। आपकी धर्म-शैली की विलक्षणता ने आपको विद्वज्जनों से सर्वथा कीर्ति एवं प्रशंसा ही दिलवाई। मल्हार राव होलकर 1722 में बाजीराव पेशवा की सेना में सम्मिलित हुए थे एवं अपने अद्भुत पराक्रम एवं वीरता के कारण शीघ्र ही वे नायक के पद पर पहुँच गये थे। 1724 में पेशवा ने इन्हें खिलत प्रदान कर मालवा एवं खानदेश का सूबेदार अधिकारी नियुक्त कर दिया था। मल्हार राव अपने पुत्र खण्डेराव के हठी एवं चिड़चिड़े होने के कारण बहुधा चिंतित रहा करते थे, मगर

उन्होंने इसके उपाय के रूप में उनका विवाह अत्यंत ही धर्म-परायण एवं मृदुभाषी अहिल्याबाई से करना निश्चित किया, जिनका जन्म 1723 में महाराष्ट्र के औरंगाबाद की बीड़ तहसील के चोंटा नामक गॉव में हुआ था।

अहिल्याबाई बचपन से ही अत्यंत धर्मप्रेमी थीं एवं बिना पूजा-पाठ किये वे अन्न का एक दाना भी नहीं लेतीं थीं। अहिल्याबाई गृहकार्य, संभाल, प्रबंधन इत्यादि में इतनी कुशल थीं कि उन्होंने अपने ससुराल पक्ष का भी मन जीत लिया था। खण्डेराव पर भी उनका इतना सकारात्मक प्रभाव पड़ा कि वे धीरे-धीरे न केवल अपने पिता के राजकार्य में हाथ बँटाने लगे थे, बल्कि युद्धकला में भी प्रवीणता प्राप्त करने लगे। जब कभी खण्डेराव जी, मल्हार राव जी के साथ युद्धादि पर जाते, तो वे राजकार्य संबंधी सारे उत्तरदायित्व अपनी पुत्रवधू अहिल्या के सुपुर्द करके जाते थे। उन्हें अपनी पुत्रवधू अहिल्या की योग्यता पर संपूर्ण विश्वास था कि वे प्रजा की देख-रेख करना अच्छी तरह से जानती थीं। इस विषय में सर जॉन माल्कम ने लिखा है कि *पुराने कागजों से यह बात स्पष्ट होती है कि जब कभी मल्हार राव अपने राज्य से दूर जाते थे तो संपूर्ण राज्य का भार अपनी पुत्रवधू अहिल्याबाई पर ही छोड़ कर जाया करते थे। यथार्थ में अहिल्याबाई ने अपनी राज्यप्रणाली के कार्य को भलीभाँति चलाने की योग्यता ऐसे ही अवसरों पर प्राप्त कर ली थी।*

1754 की खानदेश की एक लड़ाई में खण्डेराव की असमय मृत्यु हो गई। जब यह समाचार अहिल्या बाई के पास पहुँचा तो उन्होंने सती होने की ठानी, मगर मल्हार राव ने उन्हें समझाया कि जिस प्रकार मेरा बेटा मुझे छोड़कर चला गया है, क्या वैसे ही तू भी मुझे और इस राज-पाट को छोड़कर चली जाएगी? ऐसी हृदय विदारक बात सुनकर उन्होंने सती होने का विचार त्यागकर राजधर्म का मार्ग अपनाया। मगर जिस समय उन्होंने सत्ता की बागडोर संभाली, उस समय राज्य में एक ओर से मराठे डाकुओं का आतंक था, तो दूसरी ओर जाट, रूहेले, पिंजारे आदि अनेक प्रकार के लुटेरों का भय व्याप्त था। ऐसे कठिन समय में धर्म का आश्रय लेकर सुखपूर्वक राज्य की संभाल करना क्या एक नारी के लिए गर्व का विषय नहीं होना चाहिए? माता अहिल्या के धर्म-पुण्य एवं राज्य-व्यवस्था का ही प्रताप था कि उनके राजकार्य हाथ में लेते ही डाकू-लुटेरे इधर ऑख उठाकर भी नहीं देखते थे। उन दिनों भील प्रजाति चोरी एवं लूटमारी के लिए कुख्यात थी। राज्यों में आने-जाने वाले पथिकों में सदैव ही इस प्रकार की लूट एवं जान का जोखिम बना रहता था। इतना ही नहीं, भील जातियों ने अपने क्षेत्र से गुज़रने वाले पथिकों के लिए एक प्रकार का कर नियत कर दिया था, जिसे वे **'भीलकौड़ी'** कहते थे। प्रजाजन द्वारा जब यह बात माता तक पहुँची, तो उन्होंने भीलों के सरदार को बुलवाकर स्नेह से समझाया। जब वह नहीं माना, तो माता अहिल्या को कठोरता का सहारा लेना पड़ा। सरदार को झुकना पड़ा और जब उन्होंने महारानी की अधीनता स्वीकार कर ली, तब माता अहिल्या ने उन भीलों को आर्थिक सहायता कर उन्हें वाणिज्य एवं कृषि कार्यों में लगाया। इस प्रकार पथिकों की रक्षा का भी प्रबंध हो गया और भील समुदाय सकारात्मक कार्यों में प्रवृत्त भी हो सका। इस एक घटना से अहिल्या माता की सहिष्णुता, सूझ-बूझ, कूटनीति एवं वात्सल्य आदि गुणों के साक्षात् दर्शन होते हैं। इसका फल यह हुआ कि माता अहिल्या की कीर्ति चारों ओर फैलने लगी एवं लोगों में उनके प्रति स्वामीभक्ति, श्रद्धा एवं विश्वास उत्पन्न हुआ।

माता अहिल्या के हाथ में जब सत्ता की बागडोर आई, तो उन्होंने न केवल अपने राज्य की प्रजा का ध्यान रखा, बल्कि आस-पास की रियासतों जैसे - पूना, हैदराबाद, श्रीरंगपट्टन, नागपुर, कलकत्ता आदि स्थानों पर मेल-मिलाप एवं सुदृढ़ संबंध स्थापित करने के लिए अपने राजदूत भेजे। इसके अलावा माता सभी स्थानों पर पत्र-व्यवहार भी करती थी, जिसका काम-काज प्रांत के ब्राह्मण वर्ग के हाथ में था। इन सबका परिणाम यह होता था कि किन्हीं अप्रिय वाद-विवाद की स्थिति में उनका निपटारा बड़ी ही सहजता से हो जाता था। माता अहिल्या की स्पष्ट मान्यता थी कि *"यतो धर्मस्ततो जयः"* अर्थात् जहॉं पर धर्म है, वहीं विजय है। माता ने इसी को अपने जीवन का सूत्रवाक्य बना रखा था, अतः उन्होंने बजाय अपने सैनिक विस्तार के धार्मिक एवं प्रजा हितार्थ कार्यों में अधिक धन व्यय किया। उन्होंने भारत के अनेक मंदिरों जैसे - सोमनाथ, बद्रीनाथ, केदारनाथ, देवप्रयाग, गंगोत्री, त्र्यंबकेश्वर, गया, पुष्कर, मथुरा, हरिद्वार, काशी (वाराणसी) आदि का जीर्णोद्धार करवाया। विन्ध्याचल जैसे दुर्गम स्थानों पर सड़कें, बावड़ियाँ, कुऐं एवं धर्मशालाओं का निर्माण भी करवाया। हिमालय के देवालय ही नहीं बनवाए, बल्कि उनके वार्षिक-व्यय का भी उचित प्रबंध कर दिया था। इतना ही नहीं दक्षिण भाग के मंदिरों में गंगाजल की आपूर्ति करने के लिए उन्होंने कॉवर भेजने का भी प्रबंध किया था। इससे सिद्ध होता है कि धार्मिक कार्यों के लिए उन्होंने केवल अपने राज्य की ही सीमाऐं नहीं देखीं, बल्कि भारत-भर में जहॉं कहीं संसाधनों की कमी थी, उन स्थानों का चयन कर नियमित रूप से समाज-हितार्थ कार्य करवाये। ऐसी धार्मिक, सद्गुणी, साहसी, विवेकशील, धीर, स्वाभिमानी, सादगी-संपन्न इन्दौर/महेश्वर की महारानी का नाम सदैव इतिहास में चमकता रहेगा।

राष्ट्र की सच्ची सेविका माँ अहिल्या

निखिलेश माहेश्वरी

आधुनिक भारत में जिनके व्यक्तित्व और कृतित्व ने भारत के जनमानस में अमिट छाप छोड़ी है उनमें देवी अहिल्याबाई होल्कर का नाम बहुत ही सम्मान के साथ लिया जाता है। एक सामान्य महिला से एक महान रानी बनने की उनकी जीवन यात्रा अत्यंत प्रेरक और प्रेरणादायी है। अहिल्याबाई ने अपनी अद्भुत प्रशासनिक क्षमता, राजनीतिक कौशल, आधुनिक सोच, कुरीतियों को दूर करने का साहस, युद्ध कौशल, धार्मिक-सांस्कृतिक गौरव, न्यायप्रियता, दूरदृष्टि और प्रजा के प्रति मातृत्व भाव के द्वारा इतिहास के पन्नों में अपना नाम अमर बना लिया है। उनके ऐसे आदर्श व्यक्तित्व और कृतित्व को हर व्यक्ति ने जानना, समझना और उससे प्रेरणा लेना चाहिए।

अहमदनगर महाराष्ट्र के जामखेड़ के पास चौंडी ग्राम में रहने वाले एक सामान्य कृषक मणकोजी शिन्दे एवं सुशीलाबाई के घर दो पुत्रों के पश्चात् भगवान के आशीर्वाद स्वरूप 31 मई 1725 को अहिल्या का जन्म हुआ था। अहिल्या बचपन से चंचल, जिज्ञासु और नई-नई बातों को सीखने को उत्सुक रहती थी। माता-पिता के संस्कारों के कारण उनका बचपन से ही शिव भक्ति और धार्मिक कार्यों में मन लगने लगा था। भाइयों के साथ वह भी पढ़ना-लिखना चाहती थी लेकिन उस समय समाज में महिला शिक्षा प्रतिबंधित थी इसलिए उनका पाठशाला जाना संभव न हो सका। लेकिन अहिल्या की पढ़ने की लगन को देखकर मणकोजी शिन्दे ने अपनी बेटी को घर पर ही पढ़ना-लिखना सिखाया।

किसी ज्योतिष ने अहिल्या के जन्म के समय कहा था कि यह बालिका रानी बनेगी लेकिन एक सामान्य किसान की बेटी के लिए यह कैसे संभव था। एक बार मालवा नरेश

मल्हारराव होल्कर चौंडी ग्राम के पास ही अपना डेरा डाले थे तभी उन्हे मंदिर से मधुर भजन सुनाई दिया। जब वह मंदिर पहुंचे तो देखा एक बालिका भजन गा रही है। भजन समाप्त होने पर उस बालिका से उन्होंने बात की तो वे उस बालिका से बहुत प्रभावित हुए और तभी उनके मन ने यह तय कर लिया कि यह उनके पुत्र खण्डेराव की पत्नी और होल्कर घराने की बहू बनने के सर्वथा योग्य है। मल्हाररावजी ने मणकोजी से मिलकर अपने पुत्र खण्डेराव के विवाह का प्रस्ताव उनके सामने रखा, जिसे ज्योतिष की भविष्यवाणी मानते हुए मणकोजी ने आनंदपूर्वक स्वीकार कर लिया। सन 1733 में आठ वर्ष की आयु में अहिल्या का विवाह संपन्न हुआ। विवाह के पश्चात् इंदौर आकर अहिल्याबाई ने अपने ससुर मल्हारराव के संरक्षण में हाथी की सवारी, घोड़े की सवारी, शस्त्रों का संचालन, सेना संचालन एवं युद्ध कला का प्रशिक्षण प्राप्त किया और अपनी सास गौतमाबाई के मार्गदर्शन में प्रशासनिक, वित्त और राजनीति के गुर सीखे। धीरे-धीरे उनके मन के अंदर राष्ट्रीय सोच का विस्तार होता चला गया। **अहिल्याबाई की बुद्धि कुशलता को देखकर मल्हाररावजी राजमहल व प्रशासनिक कार्यों में अहिल्याबाई से परामर्श लेने लगे थे। अपनी विनयशीलता, सेवा भावना, शांत स्वभाव से उन्होंने पति खण्डेराव का मन भी जीत लिया। अहिल्याबाई और खण्डेराव के यहाँ सन् 1745 में पुत्र मालेराव और सन् 1748 में पुत्री मुक्ताबाई का जन्म हुआ।**

अहिल्याबाई का जीवन आसान नहीं रहा। उनको कई प्रकार के संघर्ष से गुजरना पड़ा। सन 1754 में कुम्हेर के युद्ध में जाटों के विरुद्ध लड़ाई लड़ते हुए उनके पति खण्डेराव वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी मृत्यु पर अहिल्याबाई सती होना चाहती थीं परंतु ससुर के निवेदन और मना करने पर उन्होंने अपना शेष जीवन ईश्वर को सौंपकर सती होने का निर्णय बदल दिया। धीरे-धीरे अहिल्याबाई ने राज्यकाज में भाग लेना प्रारंभ कर दिया और वह अपने ससुर के साथ मिलकर प्रशासनिक निर्णय में सहभाग करने लगीं। बहुत जल्दी ही वह अपने व्यवहार और धार्मिक कार्यों से लोगों में बहुत लोकप्रिय हो गई थीं। लेकिन भाग्य को कुछ और ही मंजूर था, सन् 1766 में ससुर मल्हारराव होल्कर की भी मृत्यु हो गई। अपने पुत्र मालेराव को राजगद्दी पर बिठाकर अहिल्याबाई राज्य का स्वयं संचालन करने लगीं। मृत्यु देवता एक के बाद एक परिवार के सदस्यों को काल का ग्रास बना रहा था। सन् 1767 में पुत्र मालेराव को भी मृत्यु देवता ने अपनी शरण में ले लिया। हे ईश्वर ! पहले पति, फिर सास, फिर ससुर और अब पुत्र कितनी परीक्षा लोगे। लेकिन फिर भी अहिल्याबाई ने हिम्मत नहीं हारी। अहिल्याबाई की लोकप्रियता और अपनी प्रजा के प्रति उनके लगाव को देखकर पेशवा ने 11 दिसंबर 1767 को अहिल्याबाई को मालवा की बागडोर देकर मालवा का सिंहासन उनके सुपुर्द कर दिया।

अहिल्याबाई ने जब शासन की बागडोर संभाली तब राज्य में डाकुओं का आतंक, घोर अत्याचार, साधारण किसान, मजदूर अत्यंत ही दीन-हीन अवस्था में थे, रूढ़ियों और अंधविश्वासों ने आम समाज को जकड़ रखा था, न्याय में न शक्ति थी, न किसी का विश्वास। इस प्रकार की विकट परिस्थितियों का अहिल्याबाई को सामना करना पड़ा। लगभग 30 वर्षों तक अपनी कुशल प्रशासनिक क्षमता के बल पर एक समृद्ध एवं न्यायपूर्ण राज्य चलाकर अपने सेनापति तुकोजीराव होल्कर को सौंप गई। तुकोजी उम्र में अहिल्याबाई से बड़े थे परन्तु वह उन्हें अपनी माता के समान ही मानते थे और राज्य का काम पूरी लगन और निष्ठा के साथ करते थे। राज्य के कागजों में जहाँ कहीं उनका उल्लेख आता है वहाँ तथा मुहरों में भी खण्डोजी सुत तुकोजी होल्कर लिखा पाया गया है। अहिल्याबाई 13 अगस्त 1795 में अपनी इस संसार रूपी देहयात्रा को पूर्ण कर इतिहास के पन्नों में सदा सदा के लिए अमर हो गई।

अहिल्याबाई ने शासन कैसे चलाया होगा यह महेश्वर के किले में लिखे उनके इन शब्दों से हम जान सकते हैं जो आज भी प्रमाण हैं **ईश्वर ने मुझ पर जो उत्तरदायित्व रखा है, उसे मुझे निभाना है। मेरा काम प्रजा को सुखी रखना है। मैं अपने प्रत्येक काम के लिये जिम्मेदार हूँ। सामर्थ्य व सत्ता के बल पर मैं यहाँ जो कुछ भी कर रही हूँ, उसका ईश्वर के यहाँ मुझे जवाब देना होगा, मेरा यहाँ कुछ भी नहीं है, जिसका है उसी के पास भेजती हूँ, जो कुछ लेती हूँ, वह मेरे ऊपर ऋण (कर्जा) है, न जाने कैसे चुका पाऊँगी।**

अहिल्याबाई प्रत्येक दिन सूर्योदय के पहले उठती थीं। स्नान-पूजन, स्वाध्याय के पश्चात् विद्वान ब्राह्मणों से रामायण महाभारत की कथाएं सुनती थीं इसके पश्चात् दीन दु:खियों को भिक्षा, भोजन देकर थोड़ा विश्राम किया करती थीं और फिर दरबार में, शासन के काम में व्यस्त रहती थीं। देवी अहिल्याबाई ने संपूर्ण भारत देश में मुगलकाल के खंडित मंदिरों का जीर्णोद्धार, नवीन मंदिरों, तालाबों, कुएं, बावड़ियों, घाटों, धर्मशालाओं एवं अन्नक्षेत्रों का निर्माण कार्य खंडित मंदिरों का जीर्णोद्धार, नवीन मंदिरों, तालाबों, कुएं, बावडियों, घाटों, धर्मशालाओं एवं अन्नक्षेत्रों का निर्माण कार्य किया। संपूर्ण भारत के प्रमुख तीर्थों में उनके किये कार्य आज भी देवी अहिल्याबाई की कहानी कहते देखे जाते हैं। उनके द्वारा किए कार्य प्रसिद्ध रूप से अयोध्या, सोमनाथ,

केदारनाथ, बद्रीनाथ, रामेश्वरम, काशी, हरिद्वार, घृष्णेश्वर, नासिक, श्रीशैलम, परली वैधनाथ, उज्जैन, ओंकारेश्वर, महेश्वर के मंदिर आदि हैं। अंग्रेज विद्वान जेम्स प्रिंसेप के अनुसार, **अहिल्याबाई के प्रयासों के कारण काशी विश्वनाथ मंदिर 1820 के दशक तक काफी प्रसिद्ध हो गया था।** देवी अहिल्याबाई के विषय में यही कहा जा सकता है वह हिंदू मंदिरों की अग्रणी निर्माता और संरक्षक थीं।

अहिल्याबाई के न्याय से प्रभावित होकर जनता कहती थी अहिल्याबाई के राज्य में बकरी और शेर एक घाट पर पानी पीते हैं। पूर्व काल में प्रजा प्रायः न्याय से वंचित रही थी। लेकिन अहिल्याबाई शिव का न्याय मानकर ही प्रतिदिन दरबार लगाती थीं जो मुख्य रूप से लोगों की बात सुनने के लिए ही होता था। एक कथा बहुत प्रचलित है कि एक डाकू गणपत मराठा देवी के न्याय से प्रभावित होकर अपने द्वारा लूटी गई संपत्ति देवी को समर्पित करना चाहता था। लेकिन अहिल्याबाई ने यह कहते हुए कि यह तुम्हारी संपत्ति गलत मार्ग से प्राप्त की हुई है, जिसे मैं कदापि नहीं ले सकती, लेकिन यदि तुम चाहते हो इस धन का सदुपयोग हो तो जहां से तुमने यह धन लूटा है वहाँ एक गेट का निर्माण कर दो। देवी अहिल्याबाई के वचन सुनकर डाकू गणपत मराठा ने रोते हुए कहा कि एक पापी को भी आपने परमार्थ के कार्य करने का अवसर दे दिया। गणपत मराठा ने अपने उस धन से जामगेट का निर्माण कराया और देवी ने उस स्थान पर एक चौकी स्थापित कराई थी। **श्री शंकर आज्ञेवरुन** (श्री शंकर जी की आज्ञानुसार) इस राजमुद्रा से चलने वाला उनका शासन भगवान् शंकर के प्रतिनिधि के रूप में ही काम करता रहा। उनकी इस न्याय व्यवस्था के कारण लोग उन्हें देवी कहने लगे थे। अहिल्याबाई ने समाज में रूढ़ हो चुकी कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया जिसमें नारी शिक्षा और विधवा विवाह प्रमुख हैं।

अहिल्याबाई के शासन के आरंभिक वर्षों में चोर-डाकुओं का प्रभाव काफी बढ़ गया था। रानी ने घोषणा कर दी कि जो भी व्यक्ति चोर डाकुओं का दमन करेगा उसके साथ में मैं अपनी बेटी मुक्ताबाई का विवाह करा दूंगी। यशवंत फणसे नाम के एक साहसी युवक ने इस काम का बीड़ा उठाया और चोर डाकुओं का कठोरतापूर्वक दमन कर दिया। तब घोषणा अनुसार अहिल्याबाई ने मुक्ताबाई का विवाह उस युवक के साथ संपन्न कराया। अहिल्याबाई ने अपने राज्य में कठोर दण्ड की व्यवस्था की थी।

उन्होंने अपने राज्य की कर व्यवस्था पर भी विशेष ध्यान दिया था। अपने राज्य की एक-एक बात को अहिल्याबाई प्रतिदिन देखती थीं। अपने राज्य के हर पहलू पर उन्होंने विचार किया था इसी कारण उनके राज्य में साहित्य, संगीत, कला, शिल्प और उद्योग के क्षेत्र में विकास हुआ।

अहिल्याबाई का चित्र अधिकतर लोगों ने भगवान शिव को अपने हाथों में रखे ही देखा है जो उन्हें न्याय की

देवी के रूप में स्थापित करता है। लेकिन अहिल्याबाई का युद्ध कौशल, रणनीति कौशल, राजनीति कौशल और नेतृत्व क्षमता भी अद्भुत थी। अहिल्याबाई ने एक महिला सैनिक दल बनाया था और कई बार सैनिक वेष में युद्ध के मैदान में उतरकर दुश्मन को झुकने को मजबूर कर दिया था। पुत्र मालेराव की मृत्यु के पश्चात् पूना के पेशवा के चाचा रघुनाथ राव (राघोबा), होल्कर राज्य को हड़पने पचास हजार की सेना लेकर नर्मदा पार कर खातेगांव तक आ गए थे। वहीं से उसने रानी को संदेश भेजा **राजगद्दी पर केवल पुरुष ही बैठते हैं, महिलाएं नहीं, इंदौर की राजगद्दी पर एक विधवा बैठे, यह हमें स्वीकार नहीं। अतः आप तुरंत यह राज्य हमें सौंप देवें। यह भी ध्यान रहे कि हम सेना के साथ आए हैं।** अहिल्याबाई ने भी चुनौती को स्वीकारते हुए पत्र भिजवाया किसी विधवा के पास संवेदना प्रकट करने के लिए सेना सहित जाना, शायद पेशवाओं में यही रिवाज होगा। इस संवेदना के लिए आपकी आभारी हूँ। जहाँ तक गद्दी पर किसी विधवा के बैठने का प्रश्न है, आपको स्मरण होगा कि छत्रपति राजाराम की मृत्यु के बाद उनकी विधवा ताराबाई ने गद्दी संभाली थी। फिर मेरे पास राज्य है ही कहाँ, जो मैं आपको सौंप दूँ। वह तो मैं कब का कुलदेवता को समर्पित कर चुकी हूँ और उनकी सेविका के रूप में उनकी धरोहर की रखवाली कर रही हूँ। आप सेना सहित आए हैं, इस बात का ध्यान रख मैं भी सेना सहित आपका स्वागत करने आ रही हूँ। हमारी पूरी सेना लड़ेगी। उसकी अग्रिम पंक्ति में महिलाओं की टुकड़ी रहेगी, जिसका नेतृत्व मैं स्वयं करूँगी। मेरी हार होने पर सभी मराठों की सहानुभूति मुझ **अबला** के साथ होगी। लेकिन यदि कहीं आप हार गए तो एक **अबला** से पराजित होने का कलंक जीवन भर के लिए आपके माथे पर लग जाएगा। सोच लीजिए, फिर आप दुनिया को क्या मुँह दिखाएँगे। रानी के पत्र की भाषा इतनी स्पष्ट थी कि राघोबा को अधिक सोचने की जरूरत नहीं पड़ी। उसने सेना वापिस नर्मदा के पार भेज दी और अकेले ही हाथी पर सवार हो सांत्वना प्रकट करने इन्दौर आए। इस प्रकार अपनी कुशल रणनीतिक समझ के आधार पर पूरी सेना को युद्ध मैदान से पीछे हटाया। अहिल्याबाई ने भानपुरा-रामपुरा के युद्ध में स्वयं सैनिक वेष में पहुंच कर राजपूतों को भी पीछे हटने को विवश कर दिया। उन्होंने मराठा साम्राज्य पर अंग्रेजों के खतरे को बहुत पहले ही भांप लिया था। अहिल्याबाई द्वारा सन् 1772 में पेशवा को लिखे एक पत्र में अंग्रेजों से सावधान रहने को कहा गया था। उन्होंने लिखा था **शेर को साहस और आक्रामकता से मारा जाता है लेकिन चतुर रीछ को मारना बहुत मुश्किल होता है, क्योंकि एक बार उसके कब्जे में आ जाने पर उसे मार पाना बहुत मुश्किल हो जाता है, ऐसा ही कुछ हाल अंग्रेजों का भी है।**

एक शासक के रूप में अहिल्याबाई का जीवन सादगी, सरलता, संयम से पूर्ण था। उन्हें किसी प्रकार की चापलूसी और आत्मप्रशंसा पसंद नहीं थी। एक बार की बात है, **एक ब्राह्मण कवि ने अहिल्याबाई की प्रशंसा में एक पुस्तक लिखकर उन्हें भेंट की जिसे अहिल्याबाई ने बहुत धैर्यपूर्वक पढ़ा और उसे पढ़ने के पश्चात् सहजता से कहा आगे से इस प्रकार की रचना न लिखें और उस पुस्तक को नर्मदा में फेंकने का आदेश दिया।**

इंदौर को एक छोटे से गाँव से एक समृद्ध शहर में बदलने का श्रेय भी अहिल्याबाई को ही जाता है। साथ ही उन्होंने अपनी राजधानी इंदौर से महेश्वर लाकर बसाई जहां उन्होंने एक सुंदर घाट, काशी विश्वनाथ का मंदिर और कई महत्वपूर्ण इमारतें बनाई। अपने राज्य के भील और किसानों को खेती के प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध कराये, पानी के लिए तालाब बनाए जिससे किसान समृद्ध हुए। महेश्वर में साड़ी बनाने के लिए हथकरघा (हैंडलूम) स्थापित किये जिससे महेश्वर की साड़ी पूरे भारत में प्रसिद्ध हुई। इंदौर और महेश्वर को केंद्र बनाकर उद्योग-व्यापार को बढ़ावा दिया। इस प्रकार एक सामान्य जागीर का अहिल्याबाई ने एक समृद्ध राज्य में परिवर्तन कर दिया।

स्वतन्त्र भारत में अहिल्याबाई को एक ऐसी महारानी के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने भारत के अलग-अलग राज्यों में मानवता की सेवा के लिये अनेक कार्य किये थे। इसलिए उनके विषय में आज अलग-अलग राज्यों की पाठ्य पुस्तकों में पढ़ाया जाता है। उनके इस योगदान के लिए भारत सरकार तथा विभिन्न राज्यों की सरकारों ने उनकी प्रतिमाएँ स्थापित की हैं, उनके नाम से कई जन कल्याणकारी योजनाएं चलाईं एवं संस्थानों के नाम रखे हैं। इंदौर में देवी अहिल्याबाई होल्कर विश्वविद्यालय, देवी अहिल्याबाई होल्कर अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट बनाया गया है। प्रतिवर्ष इन्दौर और महेश्वर में भाद्रपद कृष्णा चतुर्दशी के दिन अहिल्योत्सव मनाया आता है। भारत सरकार ने वर्ष 1996 में अहिल्याबाई होल्कर के नाम पर एक डाक टिकट भी जारी किया था। 31 मई 2024 से अहिल्याबाई का 300वां जन्म वर्ष है। यह हमारे लिए एक अवसर और हमारा दायित्व है कि इस पूरे वर्ष में हम अनेक प्रकार के आयोजन कर संपूर्ण समाज को उनके जीवन से साक्षात्कार कराएं। गोष्ठी, प्रबोधन, प्रतियोगिताओं एवं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनके जीवन के विविध पहलुओं पर आलेख लिखकर उनके जीवन और उनके कार्यों को जन-जन तक पहुंचाएं। यही देवी अहिल्याबाई के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अहिल्या काल के त्योहार

अरुंधती सिंह चंदेल

भारत में त्योहारों परंपरा केवल आनंद और उल्लास तक सीमित नहीं रही है। यह समाज को जोड़ने और सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित करने का एक सशक्त माध्यम भी है। देवी अहिल्याबाई का मानना था कि राजा केवल शासनकर्ता नहीं, बल्कि प्रजा का मागादर्शक होता है। त्योहारों के दौरान वह स्वयं अपने महल से बाहर निकलकर प्रजा के बीच जाती थी।

त्योहार हमेशा से खुशियां और एकजुटता का प्रतीक रहे हैं। त्यौहार सादगी के साथ जीने का संदेश देने वाले उत्सव थे। उनकी शासन शैली ने त्योहारों को भव्यता से अधिक सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों का माध्यम बना दिया था। त्योहारों का भव्य परंतु सादा आयोजन कर मनाया जाता था।

प्रमुख त्योहारों पर सामूहिक हवन का आयोजन किया जाता था, जिसमें समाज के हर वर्ग के लोग भाग लेते थे। यह सामाजिक समानता और सामूहिकता का प्रतीक था। उनके शासनकाल में त्योहारों के दौरान सुंत-महात्माओं को विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता था। वे अपने प्रवचनों के माध्यम से समाज को धर्म, नैतिकता और सद्गुणों की शिक्षा देते थे।

गणेश चतुर्थी के अवसर पर देवी अहिल्याबाई के समय में मंदिरों में भक्ति गीत गाए जाते थे। कलाकार नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से भगवान गणेश की महिमा का वर्णन करते थे। यह न केवल धार्मिक , बल्कि सांस्कृतिक समृद्धि का भी प्रतीक था।

होली का त्योहार रंगों और मस्ती का उत्सव जरूर था, लेकिन इसमें अनावश्यक दिखावा नहीं था। गांव-गांव में लोग मिलकर प्राकृतिक रंग बनाते थे और पूरे समुदाय के साथ त्योहार मनाते थे। इस दौरान जात-पात या अमीर-गरीब का भेद मिट जाता था।

दीपावली के दौरान देवी अहिल्याबाई खुद अपने महल और मंदिरों को दीयों से सजाती थीं। उस समय पटाखों का कोई दिखावा नहीं होता था। इसके अतिरिक्त दीपों की रौशनी से पूरी नगरी जगमगा उठती थी। महेश्वर के घाटों पर दीयों की कतारें बनती थीं, जो नर्मदा नदी में प्रतिबिंबित होकर अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करती थीं। सभी के लिए एक समान खुशनुमा उत्सव हुआ करते थे । त्योहारों के दौरान यह सुनिश्चत किया जाता था हक कोई भूखा न रहे।

मकर संक्रांति के अवसर पर सामूहिक भोज

आयोजित होते थे। इन भोजों में हर वर्ग और समुदाय के लोग एक साथ बैठकर भोजन करते थे। यह संदेश दिया जाता था कि समाज में सब समान हैं।

गणेश चतुर्थी के अवसर पर देवी अहिल्याबाई के समय में मंदिरों में भक्ति गीत गाए जाते थे। कलाकार नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से भगवान गणेश की महिमा का वर्णन करते थे। यह न केवल धार्मिक , बल्कि सांस्कृतिक समृद्धि का भी प्रतीक था।

महिलाओं और समाज के प्रति जागरूकता

देवी अहिल्याबाई ने त्योहारों को महिलाओं और समाज के उत्थान का माध्यम बनाया। नवरात्रि के समय देवी दुर्गा की पूजा के साथ महिलाओं को शिक्षा और सशक्तिकरण का महत्व समझाया जाता था। इस दौरान वे स्वंय महिलाओं से संवाद करती और उन्हें प्रेरित करती जो सदैव सादगी और परोपकार का सुगम बना करता था । त्योहारों की भव्यता के पीछे सादगी और सेवा की भावना थी। अहिल्याबाई त्योहारों पर गरीबों को वस्त्र, अनाज और धन दान करती थी। उनके द्वारा किए गए कार्य समाज को यह संदेश देते थे कि असली खुशी दूसरों के जीवन में रोशनी लाने में है।

सामाजिक एकता का संदेश

त्योहारों का सबसे बड़ा उद्देश्य समाज में एकता और प्रेम बनाए रखना था। उनके समय में हर जाति और धर्म के लोग मिलकर त्योहार मनाते थे। इस तरह, त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक एकता का उत्सव बन जाते थे। देवी के शासन काल के समय में त्योहारों का स्वरूप आज के भव्य त्योहारों से अलग था। यह उत्सव सादगी, सामूहिकता और सामाजिक उत्थान का प्रतिबिंब थे। उनके कुशल नेतृत्व में त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि हर वर्ग के लिए एकजुटता का प्रतीक बन गए।

निष्कर्ष - देवी अहिल्याबाई होलकर के समय के त्योहार न केवल धार्मिक, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक उत्थान का माध्यम थे बल्कि हमें एक नई दृष्टि प्रदान करते हैं। उनकी परंपरा सिखाती हैं कि सच्चे त्योहार वही हैं जो समाज को जोड़ें, भेदभाव मिटाएं और हर व्यक्ति के जीवन में खुशियां लाएं। उनकी सादगी, परोपकार और हर किसी को साथ लेकर चलने की भावना आज भी प्रेरणा देती है। उनके समय में मनाए गए त्योहार हमें सिखाते हैं कि असली उत्सव दिखावे में नहीं, बल्कि सच्चे हृदय से साझा की गई खुशियों में है।

विश्व मंगल कामना

कवि राकेश दाँगी (इंदौर)

युवा शक्ति संकल्प करे, भारत के उत्थान का,
विश्व मंगल कामना है, ध्येय हिंदुस्तान का।

भारत युक्त शिक्षा हो, शिक्षा सस्ती हो नवसंचार,
राष्ट्र हित शिक्षा मिले, जीवन मूल्य बने आधार,
आनंदित हो शिक्षा परिसर, दीप जले ज्ञान का,
विश्व मंगल कामना है.........

पुण्यश्लोका मात अहिल्या, कर्मयोगिनी शिव साधक,
मंदिर घाट कुएं बनवाए, जन कल्याण की वो आराधक,
अखिल विश्व को दिया संदेश, राष्ट्र स्वाभिमान का,
विश्व मंगल कामना है.........

अखंड राष्ट्र स्वर गूंजे, विजय की हुंकार भरें,
संघ साधना की है सदी, स्व की जय जयकार करें,
आगया हे शुभ समय, स्वराज कीर्तिमान का,
विश्व मंगल कामना है.........

पर्यावरण का हो वंदन,परिवार के लिए समर्पण,
कुटुम्ब प्रबोधन कर्म हो, स्वदेश हेतु सर्वस्व अर्पण
समरसता सारथी बने, युग पांचजन्य यशगान का,
विश्व मंगल कामना है.........

सनातन वाङ्मय में "माँ"

पद्मनाभ तिवारी

सनातन संस्कृति में **माँ** का एक विशेष स्थान है। यह शब्द न केवल मातृत्व की भावना को दर्शाता है, बल्कि यह एक आध्यात्मिक और पावन अवधारणा भी है। सनातन दर्शन में माँ को ईश्वर के साकार रूप में देखा जाता है, जो प्रेम, करुणा, और सृजन की प्रतीक है। माँ परिवार और समाज की धुरी है, जो प्रेम, सहानुभूति, और संरक्षण प्रदान करती है। माँ की भूमिका न केवल मातृत्व की है, बल्कि वह एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक और प्रेरणा का स्रोत भी है।

भारत की चिति आध्यात्मिक है। पश्चिम में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाएँ हमेशा से विज्ञान की ओर जाती रही हैं। वहीं भारत में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाएँ अनादिकाल से अध्यात्म की ओर आती रही हैं। मुक्ति प्राप्त करना जीवन का आत्यंतिक लक्ष्य है - ऐसा निश्चय भारत के जन-जन के मन में समाया हुआ है। यह अवश्य है कि कहीं यह चेतन रूप में है, तो कहीं अवचेतन और कहीं अचेतन रूप में। अध्यात्म पथ के राही का अंतिम उद्देश्य स्वयं की मालकियत, स्वामित्व हासिल करना है। इस उद्देश्य का निरन्तर स्मरण कराने के लिये उसे स्वामी कहा जाता है, यथा - स्वामी विवेकानन्द, स्वामी सत्यमित्रानंद गिरी, आदि। यह इस बात का द्योतक है कि उसके अंदर का असीम आनंद, असीम करुणा अब स्व-तंत्र है, स्व-निर्भर है, स्व-स्फूर्त है। अब वह किसी व्यक्ति, घटना या परिस्थिति पर निर्भर नहीं।

अध्यात्म पथ की राही यदि स्त्री हो तो उसे माँ कहा जाता है, यथा - माँ निर्मला देवी, माँ आनन्दमयी, आदि। इस बात का निरन्तर स्मरण कराने के लिये कि उसका मातृवत् गुण अब किसी व्यक्ति, घटना या परिस्थिति पर निर्भर नहीं। यह मातृवत् भाव असीम आनंद व असीम करुणा का स्रोत है। जिस प्रकार माँ का अपनी संतान के प्रति प्रेम निःस्वार्थ, बेशर्त तथा संपूर्ण होता है, ऐसा ही भाव अब उससे संसार के प्रति अपेक्षित है। एवं इस भाव को, इस गुण को भारतीय मनीषा में सर्वोच्च माना गया है। पुरुष संन्यासी की उपाधि **स्वामी** थोड़ी संकीर्ण है, ज़ोर स्वयं पर है। स्त्री संन्यासिनी की उपाधि **माँ** अपेक्षाकृत व्यापक है, ज़ोर स्वयं से हटकर अन्यों पर है, इसमें परोपकार भाव निहित है। अध्यात्म का बाह्य कलेवर ही धर्म है। वैसे तो धर्म का अर्थ 'मज़हब' या 'रिलीजन' नहीं, किन्तु तुलनात्मक चर्चा के लिये हमें इसका इस्तेमाल करना होगा। विश्व के प्रत्येक धर्म में ईश्वर की अवधारणा है। किन्तु सनातन धर्म के अलावा प्रत्येक धर्म में ईश्वर अनिवार्यतः पुरुष है। केवल सनातन धर्म में ईश्वर पुरुष रूप में भी है और स्त्री रूप में भी। देवी भगवती को ईश्वर रूप में सिर्फ़ सनातन धर्म ही पूजता है। अन्य किसी धर्म में स्त्री-ईश्वर का कोई स्थान नहीं है। सनातन धर्म तो इतना उदारमना है कि यहाँ अर्द्धनारीश्वर का भी स्थान है। और, सनातन धर्म में ईश्वर का जो स्त्री-स्वरूप है वह माँ के रूप में है, यथा - दुर्गा माँ, काली माँ, पार्वती माँ, सीता माँ, आदि। सनातन धर्म माँ को ईश्वर के साकार रूप में देखता है, जो सृष्टि की उत्पत्ति और पालन के लिए जिम्मेदार है। हमारे यहाँ तो यह भी कहा गया है कि समस्त भगवानों व देवताओं की शक्तियों को मिलाकर माँ दुर्गा की निर्मिति हुई है। इस प्रकार, माँ दुर्गा को एक प्रकार से सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है।

यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि सनातन संस्कृति में ईश्वर का पुरुष-स्वरूप भी युगल-रूप में ही मान्य है, जिसमें स्त्री-स्वरूप का नाम पहले आता है, यथा - सीताराम, राधेश्याम, गौरीशंकर, लक्ष्मीनारायण। यह दर्शाता है कि सनातन संस्कृति में स्त्री को उच्च स्थान दिया गया है और उसकी महत्ता को स्वीकार किया गया है, एवं पुरुष और स्त्री को एक दूसरे के पूरक के रूप में देखा गया है, न कि एक दूसरे के विरोधी के रूप में।

सनातन संस्कृति नदियों को भी माँ के रूप में देखती है, यथा - माँ गंगा, माँ नर्मदा। माँ नर्मदा के परिक्रमा-वासी तो संपूर्ण परिक्रमा उन्हें माँ के रूप में देखते और अनुभव करते हुए ही करते हैं। इसके अलावा, नदियों को माँ के रूप में देखने की भावना से हमें उनकी महत्ता और पवित्रता का एहसास होता है। यह हमें नदियों की रक्षा और संरक्षण के लिए प्रेरित करता है, ताकि हम उनकी पवित्रता और महत्ता को बनाए रख सकें। कहना न होगा कि जब से इस भावना का क्षरण हुआ है अथवा यह भावना मात्र औपचारिकता बनकर रह गई है, तब से हमारी नदियाँ प्रदूषित हो गई हैं।

अपने शुद्धतम रूप में सनातन संस्कृति में माँ की अवधारणा को यदि विश्व आत्मसात करता है तो विश्व-संस्कृति के एक अर्थपूर्ण व समृद्ध युग का सूत्रपात हो सकता है।

धार की रानी, द्रौपदी बाई

लोकेंद्र शर्मा, उज्जैन

रानी द्रौपदी बाई निःसंदेह भारत की एक प्रसिद्ध वीरांगना रही हैं जिनके बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है, लेकिन इतिहास में रानी द्रौपदी बाई का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने कभी भी सरकार की खुशामद नहीं की। एक छोटी सी रियासत धार की रानी द्रौपदी बाई ने अपने पराक्रम से यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय ललनाओं की धमनियों में भी रणचंडी और दुर्गा का रक्त ही प्रवाहित होता है। रानी द्रौपदी बाई धार क्षेत्र की क्रांति की सूत्रधार थीं। अंग्रेज उनसे भयभीत थे।

धार मालवा क्षेत्र का एक छोटा-सा राज्य था। 22 मई 1857 को धार के राजा का देहावसान हो गया। आनन्दराव बालासाहेब को उन्होंने मरने के एक दिन पहले गोद लिया। वे उनके छोटे भाई थे। राजा की बड़ी रानी द्रौपदी बाई ने ही राज्य भार सँभाला, कारण आनन्दराव बालासाहेब, नाबालिग़ थे।

अन्य राजवंशों के विपरीत अंग्रेजों ने धार के अल्पवयस्क राजा आनन्दराव को मान्यता प्रदान कर दी। उन्हें आशा थी कि ऐसा करने से धार राज्य उनका विरोध नहीं कर सकेगा, लेकिन रानी द्रौपदी के हृदय में तो क्रांति की ज्वाला धधक रही थी। रानी के कार्य-भार सँभालते ही समस्त धार क्षेत्र में क्रांति की लपटें प्रचंड होकर फैलने लगीं।

रानी द्रौपदी बाई ने रामचंद्र बापूजी को अपना दीवान नियुक्त किया। बापूजी ने सदा उनका समर्थन किया। इन दोनों ने 1857 की क्रांति में अंग्रेजी ईसाइयों का विरोध किया। क्रांतिकारियों की हरसंभव सहायता रानी ने की।

अपनी राज्य सेवा की सेना में अरब, अफ़ग़ान आदि सभी वर्ग के लोगों को नियुक्त किया। अँग्रेज़ नहीं चाहते थे कि रानी देशी वेतन भोगी सैनिकों की नियुक्ति करें। रानी ने उनकी इच्छा की कोई चिंता न की। रानी के भाई भीमराव भोंसले भी देशभक्त थे। धार के सैनिकों ने अमझेरा राज्य के सैनिकों के साथ मिलकर सरदारपुर पर आक्रमण कर दिया रानी के भाई भीमराव ने क्रांतिकारियों का स्वागत किया। रानी ने लूट में लाई गई तीन तोपों को भी अपने राजमहल में रख लिया। 31 अगस्त को धार के किले पर रानी के नेतृत्व में क्रांतिकारियों का अधिकार हो गया। क्रांतिकारियों को रानी की ओर से पूर्ण समर्थन दिया गया था। अँग्रेज़ कर्नल ड्यूरेंड ने रानी के कार्यों का विरोध करते हुए लिखा कि आगे की समस्त कार्यवाही का उत्तरदायित्व उन पर होगा।

धार की राजमाता द्रौपदी बाई एवं राजदरबार द्वारा विद्रोह को प्रोत्साहन दिए जाने के कारण कर्नल ड्यूरेंड बहुत चिंतित हो गए। उन्हें भय था कि समस्त मालवा क्षेत्र में शीघ्र क्रांति फैल सकती है। नाना साहब भी उसके आस-पास ही जमे हुए थे। जुलाई 1857 से अक्टूबर 1857 तक धार के किले पर क्रातिकातियों के बीच एक समझौता हो गया। क्रांतिकारियों के नेता गुलखान, बादशाह खान, सआदत खान स्वयं रानी द्रौपदी बाई के दरबार में आए। क्रांतिकारी अँग्रेज़ों को बहुत परेशान किया करते थे। वे उनके डाक लूट लेते। उनके घरों में आग लगा देते।

ब्रिटिश सैनिकों ने 22 अक्टूबर 1857 को धार का किला घेर लिया। यह किला मैदान से 30 फिट ऊँचाई पर लाल पत्थर से बना था। किले के चारों ओर 14 गोल तथा दो चौकोर बुर्ज बने हुए थे। क्रांतिकारियों ने उनका डटकर मुक़ाबला किया। ब्रितानियों को आशा थी कि वे शीघ्र आत्मसमर्पण कर देंगे, पर ऐसा न हुआ। 24 से 30 अक्टूबर तक संघर्ष चलता रहा। किले की दीवार में दरार पड़ने के कारण ब्रितानी सैनिक किले में घुस गए। क्रांतिकारी सैनिक गुप्त रास्ते से निकल भागे।

कर्नल ड्यूरेन्ड तो पहले से ही रानी का विरोधी था। उसने किले को ध्वस्त कर दिया। धार राज्य को ज़ब्त कर लिया गया। दीवान रामचंद्र बापू को बना दिया गया। 18 60 में धार का राज्य पुनः अल्पवयस्क राजा को व्यस्कता प्राप्त करने पर सौंप दिया गया। रानी द्रौपदी बाई धार क्षेत्र के क्रांतिकारियों को प्रेरणा देती रहीं। उन्होंने बहादुरी के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का विरोध किया। यह अपने आप में कम नहीं था, निःसंदेह रानी द्रौपदी बाई एक प्रमुख क्रांति की अग्रदूत रही हैं।

सिपरा शुद्धिकरण (मालवी गीत)

डॉ. राजेश रावल 'सुशील'

कल-कल, कल-कल बइरी सिपरा,
संदेशो यो दइरी सिपरा,
बात पता की कइरी सिपरा,
हम सबके समझइरी सिपरा।
पाणी हे तो जिन्दगाणी हे
पाणी आज बचाणो हे।

छल-छल छलके अमरित धारा,
हर मनम्या को सपणो।
साफ-सुथरो पाणी वे,
हर घाट मनोहर अपणो।
महाकाल अभिषेक करी ने,
पुण्य कमाणो हे।
सिपरा शुद्धि का कारज में,
हात बटाणो हे।।

ताल-तलैया, कुआं-बावड़ी, घर-आँगण की कुंडी।
कूड़ो-करकट हेड़ी फेंका, करदां गेरी उंडी।
अपणा पुरखां की थाती के
आज बचाणो हे।
सिपरा शुद्धि का कारज में
हात बटाणो हे।।

मोक्षदायिनी माँ सिपरा की परक्रमा करि आवां।
निर्मल मन ती, निर्मल जल की,
चलो चूनड़ ओढावां।
सिपरा पंचकोसी में सबके
सांते लाणो हे।
सिपरा शुद्धि का कारज में
हात बटाणो हे।।
कल-कल, कल-कल बइरी सिपरा.............

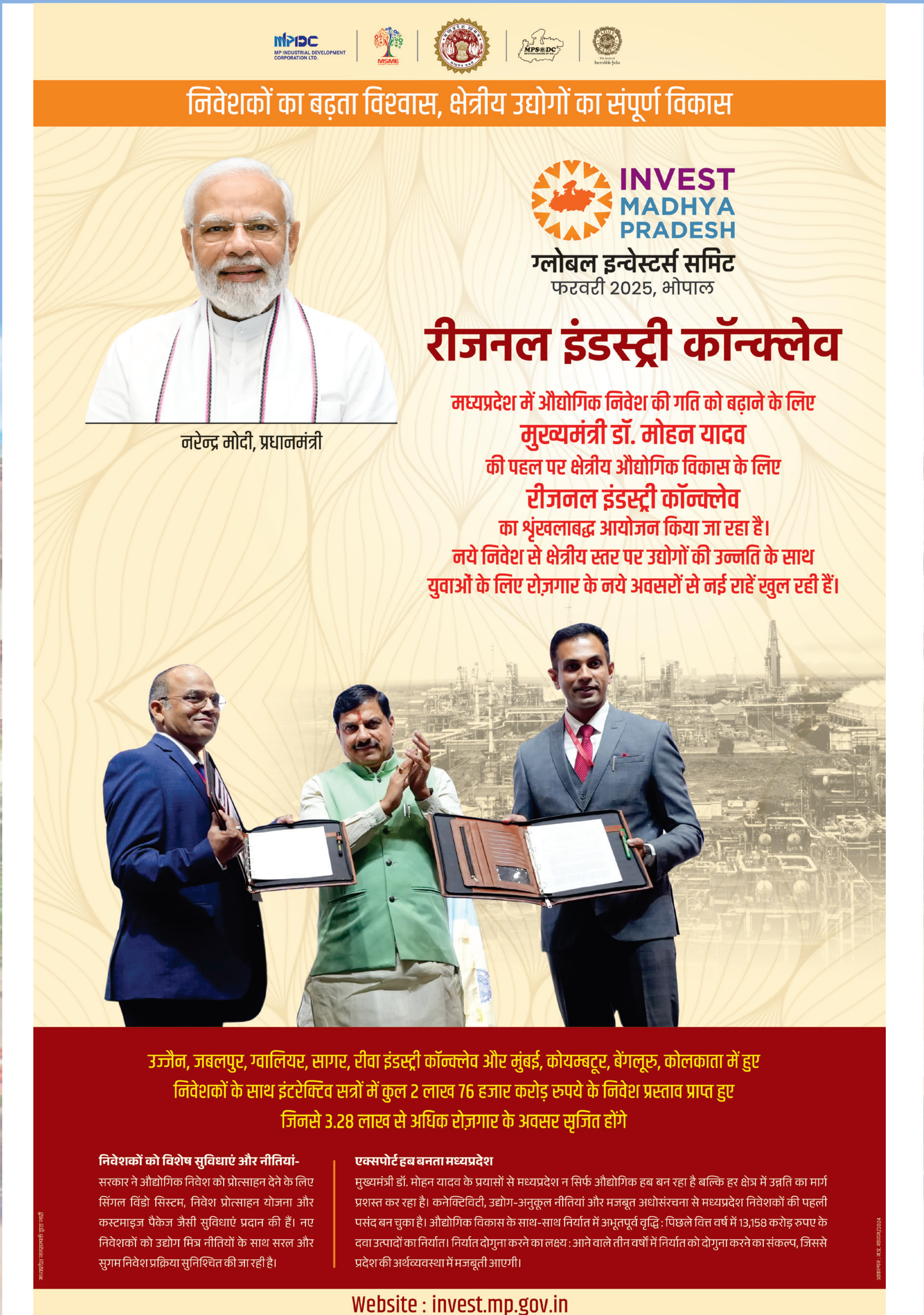
MPIDC MP INDUSTRIAL DEVELOPMENT CORPORATION LTD.
MSME
MPSEDC
निवेशकों का बढ़ता विश्वास, क्षेत्रीय उद्योगों का संपूर्ण विकास
INVEST MADHYA PRADESH
ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट
फरवरी 2025, भोपाल
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव
मध्यप्रदेश में औद्योगिक निवेश की गति को बढ़ाने के लिए
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव
की पहल पर क्षेत्रीय औद्योगिक विकास के लिए
रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव
का श्रृंखलाबद्ध आयोजन किया जा रहा है।
नये निवेश से क्षेत्रीय स्तर पर उद्योगों की उन्नति के साथ
युवाओं के लिए रोज़गार के नये अवसरों से नई राहें खुल रही हैं।
उज्जैन, जबलपुर, ग्वालियर, सागर, रीवा इंडस्ट्री कॉन्क्लेव और मुंबई, कोयम्बटूर, बेंगलूरु, कोलकाता में हुए
निवेशकों के साथ इंटरेक्टिव सत्रों में कुल 2 लाख 76 हजार करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए
जिनसे 3.28 लाख से अधिक रोज़गार के अवसर सृजित होंगे
निवेशकों को विशेष सुविधाएं और नीतियां-
सरकार ने औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए सिंगल विंडो सिस्टम, निवेश प्रोत्साहन योजना और कस्टमाइज पैकेज जैसी सुविधाएं प्रदान की हैं। नए निवेशकों को उद्योग मित्र नीतियों के साथ सरल और सुगम निवेश प्रक्रिया सुनिश्चित की जा रही है।
एक्सपोर्ट हब बनता मध्यप्रदेश
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रयासों से मध्यप्रदेश न सिर्फ औद्योगिक हब बन रहा है बल्कि हर क्षेत्र में उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। कनेक्टिविटी, उद्योग-अनुकूल नीतियां और मजबूत अधोसंरचना से मध्यप्रदेश निवेशकों की पहली पसंद बन चुका है। औद्योगिक विकास के साथ-साथ निर्यात में अभूतपूर्व वृद्धि : पिछले वित्त वर्ष में 13,158 करोड़ रुपए के दवा उत्पादों का निर्यात। निर्यात दोगुना करने का लक्ष्य : आने वाले तीन वर्षों में निर्यात को दोगुना करने का संकल्प, जिससे प्रदेश की अर्थव्यवस्था में मजबूती आएगी।
मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी
Website : invest.mp.gov.in

कुलदेवी परम्परा

आदित्य पांडे

अष्टमी और नवमी को लेकर फर्क रहता है, कोई कहता हमारे यहां अष्टमी ही पूजी जाती है तो किसी का कहना है कि हमारे यहां नवमी पूजन ही होता है... लेकिन इनमें एक बात समान होती है कि वो सभी परिवारजन आ जुटते हैं जिन्हें कभी कभी मिले को पूरा साल गुजर जाता है। इस लिहाज से ये पूजन दीपावली से बड़ा त्यौहार हो जाता है।

देखिए ना, बिहार में छठी मैया के पूजन के समय बिहार की तरफ जाने वाली ट्रेनें कैसी भरी होती हैं। परिवार के वो सदस्य भी जो किसी वजह से आपस में बात न कर रहे हों, उस पुश्तैनी घर की दहलीज तक जरूर पहुंचते हैं जहां कुलदेवी विराजती हैं और जहां गुड़ घी उन्हें चढ़ाया जाता हो। जब तक गांव में रहा यह हर साल का नजारा होता कि कुलदेवी के नाम पर कितनी कितनी दूरी तय कर सभी पहुंच रहे होते। पूजा के नाम पर कोई बड़ी विधि विधान हो ऐसा भी नहीं। तब यह सब देखने में वही भक्ति का प्रवाह दिखाई पड़ता था लेकिन उसके निहितार्थ शायद इसी बात में थे कि कुल वाले यदि किसी के नाम पर जुट सकते हैं तो वो कुल देवी ही हो सकती हैं। वो कुलदेवी भी क्या रही होंगी, घर की ही बड़ी, परिवार को संबल देते रहने वाली और सभी को एकजुट रखने में जान खपाने वाली परिवार की ही कोई सदस्य रही होंगी जो सिर झुकाते झुकाते अब देवी हो गई हैं। सिर झुकाओ तो पत्थर देवता हो जाएगा और यहां हम साक्षात देख रहे हैं कि जुटाने वाली, मजबूत जोड़ देकर कुल को जमा कर लेने वाली घर की ही कोई बुजुर्ग आज कुल देवी कहलाते पूजी जा रही है।

प्रसादी बने तो सवाल यह कि मां को क्या चढ़ता है और क्या नहीं, हर एक के अपने कायदे। किसी घर बिना नमक के खाने का रिवाज तो किसी के यहां कढ़ी का भोग जरुरी, हलवा या खीर का भी अपना वजूद। ठीक वैसा ही मामला जैसा हर गृहिणी की रसोई का स्वाद अलग और रोज बदल बदल कर खाने को रुचिकर बनाए रखने की जिद होती है। कभी इस अष्टमी और नवमी के माता पूजन के विश्लेषण पर बात करने बैठे तो एक बुजुर्ग ने एक और खास बात पर ध्यान दिलाया कि घर की बिन ब्याही लड़कियां पूजन में ज्यादा शामिल नहीं होतीं, भले इसे कोई भेदभाव की तरह देखे लेकिन यह भी तो एक तर्क हो सकता है कि यह मातृशक्ति के प्रति पुरुषों में जो भावनाएं डालनी हैं वह ज्यादा महत्व की हैं क्योंकि ये लड़कियां तो

कल की मातृशक्ति हैं ही।

जब पुरुषों का अहम इस मां के, इस कुलदेवी के सामने नत हो जाए तो घर की कन्या को तो पहले ही देवी का दर्जा हासिल है। वह तो नवरात्रि में न सिर्फ पग पखार कर पूजी जाएगी बल्कि उसके आशीष के लिए ठीक उसी तरह नतमस्तक हुआ जाएगा जिस तरह कुलदेवी के सामने हुआ जाता है। कुल की देवी का पूजन तो हर साल देखते ही थे लेकिन एक बार गांव देवी के भी पूजन का नजारा देखा। बारह साल में एक बार होने वाले इस पूजन में ठीक वही रीत कि गांव के हर परिवार का हर सदस्य शामिल होगा। तय समय पर कांकड पर पूजन होगा और गांव की देवी को इस बात के लिए मनाया जाएगा कि सब खुश रहें। ग्राम देवता का तो हवन के मंत्रों में आवाहन सुना था लेकिन ग्राम देवी का इस तरह उत्सवी माहौल में पूजन अनूठा दृश्य था।

ग्राम देवी क्या होंगी कैसी होंगी, क्यों उनके पूजन की प्रथा पड़ी... ये सब तो कोई बता पाने से रहा लेकिन इतना तय है कि ये छठी मैया जैसी बड़ी बहन और कुल देवी जैसी छोटी बहन के बीच की ही होंगी जो गांव की खुशहाली का आशीष भर दें। दें तो झोली भर दें।

शत-शत-शत अभिवादन

लक्ष्मीनारायण भाला 'लक्खीदा'

पुरखों की शुभ परंपरा का, जो करती संवर्धन ।
देवी अहिल्याबाई होलकर, दृढ़ प्रतिज्ञ, शिव भक्तन।।
करते शत-शत-शत अभिवादन।
करो स्वीकार हमारा वन्दन ।।धृ।।

बाल्य काल में नदी किनारे, बना लिया शिव लिंग।
भले रेत से क्यों न बना हो, स्वनिर्मित था पीण्ड।।
रक्षा के हित जूझ रही थी, उन्मादी घोड़े से।
बाजीराव ने देखा उसको, गौर भरी नजरों से।।
बोली दृढ़ता भरे भाव से, यह मेरी रचना है।
स्वनिर्मित चीजों की रक्षा, स्वयं करें, यह व्रत है।।
देख बालिका की यह दृढ़ता, बोल उठे पेशवा।
राजवंश की बहू बनेगी, राज करेगी बिटिया ।।1।।
बालिका दृढ़ प्रतिज्ञ, शिव भक्तन.
करते शत-शत-शत अभिवादन...

माणकोजी शिंदे की कन्या, पहुँच गई दरबार।
राजवंश था होलकर, इन्दौर राज दरबार।।
ससुर मल्हारराव थे, पति थे खण्डेराव।
यथा समय बहू माँ बनी, बेटा मालेराव।।
करवट बदली भाग्य ने, आयु थी उन्तीस।
वीर मरण पति को मिला, सास-ससुर स्वर्गीश।।
बेटा, बेटी और जवाई, दोहिता गया सिधार।
तेरह वर्ष के कालखण्ड में, यम-ताण्डव संहार ।।2।।
देवी दृढ़ प्रतिज्ञ, शिव भक्तन
करते शत-शत-शत अभिवादन...

यम-ताण्डव के लिए किया, शिव-ताण्डव उपचार।
सेनापति तुकोजी होलकर, दिया पुत्रवत प्यार।।
हम केवल प्रतिनिधि शंकर के,
राज है 'श्री शंकर' का।
धर्म, न्याय, सेवा परायणी, शासन मातृ-हृदय का।।
अत्याचारी मुगलों ने जो, मठ-मंदिर तोड़े थे।
धाम अयोध्या, मथुरा, काशी, निर्मित पुनः किये थे।।
रामेश्वर, द्वारिका, पुरी भी, जीर्णोद्धार हुए थे।।
तीस वर्ष के कालखण्ड में, कार्य पुनीत किये थे।।3।।
माता दृढ़ प्रतिज्ञ, शिव भक्तन,
करते शत-शत-शत अभिवादन...

औरों को विष ना मिले, अमृत बंटे सभी में।
यही सोचकर शंकर ने, विष धारा निज कंठ में।।
शिव भक्तन के भाग्य में, मिला वही बिषपान।
अमृत बांटा राज्य में, रखा प्रजा का ध्यान।।
उद्यम, शिक्षा, स्वास्थ के, कई उपाय किये थे।
नारी और परिवार को, शुभ संस्कार दिये थे।।
तीर्थाटन, पर्यावरण, अर्थार्जन हो साथ।
कृषि और साहित्य सृजन, सभी बटाएं हाथ ।।4।।
प्रजा हो दृढ़ प्रतिज्ञ, शिव भक्तन,
करते शत-शत-शत अभिवादन...

भारत के इतिहास का, गौरवमय अध्याय।
आतंकी साया में देता, सुख-शान्ति और न्याय।।
इस्लामिक आतंक का, शौर्य पूर्ण प्रतिकार।
सनातनी सुख-शांति का, राजकीय विस्तार।।
राजाश्रय उसको मिले, जिसमें सेवा भाव।
राज दण्ड के खौफ से, कम होते अपराध।।
पथ, उद्यान, कुएं निर्मित कर,
सुविधा की जन-जन की।
मानो अमृत बांटे शासन, जो थी इच्छा शिव की ।।5।।
अहिल्या दृढ़ प्रतिज्ञ, शिव भक्तन,
करते शत-शत-शत अभिवादन..

प्रकृति के सम्मान का उत्सव
गौ-संरक्षण एवं संवर्धन के लिए
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव
की अभिनव पहल
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
प्रदेशभर की गौ-शालाओं में गोवर्धन पर्व का सामुदायिक आयोजन
प्रगति और पर्यावरण के प्रति सजगता की मिसाल बनता मध्यप्रदेश
• प्रदेश में संचालित 1,500 से अधिक गौ-शालाओं में 3.30 लाख गौ-वंश का पालन। शीघ्र ही लगभग 2,500 नई गौ-शालाएं प्रारंभ होंगी जिनमें 4.50 लाख गौ-वंश का पालन हो सकेगा।
• गौ-वंश के बेहतर आहार हेतु प्रति गौ-वंश 20 रुपये की राशि बढ़ाकर 40 रुपये की जा रही है।
• दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के बीच एमओयू। आगामी 5 वर्ष में लगभग 12,000 दुग्ध समितियां 25 लाख लीटर दूध एकत्रित करेंगी।
• देश में सर्वाधिक 15 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में जैविक खेती करने वाले मध्यप्रदेश में गौ-वंश को प्रोत्साहन देने की पहल से जैविक खेती उत्पादन बढ़ेगा।
• दुग्ध उत्पादन और ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हर ब्लॉक में एक 'वृंदावन ग्राम' बनेगा।
• गौ-शालाओं का बजट 150 करोड़ से बढ़ाकर 250 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष एवं मुख्यमंत्री पशुपालन विकास योजना में 195 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।
• ग्वालियर स्थित आदर्श गौ-शाला में देश के पहले 100 टन क्षमता वाले CNG प्लांट की स्थापना।
मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी
आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2024

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

अब मिलेगी समय पर सहायता...

सड़क, औद्योगिक दुर्घटना और प्राकृतिक आपदा की स्थिति में **नि:शुल्क वायु परिवहन सेवा**

पीएमश्री एयर एम्बुलेंस सेवा

संचालन प्रारंभ

" हमारी सरकार प्रदेश की जनता को सर्वोत्तम स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराते हुए स्वस्थ मध्यप्रदेश के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए संकल्पित है। अब प्रदेश में गंभीर रोगियों को पीएमश्री एयर एम्बुलेंस सेवा के जरिए उचित समय पर बेहतर इलाज मिल सकेगा "

- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

योजना के बारे में अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : **9111777858**

सशुल्क एयर एम्बुलेंस सेवा भी उपलब्ध, सम्पर्क करें : **0755-4092530**

- आयुष्मान कार्ड धारक को प्रदेश व देश में कहीं भी इलाज हेतु शासकीय और आयुष्मान सम्बद्ध अस्पताल में नि:शुल्क सुविधा
- आयुष्मान कार्ड धारक न होने पर प्रदेश के शासकीय अस्पतालों में नि:शुल्क परिवहन सुविधा जबकि प्रदेश के बाहर निर्धारित शुल्क पर परिवहन सुविधा
- सड़कों या औद्योगिक स्थलों पर होने वाली दुर्घटना, हृदय रोगी या जहर से प्रभावित व्यक्ति को अब मिल सकेगा अच्छे चिकित्सा संस्थानों में समय पर इलाज
- अस्पताल द्वारा मरीज की स्थिति की गंभीरता की जांच के उपरांत मिल सकेगी एयर एम्बुलेंस की सुविधा

एयर एम्बुलेंस सेवा की अनुमति

- दुर्घटना प्रकरण में संभाग के अंदर जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी की अनुशंसा पर जिला कलेक्टर द्वारा
- दुर्घटना अथवा अन्य आपदा की स्थिति में संभाग के बाहर परिवहन हेतु स्वास्थ्य आयुक्त द्वारा
- दुर्घटना के अतिरिक्त अन्य गंभीर प्रकरणों में प्रदेश के अंदर संबंधित चिकित्सा महाविद्यालय के अधिष्ठाता की अनुशंसा पर संभागीय आयुक्त द्वारा
- प्रदेश के बाहर गंभीर रोगी या दुर्घटना पीड़ित आयुष्मान कार्डधारी होने पर संचालक चिकित्सा शिक्षा द्वारा
- सशुल्क परिवहन हेतु एन.एच.एम. कार्यालय स्तर पर अनुमति मिलेगी

- रोगी/पीड़ित को एयर एम्बुलेंस तक पहुंचाने के लिए संजीवनी 108 एम्बुलेंस होगी उपलब्ध
- एयर एम्बुलेंस सेवा में हृदय रोग, श्वास और तंत्रिका संबंधी बीमारियों, नवजात शिशुओं की स्वास्थ्य समस्याएं, उच्च जोखिम वाले गर्भधारण तथा आपदा की स्थिति को संभालने के लिये प्रशिक्षित चिकित्सक और पेरा मेडिकल स्टाफ रहेगा मौजूद
- हवाई परिवहन के दौरान रोगी/पीड़ित के लिए ₹ 50 लाख के दुर्घटना बीमा का प्रावधान

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

मध्यप्रदेश शासन

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2024

स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशनः संवाद, सामर्थ्य और समृद्धि की त्रिवेणी

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

युवाओं की मेधा, शक्ति को जाग्रत करने वाले स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था, **उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए** विवेकानंद जी युवाओं को आशा और उम्मीद से देखते थे और युवा पीढ़ी को परिवर्तन का अग्रदूत मानते थे। स्वामी जी के लिये राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी पुस्तक **संस्कृति के चार अध्याय** में लिखा कि अभिनव भारत को जो कुछ कहना था, वह विवेकानंद के मुख से उद्घोषित हुआ। अभिनव भारत को जिस दिशा में जाना था, उसका स्पष्ट संदेश विवेकानंद ने दिया। विवेकानंद वह सेतु हैं जिस पर प्राचीन और नवीन भारत परस्पर आलिंगन करते हैं। युवा शक्ति को राष्ट्र की मूलभूत चेतना और समाज निर्माण की ऊर्जा मानने वाले स्वामी विवेकानंद जी की जयंती **राष्ट्रीय युवा दिवस** पर उनके चरणों में शत-शत नमन।

हमारे मार्गदर्शक यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने युवा पीढ़ी की क्षमता को जाना, समझा और ज्ञान पर ध्यान का मार्गदर्शन दिया। इसमें **जी** से गरीब, **वाय** से युवा, **ए** से अन्नदाता और **एन** से नारी कल्याण की बात कही। उन्होंने युवाओं के लिये अनुशासन, शील, सकारात्मकता, कौशल क्षमता और प्रतिभा के विकास का आह्वान किया। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से हम मध्यप्रदेश में आज से **स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन** की शुरुआत कर रहे हैं।

हमने इस मिशन को **ज्ञान पर ध्यान** और मध्यप्रदेश की **युवा नीति-2023** को केन्द्र में रखकर आकार दिया है। इसका उद्देश्य युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य, रोज़गार के अवसर और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति जागरूक करना है। यह मिशन शहरी तथा ग्रामीण, पिछड़े और आर्थिक-सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग के युवाओं के कल्याण के लिये है। इसमें महिलाओं, दिव्यांग, युवाओं और किसानों को सशक्त बनाने का प्रयास है।

हमने युवाओं के विकास के लिये विभिन्न मोर्चो पर काम शुरू किया है। युवाओं के लिये विभिन्न विभागों में शासकीय नौकरी की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है। शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिये 55 पीएमश्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शुरू किये गये हैं। चिकित्सा शिक्षा के लिये आयुर्वेदिक, एलोपैथिक और होम्योपैथिक तीनों क्षेत्रों में कार्य किया जा रहा है। विगत वर्ष हमने तीन मेडिकल कॉलेज शुरू किये हैं। मुझे यह बताते हुए आनंद है कि पीपीपी मोड पर 2 साल में 25 नये मेडिकल कॉलेज आरंभ किये जायेंगे। औद्योगिकरण में रोज़गारपरक व्यवस्थाओं के लिये प्रदेश के विभिन्न अंचलों में आयोजित की जा रही रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव का बड़ा आधार युवा शक्ति है। रीवा, उज्जैन, सहित अन्य आईटी पार्कों के माध्यम से युवाओं को अपनी योग्यता और क्षमता के आधार पर प्रदेश में ही रोज़गार के अवसर उपलब्ध हुए हैं।

स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन में युवाओं के कौशल संवर्धन पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। कौशल विश्वविद्यालय की स्थापना से रोज़गार के लिए आवश्यक दक्षताओं का विकास किया जाएगा। पर्यटन, कृषि और सेवा क्षेत्रों में कौशल विकास के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम होंगे। इसके अलावा, युवाओं में उद्यमिता को प्रोत्साहित करने और स्थानीय स्तर पर रोज़गार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न योजनाएं लागू की जाएंगी। युवाओं को पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जागरूकता और राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों से उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के प्रयास किए जाएंगे।

युवा शक्ति मिशन **आत्म दीपो भवः** का घोष है। युवाओं के विकास और निर्माण के लिये जिन पक्षों को धरातल पर उतारने का प्रयास किया जा रहा है, वर्षों पूर्व स्वामी विवेकानंद जी ने युवाओं की इसी क्षमता और मेधा को लेकर आह्वान किया था **आत्म दीपो भवः** अर्थात् अपना दीप स्वयं बनो। स्वयं अपने मार्गदर्शक बनो। युवाओं की ऊर्जा के सकारात्मक भाव से ही राष्ट्र की सुरक्षा, समृद्धि के साथ विकास आकार ले सकता है। यह युवाओं की श्रम साधना और कौशल उन्नयन से संभव है।

प्रधानमंत्री जी ने युवा समूह के लिये समुचित

प्रोत्साहन की आवश्यकता बताई। यह सुखद संयोग है कि भारत में 15 से 29 वर्ष के युवाओं की संख्या 27.03 प्रतिशत है। यदि युवा सक्षम हैं, सामर्थ्यवान हैं, आत्मनिर्भर हैं तो पूरा समाज और देश उन्नत होगा। स्वामी विवेकानंद जी की इसी बात को ध्यान में रखकर **स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन** के तहत युवाओं में शिक्षा, कौशल विकास और सामुदायिक सेवा जैसे गुणों को विकसित किया जायेगा और उन्हें सक्षम बनाया जायेगा। इसमें युवाओं को नेतृत्ववान बनाने के लिये संसाधन और अवसर होंगे। युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और व्यावसायिक कौशल से प्रशिक्षित कर उन्हें रोज़गार के लिये सक्षम बनाया जायेगा।

मिशन के स्तंभ हैं- संवाद, सामर्थ्य और समृद्धि। संवाद से आत्मविश्वास और नेतृत्व की क्षमता विकसित होगी। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, क्षमता संवर्धन और कौशल विकास से सामर्थ्य विकसित होगा और सामर्थ्यवान युवा समृद्ध होगा।

हमारे लिये यह हर्ष की बात है कि इस मिशन से युवा, स्वामी विवेकानंद जी के आह्वान को सार्थक करने की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे। वे भगवान श्रीकृष्ण की तरह स्वयं दीप बनेंगे और समाज को भी अपनी ऊर्जा और क्षमता से उज्ज्वल करेंगे। स्वामी जी ने युवाओं के लिये कहा था कि **आप भारतीय संस्कृति की विराट विरासत और परंपरा के उत्तराधिकारी हैं।** हम विरासत से विकास की अवधारणा को लेकर मध्यप्रदेश के विकास और निर्माण पथ पर अग्रसर हैं।

मुझे विश्वास है कि यह मिशन युवाओं के सपनों को साकार करने और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में सफल होगा। प्राचीन, सुसंस्कृत और चिर युवा भारत की यह त्रिवेणी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित राष्ट्र निर्माण के संकल्प को साकार करने में सक्रिय भूमिका निभायेगी। युवा अपने सपनों को साकार करें, स्वयं आगे बढ़ें और समाज, देश तथा प्रदेश को आगे बढ़ायें।

मुझे संतोष है कि मध्यप्रदेश का युवा प्रदेश सरकार पर भरोसा करता है। इस मिशन से उनके जीवन में नया सूर्य उगे, उनका जीवन आलोकित हो और वे समाज के लिये रचनात्मक और सृजनात्मक कार्यों में सहभागी बनें।

युवाओं को जाग्रत करने और भारतीय आध्यात्म और संस्कृति को वैश्विक पटल पर स्थापित करने वाले स्वामी विवेकानंद जी को पुनश्च नमन।

जीवन की प्रथम पाठशाला : माँ

स्मृति आदित्य

माँ एक अनुभूति, एक विश्वास, एक रिश्ता नितांत अपना सा। गर्भ में अबोली नाजुक आहट से लेकर नवागत के गुलाबी अवतरण तक, मासूम किलकारियों से लेकर कड़वे निर्मम बोलों तक, आँगन की फुदकन से लेकर नीड़ से सरसराते हुए उड़ जाने तक, माँ मातृत्व की कितनी परिभाषाएँ रचती है। स्नेह, त्याग, उदारता और सहनशीलता के कितने प्रतिमान गढ़ती है? कौन देखता है? कौन गिनता है भला? और कैसे गिने? ऋण, आभार, कृतज्ञता जैसे शब्दों से परायों को नवाजा जाता है। माँ तो अपनी होती है, बहुत अपनी सी।

हम स्वयं जिसका अंश हैं, उसका ऋण कैसे चुकाएँ। ऋण चुकाने की कल्पना भी धृष्टता कही जाएगी। कितने और कैसे-कैसे अहसान हैं उसके हम पर। यदि अदायगी का मन बना लिया तो उलझ जाएँगे। भला कैसे अदा करेंगे उस ऋण को? जब आपको पृथ्वी पर लाने के लिए वह असीम अव्यक्त वेदना से छटपटा रही थी, उसका? या ऋण चुकाएंगे उन अमृत बूँदों का जिनसे आपकी कोमलता पोषित हुई? अनवरत भीगती नन्ही लंगोटियों का या बुरी नजरों से बचाती काजल टिकलियों का?

हाथों में स्वर्ण मोतियों के साथ गुँथे काले मोतियों वाले मनघटियों का या आरक्त नन्हे चरणों में रुनझुन बजती पैजनियों का? स्मृतियों के बहुत छोटे-छोटे किंतु बहुत सारे मखमली लम्हे उसकी मन-मंजूषा में सँजोकर रखे गए हैं। किसी अमूल्य धरोहर की भाँति, कैसे झाँकेंगे आप?

कितनी बार नन्ही लातें उस पर चलाई? कितनी बार आपने क्या-क्या तोड़ा, बिखेरा और उसने समेटा। कितनी मिन्नतों के बाद किसी चूजे की भाँति आप चार चावल दाने चुगते थे और आपकी भूख से वह अकुला उठती थी। क्या याद है आपको वह सुहानी संध्या जब दिया-बाती के समय मंत्र, श्लोक और स्तुतियों के माध्यम से आपकी सुकोमल हृदय धरा पर वह संस्कार और सभ्यता के बीज रोपा करती थी। नहीं भूले होंगे आप वे फरमाइशें और नखरे जिन्हें वह पलकों पर उठाया करती थी। दाल-चावल से लेकर मटर पुलाव तक, अजवाइन डली नमकीन पूरी से लेकर मेथी-पराठे तक, मलाईदार श्रीखंड से लेकर पूरनपोली तक और कुरकुरी भिंडी से लेकर भुट्टे के किस तक कितने प्यार में पके रसीले व्यंजन हैं जो माँ के सिवा किसी और की स्मृति दिला ही नहीं सकते। याद कीजिए अपने किसी साधारण से बुखार को। सिरहाने रखे

भिलामें, राई, दूध की ठंडी भीगी पट्टियाँ, तुलसी का काढ़ा, अमृतांजन, नारियल तेल में महकता कपूर और माँ की चिंतातुर उँगलियाँ। चुका सकेंगे इन महकते भावुक लम्हों का मोल? उम्र बीत जाने पर भी माँ के धीरज बँधाते बोल आप भुला नहीं सकते, **सो जा बेटा, बीमारी हाथी की चाल से आती है और चींटी की चाल से जाती है।** तपते तन-मन पर जैसे ठंडे

मुलायम फाहे रख दिए हों। आज भी उसकी डाँट आपको भीतर तक भिगो देती है। **मैं समझाती हूँ तो कहाँ समझ में आता है। देखा, हो गए न बीमार?** एक ऐसी डाँट जिसमें चिंता की कोंपलें सहज फूटती दिखाई पड़ जाती है, उसके छुपाते-छुपाते भी। प्रार्थना के फूल बुदबुदाते स्वरों में ही झर जाते हैं उसके संभालते-संभालते भी। प्यार की हरी पत्तियाँ झाँक ही लेती हैं दबाते-दबाते भी।

माँ को ईश्वर ने सृजनशक्ति देकर एक विलक्षण व्यवस्था का भागीदार बनाया है। एक अघोषित अव्यक्त व्यवस्था, किंतु उसका पालन हर माँ कर रही है। चाहे वह कपिला धेनु हो, नन्ही सी चिड़िया हो या वनराज सिंह की अर्धांगिनी। इस व्यवस्था को समझिए जरा। आपने कभी नहीं देखा होगा गाय का बछड़ा माँ को चाट रहा है। चिड़िया के बच्चे उसके लिए दाना ला रहे हैं और माँ की चोंच में डाल रहे हैं या शावक अपनी माँ के लिए शिकार ला रहे हैं।

प्रकृति ने ही माँ को पोषण देने का अधिकार दिया है। वही पोषण देती है और सही समय आने पर पोषण जुटाने का प्रशिक्षण भी। पोषण देने में वह जितनी कोमल है प्रशिक्षण देने में उतनी ही कठोर। माँ दोनों ही रूपों में पूजनीय है। इन दोनों ही रूपों में संतान का कल्याण निहित होता है।

उसको नहीं देखा हमने कभी... पर उसकी जरूरत क्या होगी, हे माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी... ईश्वर हर जगह नहीं पहुँच सकता, इसलिए उसने माँ बना दी। जो हर किसी की होती है, हर किसी के पास होती है। शारीरिक उपस्थिति माँ के लिए मायने नहीं रखती। वह होती है तो उसकी ईश्वरीय छाया सुख देती है जब **नहीं** होती है तब उसके आशीर्वादों का कवच हमें सुरक्षा प्रदान करता है। माँ हमेशा है और रहेगी उसके **होने** का ही महानतम अर्थ है, शेष सारे आलेख और उपन्यास, कहानी और कविता व्यर्थ है। क्योंकि माँ शब्दातीता है, वर्णनों से परे है। फिर भी उसे शब्दों में समेटने की, वर्णनों में बाँधने की चेष्टाएँ, नाकाम कोशिशें हुई हैं, होती रहेंगी।

कभी लगता है माँ एक अथाह नीला समुद्र है, जो समा लेता है सबको अपने आप में, अपने अस्तित्व में, अपने व्यक्तित्व में, फिर भी वह कभी नहीं उफनता। शांत, धीर, गंभीर उदात्त बना रहता है। हमारी संस्कृति में वसुंधरा को माता कहा गया है। वसुधा जो निरंतर देने और सिर्फ देने में विश्वास रखती है। लेती वही है जो अनुपयोगी है, व्यर्थ है। और देती है, जो उपयोगी है, कल्याणकारी है, जीवनदायी है।

माँ अपने दिन का आरंभ चाहे **ॐ अस्य श्री रामरक्षा स्तोत्र मंत्रस्य...** से करे, चाहे **वाहे गुरु दी कृपा....** से, चाहे **ला इल्लाह...** से या फिर **ओ गॉड...** से; हृदय के पवित्र पूजा-पात्र में सुकल्याण का एक ही शीतल जल थिरकता है- **मेरी संतान यशस्वी हो, चिरायु हो, संस्कारी हो, सफल हो और वैभवशाली हो। उसकी राहों में कोई अवरोध न हो। निष्कंटक, निर्मल उजली राहों में वह कभी रुके नहीं, थके नहीं, झुके नहीं और अवसरों को चूके नहीं।**

इस निश्छल प्रार्थना के साथ जुड़ी होती है माँ की परीक्षा।अपनी हृदय-बगिया के सुमन को आँखों से दूर करना होगा। इस जीवन में माँ ही है जिसे इस कठिन परीक्षा से गुजरना होता है और वह सफल भी होती है। भारतीय संस्कृति की पारंपरिक माँ बहुत भोली, बहुत भावुक होती है। औपचारिकताओं के प्रतिकूल परिवेश में उसकी सहजता कसमसाती है। सादगी, स्वाभाविकता और स्वतंत्रता उसके दमकते गुण रत्न हैं। वह बनावटी हो ही नहीं सकती। कल जिन्हें वह सिखाया-समझाया करती थी, वही आज उसे सिखाते-समझाते हैं, **क्या कहें, क्या ना कहें।** किंतु उसे कुछ याद नहीं रहता वह तो मौका मिलते ही प्रवाहित होने लगती है बातों के स्नेहिल झरने में।

कल जिसने हमें बोलना सिखाया, आज हम उसी को बोलने नहीं देते! क्यों? माँ पुरानी, उसकी बातें पुरानी, उसके मूल्य पुराने। हम बर्दाश्त नहीं कर पाते। हम नहीं जानते माँ की एक आँख पीठ पर होती है जिससे वह नए मूल्यों, नए प्रवाह, नए रुझानों और नए चोंचलों को देखती, परखती और निरखती है। उसमें से आपका हित-अनहित भी लगातार मथती है। माँ देहरी पर सजती कुंकुम रंगोली है, घर को आलोकित करता निष्कंप दीपक है, अंजुलि से **आदित्य** को चढ़ता आस्था का अर्घ्य है और चमकते चंद्रमा सा एक शीतल धैर्य है। वह जीवन की पाठशाला की गुरुजी ही नहीं बल्कि चॉक, कलम, पट्टी और तड़ातड़ पड़ती छड़ी भी वही है। उसकी अप्रतिम सुगंध हमारे रोम- रोम से प्रस्फुटित होती है लेकिन हमारी साँस-साँस की हर महक उसकी आत्मा से उठती है। पौराणिक काल की पार्वती से लेकर त्रेता युग की सीता तक, द्वापर युग की यशोदा, कुंती से लेकर राजा-महाराजा के युग की जीजामाता, पन्ना धाय, अहिल्याबाई तक और कस्तूरबा से लेकर मदर टेरेसा तक मातृत्व की अद्भुत परंपरा को जन्म देने वाली हर माँ को नमन।

क्योंकि **जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी**
अर्थात् माँ और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान हैं।
धरती पर उपस्थित साक्षात् चमत्कार है माँ। उसके प्रति व्यक्त सम्मान परिधि से परे है। अगाध, अटूट और अपार...
कभी आकाश है, कभी बादल है,
जीवन की प्रथम पाठशाला मेरी माँ का आंचल है...

माँ वंदनीय भारती

दीपशिखा रावल, नीमच

स्वतंत्र सिंधु सी मुखर, करूं मैं तेरी आरती
अजेय विश्व संपदा हैं, वंदनीय भारती
मां वंदनीय भारती, मां वंदनीय भारती

वेद की ऋचाओं में, पुराणों में, कथाओं में
उपनिषद का ज्ञान केंद्र शास्त्र में, प्रथाओं में
ये आर्यभूमि, आर्यावर्त, आर्य संस्कृति अखण्ड
ये देव भूमि दिव्य, दिनमान जिसका है प्रचण्ड
समृद्ध संस्कृति का, कालचक्र सूर्य सारथी
अजेय विश्व संपदा हैं वंदनीय भारती

अंश अंश गर्भ में शूर, वीर, धीर है
युगों युगों से आहुति भी दे रहा रुधिर है
विकट थी वेदनाएं किंतु शस्त्र एक शौर्य का
गुप्त, शुंग, भोज, पाल, तेज यहां मौर्य का
पृष्ठ भूतकाल के कृपाण से संवारती
अजेय विश्व संपदा हैं वंदनीय भारती

धधकती अग्निकुंड सी जली सदा धरा यहां
स्वतंत्रता, स्वच्छंदता का सोम है भरा यहां
अनेक शूल वक्ष पर , कुषाण, शक, यवन यहां
अनेक तुर्क भी झुके, मुगल हुए हवन यहां,
उतार कोटि शीश काली दुष्ट दैत्य मारती
अजेय विश्व संपदा हैं, वंदनीय भारती

ये रथ कभी रुका नहीं, ध्वज कभी झुका नहीं
अंधड़ों को चीरता, ये दीप भी बुझा नहीं
मनु, शिवा, प्रताप के हैं दुर्ग यहां साक्षी
भुजाओं में सदैव ही विराजती मीनाक्षी
विश्व रूप काल महाकाल बनकर तारती
अजेय विश्व संपदा हैं, वंदनीय भारती

नए नए समय की है नई नई चुनौतियां
नवीन कालखंड देता है नई विभूतियां
अंजुरी में ज्वार लो, चंद्रहास धार दो
शत्रुओं के वक्ष में सहस्त्र शर उतार दो
लिखने को नई कहानी, मातृभूमि पुकारती
अजेय विश्व संपदा हैं, वंदनीय भारती

माँ का आँचल

श्रीमती प्रेम मंगल, इन्दौर

ममता की महिमा का किन शब्दों से बखान करूँ,
ममता शब्द अथाह सागर कैसे माणिक मोती उकेरूं।

माँ का आंचल होता ममता का आँचल,
शीतलता देता ज्यूं रजनी का आँचल।

माँ देती बरगद सी छांव,
माँ संकट में तारने को बन जाती नाव।

माँ का आँचल कंटकों की चुभन है हर लेता,
यह पावन आँचल शोलों को शबनम बना देता।

माँ वसुन्धरा है, देती जो सबको आश्रय है,
माँ गंगा है, माँ यमुना है, माँ सरस्वती, माँ लक्ष्मी है।

हर मुश्किल में मुंह से निकलता शब्द माँ है,
अनुरागिनी, अमृतदायिनी केवल माँ है।

त्याग, प्रेम, सहनशीलता की प्रतिमूर्ति माँ है,
हर असंभव को संभव बनाने वाली माँ है।

माँ यशोदा, माँ जानकी, माँ दुर्गा, माँ जगदम्बे,
भिन्न-भिन्न रूप माँ तेरे, अमृत बरसाती माँ मेरी अम्बे।

माँ तेरे आंचल तले करुणा, ममता,
अनुराग की अमृत धार बहे,
तुझ बिन माँ सारा जग लगे सूना,
नयनों से निरन्तर जलधार बहे।

माँ तेरे आंचल तले, भगवान राम, कृष्ण भी पले,
हे माँ तुझ बिन धरा पर इक पग भी न चले।

ममता माँ की अतुलनीय, अलौकिक है,
सारे दुख-दर्द हरने वाली माँ की ममता है।

मोक्षदायिनीः माता क्षिप्रा

डॉ राजेश रावल 'सुशील'

नास्ति वत्स महीपृष्ठे क्षिप्राया सदृशी नदी।
यस्यास्तीरे क्षणान्मुक्तिः किं चिरात्सेवनेन वै।।

स्कन्दपुराण के अनुसार क्षिप्रा नदी में स्नान, उसका ध्यान एवं स्मरण मात्र से पुण्यफल प्राप्त होने का महत्व बतलाया गया है। कहा गया है कि इस पृथ्वी पर क्षिप्रा नदी के समान अन्य कोई दूसरी नदी नहीं है जिसके तट पर कुछ समय रहने से तथा स्मरण, स्नान, दान आदि करने से ही मुक्ति प्राप्त होती है। इसके साथ ही स्कन्द पुराण के अवन्ति महात्म्य में क्षिप्रा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा गया है कि **क्षिप्रा क्षिप्रेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतैरपि।**
मुच्यते सर्वपापभ्यः शिवलोकं स गच्छति।।

अर्थात किसी प्राणी द्वारा क्षिप्रा नदी के तट से सौ योजन अर्थात चार सौ कोस दूर होने पर भी यदि **क्षिप्रा** का स्मरण किया जाए तो भी उस प्राणी को उसके समस्त पापों से मुक्ति मिल जाती है। सरल-तरल एवं वलयाकार स्वरूप में सतत प्रवाहमयी, अमृतमयी, पुण्यमयी, मोक्षदायिनी नदी, भगवती माता क्षिप्रा का महत्व वेदों, पुराणों, कथाओं, लोककथाओं एवं किंवदंतियों में यत्र-तत्र-सर्वत्र व्याप्त है। उज्जयिनी तीर्थ क्षेत्र का महत्व मुख्य रूप से बाबा महाकालेश्वर, माँ हरसिद्धि एवं मोक्षदायिनी माता क्षिप्रा की दिव्यता की वजह से ही सभी तीर्थो से अधिक ऑका गया है। अवंतिका नगरी के लगभग सभी प्रमुख तीर्थ, मंदिर एवं आश्रम क्षिप्रा के तट पर ही स्थित हैं। उज्जयिनी के पूर्व भाग से प्रवेश करते हुए शिप्रा अपने वलयाकार स्वरूप में लगभग मध्य भाग से होकर गुजरती है और यही कारण है कि सभी अट्ठाईस नक्षत्रीय तीर्थो, 84 महादेव मंदिरों, नवग्रहों एवं महाकाल वन क्षेत्र को स्पर्श कर इनके महत्व को बढ़ाते हुई उज्जैन से गुजरती है। जहां क्षिप्रा के उत्तरवाहिनी होने पर अवंतिका पूर्वीतट पर बसी है, वहीं ओखलेश्वर से मंगलनाथ तक यह पूर्ववाहिनी है। अतः सिद्धनाथ क्षेत्र और त्रिवेणी संगम पर भी स्नान, ध्यान, दान, देव पूजन एवं पितृ तर्पण

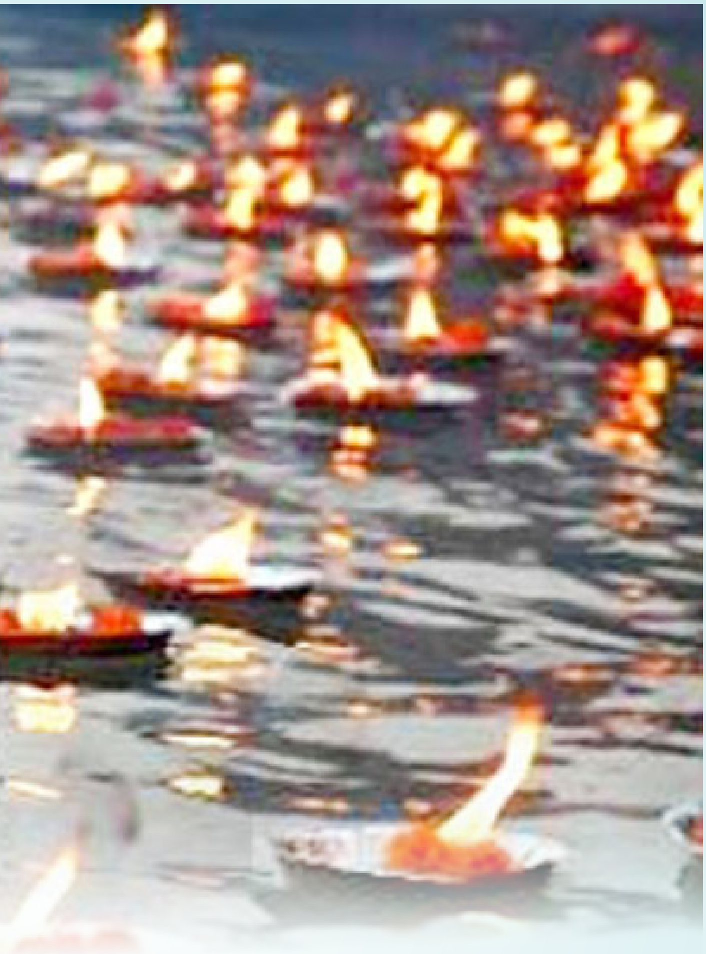

आदि करने का माहात्म्य है।

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती। नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

जल के बगैर जीवन का और जीवन के बगैर इस सृष्टि का कोई औचित्य नहीं है और यही कारण है कि जहां किसी भी पूजन में सर्वप्रथम वरुण देवता के आह्वान के लिए कलश पूजन किया जाता है। वहीं ऐसा ही एक मंगल कामना करने वाला श्लोक है जिसे मांगलिक कार्यों में मधुर कंठ से लयात्मकता के साथ गाया जाता है।

गंगा सिंधु सरस्वती च यमुना, गोदावरी नर्मदा। कावेरी सरयू महेंद्रतनया शर्मण्वती वेदिका।।क्षिप्रा वेत्रवती महासुर नदी, ख्याता गया गंडकी। पूर्णा पूर्ण जलैः समुद्र सरिता, कुर्यात् सदा मंगलम्।। 2।।

मांगलिक कलश में सभी देवताओं एवं समुद्रों के साथ-साथ सभी नदियों का आह्वान किया जाता है। किसी भी मांगलिक कार्य में एवं विवाह में मंगल कामना के लिए जो मंगलाष्टक पढ़े जाते हैं उसमें भी कहीं ना कहीं इन नदियों का नाम स्मरण किया जाता है, ताकि जीवन में निर्मलता, कर्म के प्रति निष्ठा एवं शाश्वत प्रवाहमानता बनी रहे। इन्हीं जल स्रोतों एवं नदियों के किनारे अनादि काल से विभिन्न संस्कृतियाँ पुष्पित पल्लवित होती रही हैं एवं आगे भी होती रहेंगी। मालवा की गंगा कही जाने वाली माँ क्षिप्रा की भौगोलिक स्थिति एवं उसके भौतिक स्वरूप का भी अपना एक शाश्वत व सनातन महत्व है। जिन सप्तसागरों, सप्तपुरियों एवं कुछ एक नदियों का वर्णन पुराणों में शाश्वत कहा गया है उनमें से एक नदी है, क्षिप्रा जो प्रलय के बाद भी वैसी की वैसी बनी रहती है।

इस नदी का उल्लेख अनेक पुराणों और प्राचीन साहित्य में मिलता है। महाकवि कालिदास ने अपनी काव्यकृति मेघदूत में इसका मनोहारी वर्णन किया है। द्वादश ज्योतिर्लिंगों में एक श्री महाकालेश्वर मंदिर और इक्यावन शक्तिपीठों में से एक शक्तिपीठ इसी नदी के तट पर उज्जैन में स्थित हैं। क्षिप्रा उत्तरवाहिनी नदी है, जिसका चम्बल नदी से संगम आलोट के समीप शिपावरा नामक स्थान पर होता है। सिंहस्थ-2016 के समय से क्षिप्रा अविरल बहती रहे इस उद्देश्य से इसमें नर्मदा का जल नर्मदा-क्षिप्रा लिंक प्रोजेक्ट के माध्यम से उज्जैनी में छोड़ा जा रहा है।

सन् 2011 में विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. श्री रामराजेश मिश्र जी ने क्षिप्रा पथ का सदाचार शीर्षक से तीन दिवसीय क्षिप्रा यात्रा का आयोजन किया। इस यात्रा का उद्देश्य क्षिप्रा के उद्भव, उसकी लौकिक पहचान एवं उसके उद्गम को लेकर लोक में व्याप्त जनश्रुतियों, लोक कथाओं एवं आख्यानों को एकत्रित करने के साथ-साथ क्षिप्रा के वास्तविक पथ को भी समाज के सामने लाने का प्रयास था। कुछ लोगों द्वारा किए गए क्षिप्रा पथ के अतिक्रमण को हटाने एवं पथ का गहरीकरण कर क्षिप्रा को पुनः प्रवाहमान बनाने के लिए आयोजित की गई इस यात्रा को मालवा के प्रसिद्ध लोक गायक एवं कवि श्री नरेन्द्रसिंह तोमर जी (पिवड़ाय) ने क्षिप्रा ध्वज लहरा कर ग्राम उज्जैन मूंडला स्थित, केवड़ेश्वर मंदिर से रवाना किया। इस यात्रा में मालवी कवि श्री मोहन धारिया के साथ मुझे भी क्षिप्रा परिक्रमा का सौभाग्य मिला। उस समय उस अष्टकमल दल रूपी पहाड़ी पर माँ क्षिप्रा का एक छोटा सा मंदिर था जो करीब 40-50 वर्ष पूर्व श्रद्धालु जनों द्वारा बनाया गया था। ठीक उसके सामने 2×2 का लगभग पांच फीट गहरा गड्ढा खुदा हुआ था जो शायद आज भी हो। इस गड्ढे में उतरकर जब धरती से कान लगाकर सुनते थे तो भीतर से पानी गिरने की आवाज सुनाई देती थी। कहने का तात्पर्य यह है कि माँ क्षिप्रा किसी पर्वत के गोमुख से नहीं बल्कि

माँ सीता की तरह धरा के गर्भ से प्रकट होकर धरती पर प्रवाहमान होती है। इसीलिए क्षिप्रा के स्वर में लोकजीवन का कल-कल गान सुनाई देता है। लोक में क्षिप्रा से जुड़ी कई किंवदंतियां, लोक कथाएं एवं पौराणिक आख्यान सुनाई देते हैं।

मालवा क्षेत्र में प्रचलित मान्यता अनुसार क्षिप्रा के उद्गम को दो प्रकार से देखा जाता है। प्रथम क्षिप्रा का उद्गम मध्य प्रदेश के इंदौर जिले की महू तहसील से बीस (20) किलोमीटर **उज्जैनी मुंडला** नामक गांव के समीप विंध्याचल पर्वत की परिपात्र उपत्यका करडी-बड़ली नामक एक पहाड़ी की तलहटी में विराजमान केवड़ेश्वर महादेव मंदिर के प्रांगण में स्थित कुण्ड से उद्धुत होती है। इन कुण्डों में रिसाव के माध्यम से एकत्रित जल एक छोटी जलधारा के रूप में प्रवाहमान होते हुए क्षिप्रा आगे बढ़ती है, जिसे क्षिप्रा का प्रारंभिक रूप कहा जा सकता है। द्वितीय स्थानीय रहवासियों एवं क्षिप्रा मंदिर के पुजारी के अनुसार इस मूंडला पहाड़ी से क्षिप्रा गुप्त रूप में प्रवाहित होकर इंदौर-नेमावर मार्ग के अरणिया ग्राम के अरणिया कुंड में लगभग बारह-पंद्रह किलोमीटर की दूरी पर जाकर प्रकट होती है। **इसके पीछे एक जनश्रुति है कि लगभग 600 वर्ष पूर्व मूंडला ग्राम के पटेल को मां क्षिप्रा ने स्वप्न में आकर कहा कि मैं पहाड़ी पर आ गई हूं एवं पूजन-अर्चन के माध्यम से प्रकट होना चाहती हूँ। पटेल ने अहंकार वश माता क्षिप्रा की स्वप्न वाणी की अवहेलना करते हुए अपने हाली (नौकर) को पूजन-अर्चन का दायित्व सौंप दिया।** कहते हैं हाली ने उस स्थान पर गड्ढे में पानी भरा हुआ पाया। उसने पूजन-अर्चन के बजाय उस जल में अपने गन्दे हाथ-पैर धो लिए जिससे माता क्षिप्रा नाराज हो गई। नाराज होकर माता क्षिप्रा ने हाली को विकलांग बना दिया और पटेल को श्राप दिया कि सात पीढ़ी तक तुम्हें इस स्थान से पांच-पांच कोस तक पानी नसीब नहीं होगा। आज भी उस पहाड़ी के आस-पास सात गांव ऐसे हैं, जो सरकारी दस्तावेज में तो हैं लेकिन मौके पर वहां सिर्फ खेड़ापति हनुमान मंदिर के अलावा कोई मकान दिखाई नहीं देता। यहां से क्षिप्रा नदी इंदौर, क्षिप्रा (गांव), देवास होते हुए अपने मूल स्थान से लगभग दो सौ किलोमीटर बहने के बाद मंदसौर के पास चंबल नदी में मिल जाती है। ख्याता नदी और गम्भीर नदी इसकी सहायक नदियां हैं। इस प्रकार क्षिप्रा माहात्म्य को बतलाने वाली अनेक कथाएं हैं।

यजुर्वेद में **क्षिप्रे अवेः पयः** पद के द्वारा इस नदी का स्मरण हुआ है। निरुक्त में क्षिप्रा कस्मात् ? इस प्रश्न को उपस्थित करके उत्तर दिया गया है कि-

शिवेन पातितं यद् रक्तं तत्प्रभवति, तस्मात्। अर्थात् क्षिप्रा क्यों कही जाती है? इसका उत्तर था- शिवजी के द्वारा जो रक्त गिराया वही यहाँ अपना प्रभाव दिखला रहा है- नदी के रूप में बह रहा है, अतः यह क्षिप्रा है। इसी संदर्भ में यह कथा आती है कि एक बार भगवान महाकालेश्वर ने भूख से व्याकुल ब्रह्मा के कपाल को लेकर भिक्षा मांगने के लिए सभी लोकों एवं दिशाओं का भ्रमण किया, किंतु भिक्षा न मिली। तब उन्होंने भगवान विष्णु से याचना की। विष्णु जी उन्हें अपनी तर्जनी अंगुली दिखला दी। शिवजी ने क्रोधित होकर अपना त्रिशूल विष्णु जी पर चला दिया जिससे उनकी तर्जनी अंगुली में चोट आ गई और रक्त-प्रवाह शुरू हुआ। उसके नीचे शिव ने अपना करपात्र **कपाल** रख दिया। कपाल भर जाने पर वह रक्त नीचे प्रवाहित हुआ और यही रक्त धारा वैकुंठ से प्रवाहित होकर **क्षिप्रा** कहलाई। इसीलिए संकल्प में भी यही कहा जाता है- **विष्णु देहात्समुत्पन्ने क्षिप्रे।**

माता क्षिप्रा से जुड़े कई दृष्टांत, कई कथाएं, कई लोकवार्ताएं, किंवदंतियां एवं लोकोक्तियां यत्र-तत्र बिखरी पड़ी हैं। इन कथाओं एवं वार्ताओं के माध्यम से उज्जैन की तरह क्षिप्रा के भी कई नाम उभर कर सामने आते हैं, उनमें से चार नामों का उल्लेख पुराणों में भी मिलता है। सनत्कुमार से अवंतिका माहात्म्य को सुनते हुए व्यास जी ने पूछा कि हे वेद ज्ञानियों में श्रेष्ठ! मैं परम पवित्र कल्मषनाशिनी क्षिप्रा का माहात्म्य तुमसे, फिर से सुनना चाहता हूं। तब सनत्कुमार ने कहा कि इस पृथ्वी पर क्षिप्रा के समान पुण्य दायिनी अन्य कोई नदी नहीं है। यह नदी वैकुंठ में क्षिप्रा जो कि शिव के त्रिशूल से विष्णु की तर्जनी ऊंगली से रक्त धारा बन प्रादुर्भूत हुई।

स्वर्ग में **ज्वरघ्नी** जो कि अनिरुद्ध से अपमानित होकर बाणासुर द्वारा अपनी सहस्त्र भुजाओं से कृष्ण पर शस्त्र चलाने लगा। तब कृष्ण ने अपने चक्र से उसकी सभी भुजाओं को काट डाला। अपने प्राण बचाने के लिए बाणासुर भगवान शिव के शरण में गया। बाणासुर को बचाने के लिए शिवजी ने कृष्ण पर पाशुपतास्त्र का संधान किया। पाशुपतास्त्र से बचने के लिए कृष्ण ने सम्मोहन अस्त्र का प्रयोग किया जिससे शिव थोड़े विचलित हुए और उन्होंने अपने शरीर से माहेश्वर ज्वर को प्रकट कर कृष्ण पर छोड़ दिया। तब कृष्ण ने वैष्णव ज्वर उत्पन्न किया जिससे व्याकुल होकर महेश्वर ज्वर तीनों लोकों में चक्कर लगाने लगा उसे कहीं भी शांति नहीं मिली, तब महाकाल वन में आया और क्षिप्रा की धारा में मग्न हो गया। महेश्वर ज्वर को शांत होते देखकर वैष्णव ज्वर ने भी क्षिप्रा में अवगाहन किया और क्षिप्रा के अद्भुत प्रभाव से दोनों ही ज्वर नष्ट हो गए।

यमद्वार में क्षिप्रा को **पापघ्नी** नाम दिया गया है

जिसकी कथा एक महापापी राजा दमनक से जुड़ी है। यह महापापी राजा एक दिन वन में शिकार के लिए गया। योग से इसकी सेना पीछे रह गई और यह थका-हारा एक वृक्ष की छाया में बैठा ही था कि एक सर्प ने इसे डस लिया, जिससे इसकी मृत्यु हो गई। उसके शरीर को मांसाहारी वन्य पशुओं में नोंच डाला। मांस के एक टुकड़े को देखकर कौवे ने उसे अपनी चोंच से उठाया और वहां से उड़ चला। इसकी चोंच में मांस को देखकर अन्य पक्षियों ने इस कौवे पर आक्रमण कर दिया और इसी छीना-झपटी में मांस का टुकड़ा क्षिप्रा में गिर गया, जिससे उस महा पापी को मोक्ष की प्राप्ति हो गई।

इसी प्रकार पाताल में क्षिप्रा नदी **अमृतसंभवा** नाम से विख्यात हुई। इस नाम की कथा नागलोक से जुड़ी हुई है। एक बार भूख से पीड़ित भगवान शंकर नाग लोक में भोगवती पुरी पहुंचे और घर-घर भिक्षा की रट लगाई किंतु उन्हें कहीं से भी भिक्षा प्राप्त नहीं हुई। इससे क्रोधित होकर भगवान शंकर ने नाग लोक में स्थित अमृत कुंड से सारा अमृत पी लिया। जब सभी कुंड रिक्त हो गए तब नाग लोक में हाहाकार मच गया और वे सभी नाग भगवान विष्णु की आराधना करने लगे। तब आकाशवाणी हुई जिसमें कहा गया कि, **आपने भगवान शिव का अपमान किया है अतः महाकाल वन में स्थित पुण्यप्रदा नदी क्षिप्रा में स्नान करने से तुम्हें इस कष्ट से मुक्ति मिलेगी।** तब सभी नागों ने क्षिप्रा में स्नान किया और उनके स्नान करने से नागलोक के सभी रिक्त अमृत कुंड फिर से भर गए। तब से इसका नाम **अमृतसंभवा** पड़ा। इन चारों नामों के संबंध में स्कंद पुराण के अवंती खंड के 69वें अध्याय से लेकर अन्य तीन अध्यायों में विस्तार से कथा कही गई है। इन कथाओं का आलेख की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए उल्लेख करना उचित नहीं होगा।

इसी प्रकार क्षिप्रा नदी के बारे में **कालिका पुराण** के अनुसार यह है कि जिस समय मेधातिथि ऋषि ने अपनी कन्या अरुंधति का दान, महर्षि वशिष्ठ को दिया, उस कन्यादान के संकल्प का जल हिमालय के क्षिप्रा सर (सरोवर) का था। उस संकल्प जल के नीचे गिर जाने से यह नदी **क्षिप्रा** हुई। मेघदूत में कालिदास ने भी क्षिप्रा वातः प्रियतम इव प्रार्थना चाटुकर! क्षिप्रा लिखा है। क्षिप्रा का अर्थ होता है, तुरंत या कहें कि शीघ्र। इसके बारे में भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है -

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा साधुरेव च मन्यते। कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।।

अर्थात् इसमें स्नान करने से तथा वहीं पर स्थित महाकालेश्वर के दर्शन करने से, मनुष्य तुरंत ही धर्मात्मा बन जाता है। शुक्ल यजुर्वेद के एक मंत्र में- **क्षिप्रेः अवे पयः** इस शब्द का प्रयोग हुआ है । शिप्रा और क्षिप्रा ये दोनों नाम कई ग्रन्थों में प्रयुक्त हुए हैं। इनकी व्युत्पत्तियाँ भी क्रमशः इस प्रकार प्रस्तुत हुई हैं- शिवं प्राप्यतीति शिप्रा और सिद्धिं पूर्यतीति क्षिप्रा। और कोशकारों ने क्षिप्रा का अर्थ **करधनी** भी किया। तदनुसार यह नदी उज्जयिनी के तीन ओर से बहने के कारण करधनीरुप मानकर भी **सिप्रा** नाम से मण्डित हुई। इन दोनों नामों के साथ इसे क्षिप्रा भी कहा जाता है। यह इसके जल-प्रवाह की द्रुतगति से सम्बद्ध का प्रतीत होता है। वहीं अन्य प्रसंग से क्षिप्रा को गंगा भी कहा गया है। पंचगंगाओं में एक गंगा क्षिप्रा भी मान्य हुई है। अवन्तिका को विष्णु का पद-कमल कहा है और गंगा विष्णुपदी है, इसलिये भी क्षिप्रा को गंगा कहना नितान्त उचित है। क्षिप्रा का अतिपुण्यमय क्षेत्र भी पुराणों में दिखाया है

मार्कंडेय पुराण, स्कंद पुराण के साथ-साथ यजुर्वेद में भी शिप्रा का उल्लेख मिलता है । यजुर्वेद में शिप्रा-अवे श-पत्र कहते हुए वैदिक ऋषियों ने शिप्रा का स्मरण किया है। इसका उल्लेख महाभारत, श्रीमद्भागवत पुराण, ब्रह्मपुराण, अग्नि पुराण, शिव पुराण, लिंग पुराण तथा वामन पुराण में भी मिलता है। शिप्रा की महिमा का संस्कृत साहित्य में खूब उल्लेख हुआ है । महर्षि वशिष्ठ ने शिप्रा स्नान को मोक्षदायक मानते हुए शिप्रा और महाकाल की वंदना इन शब्दों में की है

महाकाल श्री क्षिप्रा गतिश्चैव सुनिर्मला। उज्जयिन्यां विशालाक्षी वास-कस्य न रोचते। स्नानं कृत्वा नरो यस्तु महान् धामहि दुर्लभम्। महाकालं नमस्कृत्यं नरो मृत्युं न शोचते।।

एक किवदंती के अनुसार अवंतिका में महर्षि अत्रि ने 3000 साल तक कठोर तपस्या की। इस दौरान उन्होंने अपने हाथों को ऊपर ही उठाए रखा और अपनी तपस्या पूर्ण की। तपस्या पूर्ण होने के बाद जब अपनी आंखें खोली तो देखा कि उनके शरीर से दो प्रकाश पुंज प्रवाहित हो रहे हैं, पहला आकाश की ओर गया और चंद्रमा बन गया और दूसरे ने जमीन पर शिप्रा नदी का रूप धारण किया। चंद्रमा (सोम) को सोमतीर्थ में प्रवाहमान इसी शिप्रा नदी में स्नान करने एवं तट पर स्थित सोमेश्वर महादेव की पूजा, अर्चना एवं अभिषेक से अपने कलंक से मुक्ति मिली। इसलिए शिप्रा को सोमवती के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार वैदिक ऋषि-मुनियों द्वारा नदियों की वंदना में कई ऋचाएं लिखी गई। पौराणिक इतिहास इन नदियों के तट पर ही रचे गए। इनके तट पर ही हमारी संस्कृति, संस्कार, परंपरा तथा मानव सभ्यता के विकास की कहानियां लिखी गई। शिप्रा के तट भी इन गाथाओं से अछूते नहीं है बल्कि इनके तट भी सनातन से मानव जीवन की गाथा के पर्याय रहे हैं ।

DEVI AHILYA VISHWAVIDYALAYA, INDORE

(NAAC Accredited "A+" Grade)

Admission Notice - 2025

Courses after 10+2

Five Years Integrated Programmes: EMRC: M.Sc. (Electronic Media) 5 Yrs. **IMS:** MBA (Hospital Administration) 5 Yrs. / MBA (E-Commerce) 5 Yrs. **IIPS:** M.Tech. (IT) 5 Yrs. / Master of Computer Application (MCA) 5 Yrs. / MBA (Management Science) 5 Yrs. **SATHM:** MBA (Tourism) 5 Yrs. **SoC:** MBA (Foreign Trade) 5 Yrs. **SCSIT:** M.Sc. (Integrated) Cyber Security 5 Years **SDSF:** M.Tech. (AI and Data Science) 5 Yrs. **SoEx:** M.Tech. (Electronics – Spl: Embedded Systems) 5 Yrs. **SoEE:** M.Tech. (Energy and Environmental Engineering) 5 Yrs. **SoI**: M.Tech. (Internet of Things) 5 Yrs. **SoL:** B.A.LL.B. (Hons.) 5 Yrs.

Undergraduate Programmes: DDUKK: B. Voc. (Software Development) / B. Voc. (Nutrition & Dietetics) / B. Voc. (Landscape Design) / B. Voc. (Interior Design) **DoLL:** B. Voc. (Fashion Technology) / B. Voc. (Khadi & Handloom) **IET:** B.E. (Mechanical Engineering) / B.E. (Computer Engineering) / B.E. (Electronics & Instrumentation Engineering) / B.E. (Information Technology) / B.E. (Electronics & Telecommunication Engineering) / B.E. (Civil Engineering) / B. Tech. (Computer Science and Business Systems) **IIPS:** B.Com. (Hons.) **SATHM:** B.Com. (Logistic) / B.Com. (Retail Operations) / BBA (Aviation Management) **SoC:** B.Com. **SCSIT:** BCA **SoE:** B.A. (Hons.)-Economics **SoEx:** B.Sc. (Electronics / Computer Science / Mathematics) SJMC: B.A. (Journalism and Mass Communication) **SoLibSc:** B. Library and Information Science (BLIS) **SoLiSc**: B. Sc. Agriculture (Hons.) **SoM:** B.Sc. (Hons.)-Mathematics **SoPharm:** B. Pharm. **SoPhEdu:** Bachelor of Physical Education and Sports (BPES) **SoPhy:** B.Sc. (Hons.)-Physics **SoSS:** BSW / BA (Sociology) / BA (Psychology) / BA (Geography) **SoST:** B.Sc. (Hons.)-Applied Statistics and Analytics **SoY:** BA (Yogic Science) / B.Sc. (Yogic Science)

Diploma / Certificate Courses: DDUKK: Online Diploma (Fitness Nutrition) / Diploma [Logistics & Supply (Cargo Management) / Diploma (Imports and Exports) / Diploma (Digital Marketing) **DoLL:** Diploma (Interior Design) **SJMC:** Diploma (Script Writing) / Diploma (Photography) / Certificate Course (Film Appreciation) / Certificate Course in Agriculture Communication / Certificate Course in Sports Journalism / Certificate Course in Digital Media / Certificate in Event Management **SoLang:** Certificate Course (French / German) **SoPharm:** Diploma in Pharmacy (D. Pharm.) **SiSP:** Certificate (Sindhi Language) / Diploma (Sindhi Language & Literature)

Courses After Graduation

Postgraduate Programmes: CEL: M.Sc. (Data Science for Logistics) / M.Tech. (Logistics and Supply Chain Management) **DDE:** MBA (Open and Distance Learning Mode) / MCA (Open and Distance Learning Mode) **DDUKK:** M. Voc. (Nutrition & Dietetics) / M. Voc. (Interior Design) **DoLL:** MA (Women Empowerment & Lifelong Learning) / M. Voc. (Fashion Technology) **EMRC:** MBA (Media Management) **IET:** M.Sc. (Applied Mathematics with Specialization in Computing & Informatics) / M.E. (Computer Engineering with Specialization in Software Engineering) / M.E. (Electronics with Specialization in Digital Communication) / M.E. (Electronics with Specialization in Digital Communication) / M.E. (Industrial Engineering & Management) / M.E. (Mechanical Engineering with Specialization in Design & Thermal Engineering) / M.E. (Information Security with Specialization in Information Security) **IIPS:** MBA (Advertising and Public Relations) / MBA (Entrepreneurship) / MBA (Management Science) **IMS:** MBA (E-Commerce) / MBA (Financial Administration) / MBA (Human Resource) / MBA (Marketing Management) / MBA (Hospital Administration) / MBA (Public Health) / MBA (Full Time) / MBA (Executive) **SATHM:** MBA (Tourism) **SCSIT:** MBA (Computer Management) / M.Sc. (Computer Science) / M.Sc. (Information Technology) / M.Tech. (Computer Science) / M.Tech. (Network Management & Information Security) / M.Tech. (Information Architecture & Software Engineering) / M.Tech. (Executive) Computer Science **SDSF:** MBA (Business Analytics) / M.Sc. (Data Science) / M.Tech. (Data Science) / M.Tech. (Big Data Analytics) / M.Tech. (Executive) (Data Science) **SiSP:** MA (Sindhi) **SJMC:** MA (Journalism and Mass Communication) / MA (Film Studies) / Bachelor of Journalism **SoBiChe:** M.Sc. (Biochemistry) **SoBioTech:** M.Sc. (Biotechnology) / M.Sc. (Genetic Engineering) / M.Sc. (Bioinformatics) **SoC:** MBA (Foreign Trade) / M.Com. (Accounting & Financial Control) / M. Com. (Bank Management) **SoChem:** M.Sc. (Chemistry) **SoE:** MBA (Business Economics) / MBA (Financial Services) / MBA (International Business) / MA (Economics) **SoEdu:** B.Ed. / M.Ed. **SoEE:** M.Sc. (Energy & Environment) / M.Tech. (Energy Management) / M.Tech. (Executive) Energy Management **SoEx:** M.Sc. (Electronics and Communication) / M.Tech. (Embedded Systems) **SoI:** M.Tech. (Instrumentation) / M.Tech. [Internet of Things (IoT)] **SoL:** LLM (Business Law) / **SoLang:** MA (Functional Hindi Translation and Literature) / MA (Sanskrit –Jyotish) / MA (English Literature) **SoLibSc:** M. Library and Information Science (MLIS) **SoLiSc:** M.Sc. (Life Science) / M.Sc. (Industrial Microbiology) **SoM:** M.Sc. (Mathematics) **SoPharm:** M. Pharm. (Pharmaceutical Chemistry) **SoPhEdu:** MA (Sports Psychology) / M. P. Ed. **SoPhy:** M.Sc. (Physics) / M.Sc. (Physics – Material Science) / M.Tech. (Laser Science & Applications) **SoSS:** MA (Political Science) / MA (Sociology) / MA (Clinical Psychology) / MA (Geography) / MA (History) / MSW **SoST:** M.Sc. (Statistics) **SoY:** MA (Yoga) TSDC: MA (Tribal Studies)

Diploma and Certificate Courses: BCSD: Certificate Course (Knowledge Participation and Development) / Certificate Course (Environmental Ethics) **SCSIT:** PGDCA **SoEE:** P.G. Diploma in Climate Action and Sustainability **SoSS:** Diploma in Consumer Psychology & Advertising / P. G. Diploma in Guidance and Counselling / P. G. Diploma in Labour Law and Personnel Management / P. G. Diploma in Human Rights **SoY:** P. G. Diploma in Yoga Therapy

For more details of University Teaching Departments (UTDs), Admission Process, Application Fee, Programme Details, Seats, Eligibility, Duration of Programme, Programme Fee etc., Visit University Web Site www.dauniv.ac.in.

Registrar, DAVV

स्वच्छ इंदौर, स्वस्थ इंदौर
स्वच्छ सर्वेक्षण 2024
इंदौर 8
एक दौर
स्वच्छता में सिरमौर
नवाचार और अधोसंरचनागत विकास को समर्पित वर्ष
स्वच्छता में सातवाँ सिरमौर
अत्याधुनिक परिषद भवन का लोकार्पण
लोहे के अपशिष्ट सामग्री से राम मंदिर की अद्वितीय प्रतिकृति
CLD आवास योजना ऑनलाइन शुरू
51 लाख पौधारोपण अभियान
22 मास्टर प्लान सड़कों को स्वीकृति
ब्रिक्स सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व
इंदौर में डबल डेकर बस सुविधा की शुरुआत
NRI फोरम, इंदौर का आयोजन
व्हाइट टॉपिंग सड़क निर्माण
इंदौर क्लाइमेट चेंज मिशन की शुरुआत
नगर निगम का डिजिटलीकरण अभियान
वर्ल्ड नो कार डे मनाया गया
स्वच्छ वायु सर्वेक्षण में इंदौर नं. 1
अंतरराष्ट्रीय स्तर की पारंपरिक कुश्ती प्रतियोगिताएँ आयोजित
नेहरू स्टेडियम पूर्णविकास की शुरुआत
CCTV सर्विलांस पॉलिसी लागू
'वंदे जलम्' अभियान
ट्रैफिक मित्र अभियान
स्ट्रीट लाइट डिजिटलीकरण
गौशाला का नवनिर्माण
ई-पोर्टल लॉन्च
अटल रेडियो की शुरुआत
संजिवनी क्लिनिक का लोकार्पण
श्री मुन्नालाल यादव, सभापति
-: महापौर परिषद सदस्य :-
श्री राजेन्द्र राठौर, श्री अश्विनी शुक्ल, श्री निरंजनसिंह चौहान (गुड्डू),
श्री राजेश उदावत, श्री अभिषेक शर्मा (बबलू), श्री नंदकिशोर पहाड़िया,
श्रीमती प्रिया डांगी, श्री मनीष शर्मा (मामा),
श्री राकेश जैन
नगर पालिक निगम, इंदौर
पुष्यमित्र भार्गव, महापौर, इंदौर

भारत माता : राष्ट्र को माँ की उपमा

डॉ. भारती जोशी

देश भौगोलिक सीमाओं से बनता है, नदी, पहाड़ों-पर्वत श्रृंखला, वनों और धरा के विस्तार से बनता है लेकिन राष्ट्र उस धरा और सीमाओं पर रहने वाले लोगों के चरित्र से बनता है। लोग जो प्रतिदिन साथ रहने के सौजन्य और संकल्प के साथ आगे बढ़ते हैं एक दूजे को स्वीकार करते हैं उस भाव से राष्ट्र बनता है... **हम सौभाग्यशाली हैं कि उस राष्ट्र के नागरिक हैं जहाँ धरती भी माता है, नदी भी माता है, प्रकृति भी माता है, उषा भी माता है, पोषण देने वाली देवी भी माता है और संहार करने वाली देवी भी हमारी माता है और सबसे अहम हमारा देश जिस नाम से सुशोभित होता है वह भी हमारी माता है- भारत माता.... भारत माता तेरा आँचल हरा-भरा धान-धानी... मीठा-मीठा चमचम करता तेरी नदियों का पानी... अपने देश को माता मानने की संकल्पना कितनी सुंदर और मनभावन है...**अपने राष्ट्र को माँ की उपमा देकर हमने अपना परिचय खुद ही दे दिया कि हम कौन हैं। हम संतान हैं इस जन्मभूमि की, इस कर्मभूमि की... माँ इस नन्हे शब्द में ही समूची सृष्टि समाई है और जब हम राष्ट्र को माँ निरुपित करते हैं तो हमारी दृष्टि ही बदल जाती है।

कैसी है भारत माता?

क्या आप जानते हैं कि भारत को भारतम्बा क्यों कहा जाता है? असल में देश को मातृदेवी के रूप में चित्रित करके भारत माता या भारतम्बा कहने का प्रचलन है। भारतमाता को हल्के सिंदूरी रंग की साड़ी के साथ हाथ में तिरंगा ध्वज लिए हुए चित्रित किया जाता है, साथ में सौम्य रूप में सशक्त सिंह होता है। वे किसी देवी के समान ही अलंकारों से सुशोभित हैं... उनकी आंखों में ममता का लावण्य है। वे विशाल पृथ्वी के भारत के भौगोलिक हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हुए आकर्षक मुस्कान सजाए दाहिने हाथ से आशीष देती दिखाई देती हैं... उन्हें देखकर ही सबसे पहला देवी या स्त्री का नहीं अपितु माँ का विचार आता है।

भारत माता मन्दिर

भारत में भारतमाता के बहुत से मन्दिर हैं। काशी का भारत माता मन्दिर अत्यंत प्रसिद्ध है। इस मंदिर का उद्घाटन सन् 1936 में स्वयं महात्मा गांधी ने किया था। हरिद्वार का भारतमाता मन्दिर भी बहुत प्रसिद्ध है। अब हर शहर में एक मंदिर भारत माता का मिल ही जाता है।

❖ **सन् 1905 में अवनीन्द्र नाथ ठाकुर ने भारत माता को चारभुजाधारी देवी के रूप में चित्रित किया जो केसरिया वस्त्र धारण किये हैं; हाथ में पुस्तक, माला, श्वेत वस्त्र तथा धान की बाली लिए हैं।**

❖ सन् 1936 में बनारस में शिव प्रसाद गुप्त ने भारत माता का मन्दिर निर्मित कराया। इसका उद्घाटन गांधीजी ने किया।

❖ सन् 1883 में हरिद्वार में विश्व हिन्दू परिषद् ने भारत माता का एक मन्दिर बनवाया।

❖ जनवरी 2018 में उज्जैन में भारतमाता का मंदिर उद्घाटित हुआ। यह मंदिर, प्रसिद्ध महाकाल मंदिर के पास ही स्थित है।

वेदों से लेकर इतिहास तक भारत माता

❖ **माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः** भूमि माता है, मैं पृथ्वी का

पुत्र हूँ। वेदों का यह उद्घोष बताता है कि भूमि पर जहाँ हम रहते हैं उसे माता समझा जाना चाहिए।

❖ वाल्मीकि रामायण में कहा गया है कि **जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी** (जननी और जन्मभूमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊपर है।)

❖ कहा जाता है कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दिनों में भारत माता की परिकल्पना की गई।

❖ सन् 1873 में किरन चन्द्र बन्दोपाध्याय का नाटक **भारत माता** सबसे पहले खेला गया था।

❖ **सन् 1882 में बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपने उपन्यास आनन्दमठ में वन्दे मातरम् गीत सम्मिलित किया जो शीघ्र ही स्वतंत्रता आन्दोलन का मंत्र बन गया।**

यानी भारत को **माता** कहकर संबोधित करने का श्रेय बाँग्ला लेखक किरण चंद्र बनर्जी को ही जाता है। 1873 में इनके नाटक **भारत-माता** में भारत के लिए **माता** शब्द का प्रयोग किया गया था। आज़ादी से पहले बंगाल में दुर्गा पूजा लोगों को एकजुट करने और स्वराज (आजादी) पर चर्चा करने का एक माध्यम बनी हुई थी। वर्तमान समय का पहला लिखित साक्ष्य 19वीं सदी के प्रसिद्ध साहित्यकार भूदेव मुखोपाध्याय के लिखे व्यंग्य **उनाबिम्सा पुराण** (nabimsa Purana) **उन्नीसवें पुराण** 'The Nineteenth Purana' में मिलता है। लेख का प्रकाशन सन् 1866 में किया गया था। इस लेख में **भारत-माता** के लिए **आदि-भारती** शब्द का इस्तेमाल किया गया था। कालांतर में भारत माता के श्लोक-मंत्र-स्तुति-आरती सब आती गई और हर किसी ने अपनी प्रतिभा के अनुसार भारत माता की महिमा में शब्दांजलि दी। अंग्रेजी का मदरलैंड हम चाहे स्वीकार न करें पर अपनी जन्मभूमि के लिए भारत माता संबोधन को हम दिल की गहराइयों से स्वीकार करते हैं...

किसी कवि के शब्दों में-

दो शब्दों की दिव्य चेतना, राष्ट्रभाव संचारती।
वन्दे मातरम् गाकर कर लो, भारत माँ की आरती॥
भागीरथ बंकिम लाए थे, भू पर ये गंगाधारा।
आजादी के दीवानों का, तेज भरा था ये नारा॥
सिद्ध किया इस महामंत्र को, अरबिन्दो से योगी ने
हर इक कष्ट सहे वीरों ने, किन्तु मंत्र ये उच्चारा॥
अद्भुत गरिमा महामंत्र की, दास्यवृत्ति से तारती।
वन्दे मातरम् गाकर कर लो, भारत माँ की आरती॥

माँ गंगा

प्रियंका राय ॐनंदिनी,लखनऊ

खाते जिसकी हैं कसम यहाँ पीते जिसका हम पानी हैं
नदियां तो पूजित सब जग में पर माँ गंगा महारानी हैं

पावन परिधान हैं माँ गंगा
हर विधि विधान हैं माँ गंगा
पतितों को पार लगाती हैं
करुणानिधान हैं माँ गंगा
धरती को लगाकर सीने से चुनर कर देती धानी हैं
नदियां तो पूजित सब जग में.....

भू क्षितिज व्योम में माँ गंगा
हर हरि ओम में में माँ गंगा
जीवन में रची बसी ऐसे
हैं रोम रोम में माँ गंगा
तप तेज त्याग,भगीरथ प्रयास अवनि की अमर निशानी हैं
नदियां तो पूजित सब जग में.....

संस्कृति सभ्यता में गंगा
भावों की भव्यता में गंगा
लहरों के स्पंदन में हैं
दीपों की दिव्यता में गंगा
देने का भाव सदा जिसमें वो हरिश्चंद्र सी दानी हैं
नदियां तो पूजित सब जग में.....

शिवजी की जटाओं में गंगा
अम्बर की घटाओं में गंगा
संवाहक परम्पराओं की
शहरों में गाँवों में गंगा
सच्चे मन से जो भी मांगा हर बात हमारी मानी हैं
नदियां तो पूजित सब जग में....

ईश्वर स्वरूपा माँ

डॉ. शोभा ओम प्रजापति

वर्तमान समय सब पर पड़ सकता है भारी
यदि नारी का सम्मान ही न समझेगी नारी

हमने सुना नारी में बसती है भगवान् की सभी विभूति
गीता वेदोपनिषदों में नारी के गीत गाती रही है श्रुति

रामराज्य की नारी सीता
परम पवित्र आदर्श पुनीता
पुत्री पुत्रवधू व पत्नी रूप में
उनका वचन गया न रीता

कर तप साधन शबरी ने स्वजन्म सुधारा
राम नाम से उसका मन रोमांचित सारा

अति सरला सती अनुसूया नारी
भक्तिपरा थी वह पति की प्यारी
वेद-गीत उनके साथ वह गाती
सूक्त-स्तोत्र से सब ईश रिझाती

धर्म-शास्त्रों में भगवान् की भी है माता
भगिनी-बंधु वह सब की है जन्मदाता
नारी से शासित है यह जगत् सारा
वही है सबका ईश - पिता और माता

राम-कृष्ण-शिव-विष्णु ईश्वर रूप ये सारे
बिन शक्ति के जग में सब अधूरे हो जाते

हे माँ ! हे जगदंबिके ! अब तुम ही हो परोपकारी
आओ निज-स्वरूप में मानव मन की पुकार हुई भारी ।

बालपन में दिखेगी तुम्हें नर्मदा

शिवांगी शर्मा 'प्रेरणा'

बालपन में दिखेगी तुम्हें नर्मदा
आके मैकाल पर्वत जरा देखिये
स्वेद से शिव के जन्मी है रेवा यहाँ
देवभूमि ये अनुपम धरा देखिये।

मुस्कुराती हुई एक नवजात-सी
बह रही है मगन होके पितु प्यार में
जैसे घुटनों के बल कोई बालक चले
वैसे बहती दिखेगी कपिलधार में

उर्मियों की खनक से खनकते हुए
नर्मदा के करों को भरा देखिये।

दूधिया धार ले दुग्दधारा पे माँ
यूँ लगे थोड़ी-थोड़ी बड़ी हो गयी
हो मगन बह चली धार संगीत में
अपनी धुन में वो जैसे स्वयं खो गयी

सप्तगंगा के कारण ठसक से भरा
इस धरा का भी आँचल हरा देखिये।

अब चलो ले चलूँ सहस्त्रधारा तुम्हें
श्वेतवर्णा मिलेगी यहाँ नर्मदा
पारिजातों-सी धवला हरिक बूँद है
पुष्प बगिया है मैकलसुता सर्वदा

मन का कलरव सुनाई पड़ेगा तुम्हें
माँ के चरणों में ही आसरा देखिए।

जाके नजदीक मैने छुए जब चरण
नर्मदा मन में प्रतिबिंब-सी छा गयी
इसकी साँसों में थी गहरी गम्भीरता
आचमन जो किया गीत बन आ गयी

अपने जीवन में विघ्नों से लड़ती हुई
कैसे बहती रही निर्झरा देखिये।

भारत की महान माताएं

अर्चना मंडलोई

भारत के इतिहास में माताओं का स्थान न केवल एक परिवार की संरक्षक के रूप में है, बल्कि उन्होंने समाज, संस्कृति और राष्ट्र के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये माताएं न केवल अपनी संतानों को उच्च संस्कार देने के लिए जानी जाती हैं, बल्कि उनके योगदान ने भारतीय इतिहास को गौरवशाली बनाया है। उनके द्वारा दिए गए आदर्श संस्कार और मार्गदर्शन ने उनकी संतानों को महानायक बनाया, जो आज भी दुनिया के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

माता जीजाबाई जो कि छत्रपति शिवाजी की माता थीं, भारतीय इतिहास की सबसे प्रेरणादायक माताओं में से एक हैं। वे मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज की माता थीं।

जीजाबाई ने शिवाजी को धर्म, न्याय और राष्ट्रभक्ति का पाठ पढ़ाया। उन्होंने शिवाजी को रामायण और महाभारत की कहानियों के माध्यम से आदर्श नेतृत्व, कर्तव्यनिष्ठा और वीरता का महत्व सिखाया।

जीजाबाई के संस्कार, त्याग और दृढ़ निश्चय शिवाजी के व्यक्तित्व में झलकते हैं। उन्होंने अपने पुत्र को मुगल साम्राज्य के अत्याचारों के खिलाफ खड़े होने के लिए प्रेरित किया।

माता पुतलीबाई महात्मा गांधी की माता थी। पुतलीबाई का जीवन सरलता, आध्यात्मिकता और करुणा का उदाहरण था।

पुतलीबाई ने गांधी जी को सत्य, अहिंसा और आत्मसंयम के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी। उनका तपस्वी जीवन और धार्मिक प्रवृत्ति गांधी जी के व्यक्तित्व में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

उन्हीं के प्रभाव से गांधी जी के जीवन में सत्य और नैतिकता की आधारशिला डाली गई थी, जिसने उन्हें भारत के स्वतंत्रता संग्राम का नायक बनाया।

माता शकुंतला, जो महाभारत के आदिकाल की कथा में आती हैं, भारतदेश के नाम के आदिस्रोत राजा भरत की माता थीं।

शकुंतला ने भरत को सत्य, कर्तव्य और परिश्रम का महत्व समझाया। भरत के महान नेतृत्व और धर्मपरायणता में उनकी माता के संस्कारों का बड़ा योगदान था। उनके द्वारा दिए गए संस्कारों के कारण भरत ने एक ऐसा आदर्श शासन स्थापित किया, जिससे भारत का नाम **'भारतवर्ष'** पड़ा।

मदालसा राजा ऋतुध्वज की पत्नी और महान संतानों की माता थी। मदालसा ने अपने बच्चों को बचपन से ही ज्ञान, त्याग और वैराग्य का पाठ पढ़ाया। उनके द्वारा दिए गए संस्कारों ने उनकी संतानों को महान तपस्वी और न्यायप्रिय राजा बनाया। मदालसा की लोरियां आज भी प्रेरणा देती हैं, जो बताती हैं कि बचपन में दिए गए संस्कार जीवनभर प्रभाव डालते हैं।

मोरध्वज की पत्नी का वर्णन प्राचीन भारतीय कथाओं में आता है। वे अपने पुत्र के प्रति करुणा और त्याग की मिसाल थीं। उन्होंने अपने पुत्र को धर्म और कर्तव्यनिष्ठा का पाठ सिखाया। उनके त्याग और बलिदान की कहानियां आज भी प्रेरणा देती हैं।

उनकी संतानों ने अपने जीवन में धर्म और न्याय का पालन करते हुए आदर्श स्थापित किए। गांधारी, जो कौरवों की माता थीं, अपने त्याग और धैर्य के लिए जानी जाती हैं। संस्कारों का प्रभावः उन्होंने अपने बच्चों को नीति और धर्म का पालन करने की शिक्षा दी। रानी वीरमती पृथ्वीराज चौहान की माता थी।

रानी वीरमती, पृथ्वीराज को शौर्य और स्वाभिमान का पाठ पढ़ाने के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने पृथ्वीराज को बचपन से ही वीरता, नेतृत्व और आत्मसम्मान की शिक्षा दी। उनके दिए संस्कारों के कारण पृथ्वीराज चौहान ने अपने समय के सबसे शक्तिशाली योद्धाओं में स्थान पाया।

भारतीय इतिहास की इन महान माताओं ने अपनी संतानों को ऐसे संस्कार दिए, जिन्होंने उन्हें न केवल महान व्यक्तित्व बनाया, बल्कि दुनिया के लिए प्रेरणा का स्रोत भी। इन माताओं का जीवन सिखाता है कि सही शिक्षा, संस्कार और कर्तव्य का पालन संतान को महानता की ऊंचाइयों तक पहुंचा सकता है। इन माताओं का त्याग, तप और आदर्श भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर के रूप में हमेशा प्रेरणा देगा।

संस्कार और मूल्य : माँ की शिक्षा

राजेश्वरी भट्ट, बुरहानपुर

विश्व के समस्त प्राणियों के लिए मातृभाव की विशेष महिमा है। व्यक्ति अपनी सर्वाधिक श्रद्धा स्वभावतः मां के प्रति ही व्यक्त करता है फिर चाहे वह देवी भगवती हो या सामान्य स्त्री, सर्वप्रथम माता में ही देवत्व का दर्शन होता है।

संस्कार शब्द का मूल अर्थ है, शुद्धीकरण मूलतः भारतीय संस्कृति में संस्कार शब्द का प्रयोग मानव जीवन के उन धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठानों के लिए किया जाता है, जो मनुष्य को नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टि से एक चरित्रवान व्यक्ति और उत्तम नागरिक निर्माण के लिए अनिवार्य हैं। यदि जीवन में संस्कार नहीं हों तो व्यक्ति में नकारात्मकता, अराजकता, स्वार्थ और असंवेदनशीलता के साथ आत्मविनाश जैसे अहितकारी गुणों का समावेश हो जाता है।

माता को बालक की प्रथम गुरू माना जाता है क्योंकि विद्यालय जाने की वय तक माता ही उसे आरंभिक शिक्षा देती है तत्पश्चात् गुरू। हम सभी की दृष्टि में वही स्त्री मां है जो बालक को जन्म देती है जिसमें वात्सल्य और ममता होती है परंतु क्या वास्तव में वही बालक की माता होती है? आपका तो यही उत्तर होगा कि हां और कौन होगी? तो समझिए कि वास्तविक माता कौन और क्यों होती है या होना चाहिए।

जिस स्त्री से बालक का जन्म होता है वह माँ मात्र एक देह को जन्म देती है और जो दूसरी माँ होती है वह संस्कार के साथ ज्ञान प्रदान करती है कि जीवन में स्वधर्म, शिक्षा, संस्कार का क्या महत्व है, राष्ट्र और समाज के साथ परिवार के प्रति उसके क्या दायित्व और कर्तव्य हैं, शरीर क्या है, मुक्ति क्या है, ये संसार क्या है? हम अपने आस-पास जो माताएं देखते हैं उसमें से हजार में से नौ सौ निन्यानवे माताएं मात्र संतान के प्रति ममत्व भाव को ही जानती हैं पर मातृभाव, विलक्षण स्त्री में ही दृष्टिगत होता है क्योंकि ममता तो पशुओं में भी होती है। मातृभाव का अर्थ है, वास्तविक रूप से धरा पर बालक के जन्म को सार्थक करना।

मातृभाव बिल्कुल भिन्न है ममत्व से। मातृभाव का अर्थ है यथार्थ में जननी होना। वास्तविक माँ वो है, जो ज्ञान के प्रकाश से भरी हुई हो और वह स्वयं की ओजस्विता और तेज से बालक के जीवन को भी आलोकित कर दे जैसे सूर्य के प्रकाश से चंद्रमा प्रकाशित होता है। **शकुंतला, मदालसा, सीता और माता जीजा बाई के साथ ही वह सभी माताएं भी विलक्षण और महान थीं जिनकी वीर संतानों ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। यह सभी माताएं सामान्य हो ही**

नहीं सकती थीं।

साधारण माताओं को बालक के दैहिक स्वास्थ्य की चिंता जितनी अधिक होती है उतनी मानसिक स्वास्थ्य की नहीं। वह दिन-रात इसी चिंता में घुलती रहती है कि बेटा तूने भोजन किया? कोई समस्या तो नहीं, इतना कम क्यों खाया? तबियत तो ठीक है ना? अगर बालक कहीं बाहर नौकरी कर रहा है या पढ़ रहा है तो उनका एक ही वाक्य बार-बार ध्वनित होता है, **कितना दुबला हो गया है** खाना समय से नहीं खा रहा क्या? परंतु वह उसके मानसिक स्वास्थ्य से, उसके चारित्रिक निर्माण की प्रक्रिया से अनभिज्ञ ही रहती हैं। इसमें उनका कोई दोष भी नहीं क्योंकि उन्होंने अपने आस - पास (दादी नानी बुआ मौसी) सभी स्त्रियों को ऐसे ही बालकों का पालन पोषण करते देखा है तो वह स्वयं भी उसी का अनुसरण करती हैं।

बालक की देह को सदृढ़ बनाने के लिए उसकी रोज मालिश करेंगी, बालक को भोजन कराएंगी, उसको वस्त्र पहना देंगी, स्नान करवा देंगी परंतु मन को, विचार को कैसे पुष्ट करना उन्हें किस प्रकार स्वस्थ और स्वच्छ रखना है इस बारे में कोई चिंता नहीं! इसी कारण हम देख रहे हैं कि बालक देह से तो हृष्ट-पुष्ट हो रहे हैं, परंतु उनके मन और विचार अशक्त, दूषित और असंस्कारित ही रह जाते हैं। मां बालक के बाह्य रूप की (देह) तो चिंता करती है परंतु, आंतरिक (मन, विचार, मूल चरित्र) की नहीं। यह सोच ही नहीं पाती कि जीवन देह से कहीं आगे की बात है तो आपको अपनी संतान के मानसिक स्वास्थ्य की भी चिंता करनी चाहिए मात्र देह की नहीं। संस्कार जीवन को सुसंस्कृत, संयमित, अनुशासित और संतुलित बनाने का माध्यम हैं।

अस्वस्थ मानसिकताधारी व्यक्ति का परिवार, समाज और राष्ट्र इन सभी पर गंभीर और बहुआयामी प्रभाव पड़ता है। यह अराजकता, सामाजिक विकृति, संवेदनहीनता, हिंसा, नकारात्मक विचार और अमानवीयता जैसे दुष्परिणामों को जन्म देती है। आज एक दुर्घटना हरियाणा में हिसार के एक विद्यालय में शिक्षिका के साथ घटी। बारहवीं कक्षा के छात्रों ने यू-ट्यूब पर देखकर एक साधारण से बम का निर्माण कर उसे शिक्षिका की कुर्सी के नीचे लगाकर उसे घायल कर दिया क्योंकि वह उसके सतत् व्यवहार से क्रोधित थे। सोचिए कितनी विकृत, हिंसक और घृणा से भरी मानसिकता रही होगी उन छात्रों की। इन छात्रों की संगत से कितने छात्रों पर उसका दुष्प्रभाव होगा।

एक कहावत है कि **संगत से गुण होत हैं, संगत से गुण जात, बांस फांस मिश्री, एके भाव बिकात।**

अर्थात अच्छी बुरी संगत भी संस्कारों को प्रभावित करती है। पहले बुजुर्ग कहानियों के माध्यम से बालकों के भीतर मानवीयता, सहिष्णुता, साहस और वीरता की भावनाएं भरते थे। अब न तो वह कहानियां हैं न ही उनसे प्रेरणा लेने वाले बालक। आधुनिकता के चलते आज हम बाहरी आडंबरों को ज्यादा महत्व दे रहे हैं और संस्कारों की अवहेलना कर रहे हैं। अगर ऐसा ही रहा तो आने वाले समय में हमारा पतन स्वभाविक है।

अभी कुछ समय पूर्व एक फिल्म आई थी The Kerala story उसमें मुख्य अभिनेत्री का अपने ही पिता से यह प्रश्न करना कि **आपने मुझे कभी अपने धर्म का ज्ञान क्यों नहीं दिया? क्यों धर्म के बारे में कोई जानकारी नहीं दी?** यह प्रश्न हमारे लिए भी गंभीर चिंतन का विषय होना चाहिए।

हमारी प्राचीन संस्कृति में जब गुरुकुल हुआ करते थे तब बालक का सर्वांगीण विकास होता था परंतु आज यह परम्परा समाप्त हो चुकी है, मैकाले की शिक्षा प्रणाली में संस्कार हीनता का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिख रहा है। अब वह समय आ गया है जब माता को ही गुरु का भी कर्तव्य निभाना होगा, संतान को नैतिक शिक्षा और संस्कार देने होंगे। परिवार में वरिष्ठों का सम्मान, घर की परंपराओं का पालन, पूजा पाठ, तीज त्यौहारों पर अपने रीत रिवाजों ज्ञान, सनातन संस्कृति और राष्ट्र के गौरवमयी इतिहास की जानकारी भी देना होगी।

आधुनिकता का प्रवाह सरिता की भांति है निरंतर आगे बढ़ती ही रहेगी परंतु माताओं को आधुनिक शिक्षा और संस्कारों के मध्य संतुलन बनाकर बालक का संस्कार युक्त चारित्रिक निर्माण करना होगा। घर में सनातनी, राष्ट्रवादी विचारधारा के लेखकों और वेद उपनिषद गीता रामायण आदि ग्रंथों के साथ गायत्री मंदिर से हिंदी में लिखा साहित्य संग्रह लेकर एक छोटा सा वाचनालय बनाएं। जहां दिन में कम से कम आधा घंटा ही सही कोई न कोई ग्रन्थ या किताब पढ़ें और पढ़वाएं फिर उस विमर्श से संबंधित चर्चा करें। आप अपने बालकों को जैसा आचरण सिखाना चाहते हैं वैसा ही व्यवहार आचरण स्वयं करना होगा।

संस्कारों का उद्देश्य मनुष्य की पाशविकता को परिष्कृत कर मानवता में परिवर्तित करना है। संतान को ऐसे संस्कार और शिक्षा मिले कि जिस कुल में वह जन्मा हो वह उसके आचरण से पवित्र हो जाए, जननी कृतार्थ हो जाए और राष्ट्र अपने भाग्य को सराहे ऐसी संस्कारवान, विद्यावान, धर्म रक्षक, राष्ट्र के प्रति निष्ठावान संतान का निर्माण कर अपने मातृभाव को पुष्ट कर, माता के उत्तरदायित्व को पूर्ण कीजिए।

संस्कार वह दीपक है जो आधुनिकता के अंधकार में हमारी राह को प्रकाशित करता है।

मध्यप्रदेश शासन
देश का दिल
लिख रहा
विकास का
नया अध्याय
डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश
नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री
इन्वेस्ट मध्यप्रदेश
अनंत संभावनाएँ
ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट
24 25 फरवरी 2025, भोपाल
समिट की रूपरेखा
प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कर-कमलों से शुभारंभ
सेक्टोरल समिट
थीमेटिक सेमिनार
एग्जीबिशन एंड एक्सपो
प्रवासी मध्यप्रदेश
पंजीकरण करने के लिए स्कैन करें।
www.investmp.in

माँ- शिक्षा की पहली सीढ़ी

जितेन्द्र चौधरी

हर रोज कुछ नया सीखने का नाम ही जीवन है। जन्म लेते ही सीखने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। बच्चे का पहला कदम, पहला शब्द, उसका लिखा हुआ पहला अक्षर उसके आत्मनिर्भर बनने और आगे बढ़ने की प्रक्रिया का सबसे शुरूआती प्रयास होता है। बच्चे के इन्हीं प्रयासों को निखारने और विकसित करने का कार्य करती है माँ। बच्चा अपना सबसे अधिक समय माँ के साथ ही बिताता है ऐसे में वह सबसे अधिक माँ को देखकर, सुनकर ही सीखता है। माँ के द्वारा किए जा रहे हर कार्य की नकल करने की कोशिश करता है और इस तरह जाने-अनजाने ही माँ बच्चे के जीवन की शिक्षा की पहली सीढ़ी बन जाती है।

नैतिक शिक्षा से शुरू होती है बच्चे की शिक्षा

कहने को तो कुछ काम बहुत ही छोटे होते हैं लेकिन उन्हें न किए जाए तो फिर बड़े-बड़े काम सीखना भी मुश्किल हो जाता है। चप्पल सही तरह से पहनना, नीचे गिरी हुई चीजों को उठाकर न खाना, भोजन करने से पहले हाथ धोना जैसे कई कार्य माँ हमें घर पर ही सिखा देती है। आज भले ही यह सुनने में मामूली लगे लेकिन अगर यह शिक्षा नहीं मिली होती तो शायद हम दुनिया की जटिल बातों को नहीं समझ पाते। माँ ही हमें सिखाती है कि बड़ों और गुरु का आदर करना चाहिए। उनकी बातों का पालन करना चाहिए और बाद में स्कूल में **गुरु गोविन्द दोउ खड़े काके लागूं पाय, बलिहारी गुरु आपकी गोविन्द दियो बताय** पढ़ते समय हमें याद आता है कि माँ ने ही गुरु का सम्मान करना सिखाया तब ही हमें उनका आशीर्वाद मिला और हम अपने लक्ष्य तक पहुंच पाए।

भगवान ने भी ली है माँ से शिक्षा

माता सीता ने वन में वाल्मीकि आश्रम में रहते हुए लव-कुश को संस्कारों के साथ ही अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा भी दी थी। जिससे उन्होंने श्रीराम के भाइयों समेत वीर हनुमान को भी परास्त कर दिया था। माता यशोदा ने ही श्रीकृष्ण को बचपन से सबके साथ मिलकर रहने, खाने, दूसरों की मदद करने के संस्कार दिए जिससे वह पूरे वृन्दावन के प्यारे बने। माँ के द्वारा दी गई शिक्षा से बच्चे के बेहतर व्यक्तित्व का निर्माण होता है और वही बच्चा बड़ा होकर एक बेहतर समाज का निर्माण करता है।

माँ ने ही बताया सीखने का महत्व

माँ ने ही हम सभी को सीखने का और सीखकर आगे बढ़ने का महत्व बताया है। आज आप और हम जहां भी हैं उसमें सबसे बड़ा योगदान हमारे सीखने का है। माँ ने हमें बालपन से ही समझा दिया था कि जितना हम सीखेंगे, उतना ही हम आगे बढ़ते रहेंगे। जीवन की आपाधापी में हम आगे तो निकल जाते हैं लेकिन कभी-कभी माँ के अतुलनीय योगदान को अनदेखा कर देते हैं। देखा जाए तो, यह कृत्य पाप की श्रेणी में आता है लेकिन माँ सब माफ कर देती है। **माँ का हर सपना, हर किस्सा उसके बच्चों से जुड़ा होता है। इसलिए माँ, जो कि शिक्षा की पहली सीढ़ी है उसे कभी अनदेखा न करें और अपने जीवन को एक दिशा देते रहें। यकीनन, आपको आपकी मंजिल, आपका लक्ष्य जरूर हासिल होगा।**

विरासत के साथ विकसित मध्यप्रदेश निर्माण के संकल्प का एक वर्ष

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

देश का हृदय प्रांत मध्यप्रदेश गौरवशाली इतिहास और विश्वविख्यात सांस्कृतिक परंपराओं के लिये प्रसिद्ध है। सृष्टि के आरंभ से लेकर अब तक मानव सभ्यता के कई चिन्ह मध्यप्रदेश की धरती पर हैं। यहां पर्याप्त भू-संपदा, वन-संपदा, जल-संपदा, और खनिज-संपदा है। हम विगत एक वर्ष में विकसित मध्यप्रदेश निर्माण के साथ प्रदेश की विरासत को सहेजने के संकल्प को लेकर आगे बढ़े हैं।

यह हमारा सौभाग्य है कि डबल इंजन की सरकार का लाभ मध्यप्रदेश और प्रदेशवासियों को मिल रहा है। इस विशेष संयोग में प्रदेश ने नवाचारों के साथ विकास के कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं। इन दिनों प्रदेश में जनकल्याण पर्व मनाया जा रहा है। यह प्रदेश की समृद्धि का उत्सव है। इसमें भविष्य की कई संभावनाएं आकार लेंगी। शासन-प्रशासन और प्रदेशवासी सभी मिलकर विकास की गंगा बहाएंगे। आपकी सरकार, आपके द्वार होगी और जनता के हित जनता तक पहुंचेंगे। इसमें नई सौगातें भी शामिल होंगी।

मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के नदी जोड़ो के स्वप्न को मध्यप्रदेश में धरातल पर उतारा जा रहा है। 17 दिसंबर को पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना तथा 25 दिसंबर को केन-बेतवा लिंक परियोजना का शिलान्यास प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा किया जायेगा। यह आनंद का विषय है कि मध्यप्रदेश देश में पहला ऐसा राज्य है जहां 2 नदी जोड़ो परियोजनाओं पर काम किया जा रहा है। इससे जलस्रोत परस्पर जुड़ेंगे तो धरती का जल स्तर सुधरेगा, हमारे गांव और क्षेत्रों को पानी सुलभ होगा तथा अन्नदाता को सिंचाई के लिये पर्याप्त पानी मिलेगा। प्रदेश में जिस तरह कृषि, उद्योग, पर्यटन और आध्यात्मिक पर्यटन के लिये संभावनाएं विकसित हो रही हैं। इसमें औद्योगिक क्रांति, हरित क्रांति और पर्यटन क्रांति की त्रिवेणी से गरीबी पूर्णतः समाप्त हो जायेगी।

पिछले दिनों रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव आयोजित करके मध्यप्रदेश के गांव-गांव को औद्योगीकरण और आधुनिक उत्पाद से जोड़ने का प्रयत्न किया गया है। भविष्य में जिला स्तर पर भी इंडस्ट्री कॉन्क्लेव आयोजित होंगी। हैदराबाद, कोयंबटूर तथा मुंबई में रोड-शो और यूके-जर्मनी के उद्योगपतियों को निवेश के लिये प्रदेश में आमंत्रित करना उद्योग विस्तार का उपक्रम है। क्षेत्रीयता से लेकर ग्लोबल स्तर तक उद्योग के लिये किया गया यह पहला नवाचार है।

प्रधानमंत्री जी ने विकसित भारत निर्माण के लिये ज्ञान (GYAN) गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी के सम्मान की बात कही है। हमने इन्हीं 4 आधार स्तंभों पर केंद्रित समग्र विकास का रोडमैप तैयार किया है। प्रदेश सरकार गरीब कल्याण, युवा शक्ति, किसान-कल्याण और नारी शक्ति मिशन लागू करने जा रही है।

हमारा लक्ष्य है अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति का कल्याण हो, उन्हें बेहतर भविष्य निर्माण का अवसर मिले। प्रदेश में हर गरीब की पढ़ाई, लिखाई, दवाई, नौकरी और रहने-खाने से लेकर जीवन की हर जरूरत को सरकार पूरा कर रही है। अब गरीब-कल्याण मिशन में होने वाली गतिविधियों और कार्यों से हर गरीब के जीवन-स्तर में सुधार आयेगा, उनकी समृद्धि से प्रदेश के विकास को गति मिलेगी। यह गरीबों के प्रति हमारी संवेदनशीलता ही है कि हुकुमचंद

मिल के 30 साल पुराने विवाद से लेकर श्रमिकों की मिल से जुड़ी हर समस्या का हल निकाला और उन्हें उनका अधिकार दिलाया है, वहीं गंभीर बीमारी के गरीब मरीजों के लिये एयर एंबुलेंस सेवा भी शुरू की है।

राष्ट्र को समृद्ध बनाने की शक्ति युवाओं में है। आवश्यक है कि युवा कर्मशील हो, विचारशील हो और अपनी परंपराओं से जुड़ा हुआ हो। इसी अनुरूप युवाओं को शिक्षण और प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में तैयार राष्ट्रीय शिक्षा नीति सबसे पहले मध्यप्रदेश में लागू हुई। यहां स्किल्ड युवा तैयार हो रहे हैं। प्रदेश के सभी जिलों में पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस से उत्कृष्ट शिक्षा मिलेगी, भारतीय ज्ञान परंपरा और युगानुकूल शिक्षा के समावेश से युवाओं को अपनी समृद्ध विरासत का ज्ञान होगा और बेहतर भविष्य निर्माण के द्वार खुलेंगे। हर विकासखंड में स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के निर्माण से गांव-गांव से खेल प्रतिभाएं उभरकर आएंगी।

युवा शक्ति मिशन में प्रदेश के युवाओं की शिक्षा, आधुनिक तकनीकी में योग्यता और कौशल निर्माण के साथ सर्वांगीण विकास की लक्ष्य प्राप्ति शामिल है। प्रदेश में स्किल्ड युवा अपना स्व-रोज़गार स्थापित कर रहे हैं। वहीं शासकीय सेवाओं में लगभग ढाई लाख युवाओं की भर्ती का अभियान भी शुरू हो गया है।

मध्यप्रदेश कृषि प्रधान प्रांत है। किसान कल्याण मिशन में कृषि की उपज बढ़ाने की दिशा में ठोस प्रयास किये जायेंगे। अगले 5 वर्ष में सिंचाई का रकबा 50 लाख हेक्टेयर से 1 करोड़ हेक्टेयर किया जायेगा। अन्नदाता को शून्य प्रतिशत ब्याज पर ऋण देने के साथ खाद, बीज से लेकर उपज की बिक्री तक की व्यवस्था की गई है। किसानों के खेत में सोलर पंप लगाए जाएंगे, जिससे वे अपने उपयोग के लिये अपनी बिजली स्वयं बनायेंगे। हम प्रयासरत हैं कि जल की एक-एक बूंद का लाभ किसानों को मिले। हम चाहते हैं कि किसान चिंता मुक्त होकर खेती करें और खुशहाल जीवन जियें। हर किसान को गौ-पालक और हर घर को गौ-रक्षक बनाने का प्रयास है। मध्यप्रदेश न केवल कृषि उत्पादन में देश में शीर्ष पर हो, बल्कि दुग्ध उत्पादन और दुग्ध निर्यातक प्रदेश बने इसीलिये मध्यप्रदेश में गौ-वंश पालन के लिये अनुदान दिया जा रहा है।

परिवार, समाज, राष्ट्र और सृष्टि निर्माण के केन्द्र में है नारी

भारतीय दर्शन में नारी के महत्व का उल्लेख है। महिला कल्याण के लिये नारी शक्ति मिशन में महिलाओं का आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक और राजनीतिक सशक्तिकरण किया जायेगा। मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है जहां शासकीय सेवाओं में महिलाओं का आरक्षण 33 प्रतिशत से बढ़ाकर 35 प्रतिशत किया गया है। बहनों के मान-सम्मान और स्वाभिमान के लिये लाड़ली बहना योजना से महिलाओं को और सेनिटेशन एवं हाइजीन योजना से प्रदेश की लाखों बालिकाओं को आर्थिक संबल दिया है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में पिछले एक दशक से सांस्कृतिक पुनरुत्थान का कार्य हो रहा है। प्रदेश में समृद्ध और गौरवशाली विरासत को सहेजने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है। श्रीराम वन गमन पथ, श्रीराम के कर्तव्य पालन और राष्ट्र निर्माण का समर्पण संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधने का आधार देगा। श्रीकृष्ण पाथेय में उन सभी स्थानों को तीर्थ के रूप में विकसित किया जा रहा है जहां श्रीकृष्ण के स्मृति चिन्ह हैं। उन स्थलों पर कर्म, कर्तव्य, धर्म-संस्कृति से संबंधित गीता का संदेश और श्रीकृष्ण की लीलाओं को उकेरा जायेगा, जिससे लोग कर्मयोग के प्रति जागरूक हों तथा कर्मशील-धर्मशील नागरिक बनें।

मध्यप्रदेश सरकार जनमत और जन-भावना का प्रतिबिंब है। हमारा समाज अपनी विरासत को सहेज कर चलता है, इसीलिये समाज द्वारा निर्मित सरकार ने भी समाज के साथ अपने उत्सव आयोजनों को मिलकर मनाने की शुरुआत की है। मेरा प्रयास रहा है कि प्रदेश की जनता का जीवन सहज, सरल और सुगम हो। जनता की सुविधा के लिये साइबर तहसील से घर बैठे नामांतरण, बंटवारा, ई-पंजीयन की ऑनलाइन व्यवस्था की गई। थानों की सीमाओं के पुनर्निर्धारण से संकट की स्थिति में लोगों को त्वरित राहत मिलेगी। उज्जैन में मेडिसिटी का निर्माण, 51 मेडिकल कॉलेज खोलने की पहल से प्रदेशवासियों के स्वास्थ्य की गारंटी, इंदौर-मनमाड़ रेल लाइन, राष्ट्रीय राजमार्ग सुदृढ़ीकरण और मेट्रोपोलिटन सिटी निर्माण से विकास में गुणात्मक वृद्धि होगी।

प्रधानमंत्री जी का संकल्प है, स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक देश को विश्व की सर्वोच्च शक्ति के रूप में स्थापित करना। मध्यप्रदेश, भारत की इस विकास यात्रा में सहभागी बनने के लिये प्रतिबद्ध है। हमारा प्रयास है कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था को दोगुना किया जायेगा।

प्रदेश की उन्नति और प्रगति के साथ हमारी सरकार का जो संकल्प पत्र था, उस पर तेजी से कार्य हो रहा है। आने वाले 4 वर्ष में हम एक-एक संकल्प को पूर्ण करेंगे।

प्रदेश में शुरू हुये जनकल्याण पर्व के अवसर पर प्रदेश की साढ़े आठ करोड़ जनता से मेरा आग्रह है कि गौरवशाली और वैभवशाली भारत निर्माण के लक्ष्य पूर्ति के लिये आइये, हम साथ चलें और साथ बढ़ें।

भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति में मां की महिमा और स्थान

डॉ. मनमोहन प्रकाश

भारतीय ज्ञान परंपरा में माँ का स्थान सर्वोच्च और पूजनीय है। माता को सृजन, पोषण और संरक्षण की शक्ति का प्रतीक माना गया है। भारतीय संस्कृति माँ को न केवल भौतिक जीवन की आधारशिला मानती है, बल्कि उसे आध्यात्मिक, व्यावहारिक और सांस्कृतिक मार्गदर्शक का दर्जा भी प्रदान करती है।

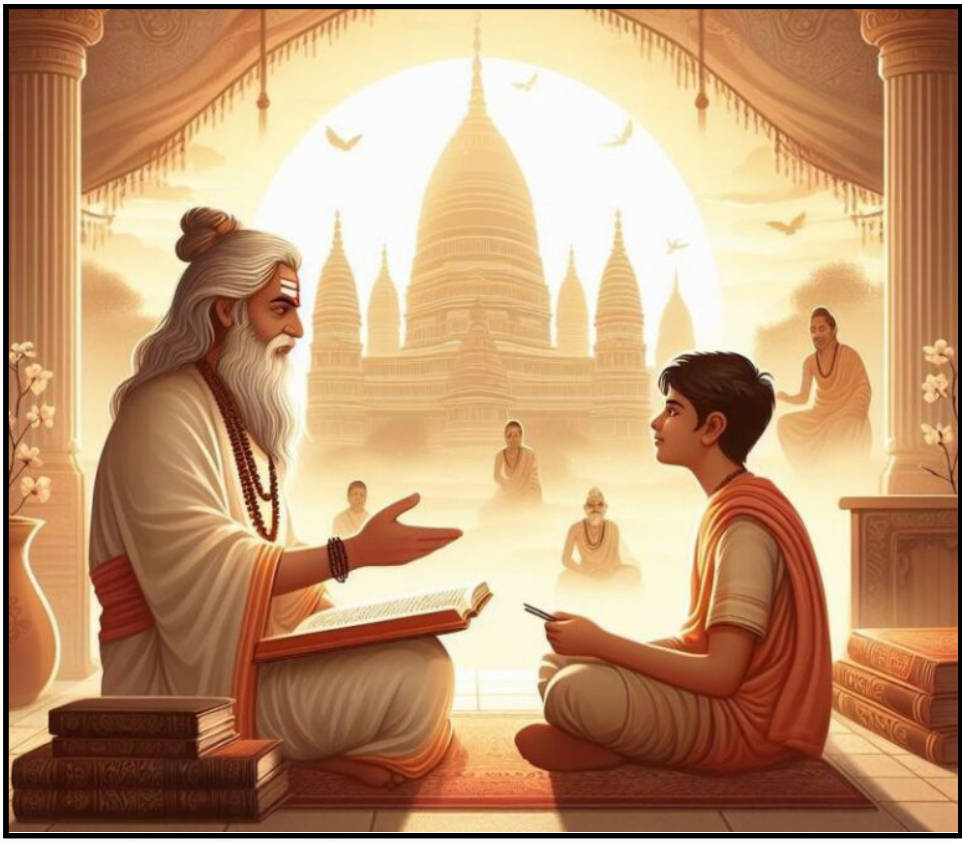

(1) भारतीय धर्म साहित्य में माँ की महिमा को निम्नानुसार दर्शाया गया है

❖ वेद सनातन धर्म के सबसे पुराने ग्रंथों में वेदों की गिनती होती है। वेदों को संसार के आदिग्रंथ तथा श्रुति कहते हैं तथा अपौरुषेय माना जाता है। वेदों में माता को पृथ्वी, देवत्व और जननी के रूप में देखा गया है।वेदों में माता को जन्मदात्री, पोषणकत्री और संसार की प्रथम गुरु कहा गया है। अथर्ववेद (माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।।12.1.12)के अनुसार पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ अर्थात् माँ को धरती के समान सहनशील और पालन-पोषण के लिए समर्पित बताया गया है। अथर्ववेद के अन्य श्लोक (या ते माता स त्रिवृता मानोता वसुधा।। 2.13.3) के अनुसार माता वह है जो हर प्रकार से हमारी रक्षा करती है और हमें सत्य, ज्ञान और धर्म के मार्ग पर चलना सिखाती है अतः माता को देवतुल्य समझना चाहिए (मातृदेवो भव।। अथर्ववेद 11.5.18)। जबकि अथर्ववेद का श्लोक 19.14.1 (त्वं माता सर्वस्य लोकस्य च पालन) माता को पूरे संसार की पालनकर्ता मानता है।

❖ उपनिषद तैत्तिरीय उपनिषद (मातृदेवो भव। पितृदेवो भव।) भी माता को देवता के समान सम्मान और दर्जा देता है।

❖ पुराण हिन्दू धर्म में अठारह प्रमुख पुराणों का उल्लेख मिलता है। पुराणों में माता को त्रिदेवी (दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती) के स्वरूप में देखा गया है, जहां दुर्गा को शक्ति का, लक्ष्मी को धन संपदा का तथा सरस्वती को विद्या और संस्कार का आधार माना गया है। नवरात्रि में विशिष्ट रूपों से पूजे जाने वाले माता दुर्गा के नौ रूपों को मां के नौ गुणों - धैर्य, सहनशीलता, भक्ति, शक्ति, तपस्या, साहस, धर्म, पवित्रता और सिद्धि का प्रतीक बताया गया है जो मातृशक्ति को महान बनाते हैं। मार्कण्डेय पुराण में ऋषि वंदना करते हुए कहते हैं **या देवी सर्वभूतेषु**

मातृरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।। गरुड़ पुराण के अनुसार माता-पिता के समान अन्य कोई श्रेष्ठ देवता नहीं है (पितृमातृसमंलोके नास्त्यन्यद दैवतं पर।। 2/21/28-29)। अतः हर व्यक्ति को अपने माता-पिता की पूजा करनी चाहिए।

❖ पतंजलि इसमें मां को सृजन और ऊर्जा का केंद्र बताया गया है। इसके अनुसार माँ की भूमिका बच्चे को शारीरिक और मानसिक रूप से संतुलित बनाने में होती है।

(1) **भारतीय दर्शन** इसमें माँ को सबसे पवित्र और पूजनीय स्थान दिया गया है। इसके अनुसार माँ केवल जन्मदात्री नहीं, बल्कि सृष्टि की आधारशिला, पोषणकर्ता और आध्यात्मिक मार्गदर्शक भी है। भारतीय दार्शनिक परंपरा में माँ को अद्वितीय शक्ति, प्रेम, त्याग और करुणा का प्रतीक माना गया है।

(2) **भक्ति साहित्य** संत साहित्य में माँ के प्रेम को ईश्वर के प्रेम का प्रतीक माना गया है। भक्तिकाल के साहित्यकारों ने जीवन में मां की उपस्थिति को विविध रूपों में अनुभव किया है। कुछ साहित्यकारों के विचार इस प्रकार हैं -

❖ **शंकराचार्य आप अपनी मां आर्याम्बा के प्रति अत्यंत समर्पित थे। आपके जीवन में माता का योगदान उन्हें धर्म और वेदांत के प्रति प्रेरित करने में महत्वपूर्ण रहा है। आपने माँ शब्द का उपयोग केवल भौतिक माँ के लिए नहीं, बल्कि देवी के लिए भी किया है। शंकराचार्य के अनुसार माँ का प्रेम, त्याग और करुणा मानव जीवन को मोक्ष के मार्ग पर ले जाता है।**

❖ संत कबीर आपने भी अपनी मां नीमा को जन्मदात्री और जीवन के मूल के रूप में देखा। उन्होंने मां की महिमा को ईश्वर की भक्ति के साथ जोड़ा। हालांकि उनकी जीवनी के अनुसार, वे एक जुलाहा परिवार में जन्मे थे, लेकिन उनकी मां की शिक्षा और संस्कार ने उन्हें समाज के लिए प्रेरित किया और संत बना दिया। वे लिखते हैं -जननी जन्मभूमि अधिक, कोई नहीं उपकार। मात-पिता के चरण में, सदा रहो तैयार।।

❖ संत तुलसीदास - हुलसी देवी तुलसीदास की मां थीं, जिन्होंने उन्हें धर्म और रामभक्ति का मार्ग दिखाया। ऐसा कहा जाता है कि उनकी मां के संस्कारों ने उन्हें **रामचरितमानस** जैसी महान रचना की रचना करने की प्रेरणा दी।

❖ संत मीराबाई - ऐसा कहा जाता है कि मीरा के जीवन में उनकी माँ वीरकुँवर बाई ने भक्ति और ईश्वर के प्रति प्रेम का बीज बोया। माँ से ही मीरा ने सीखा कि ईश्वर ही जीवन का परम उद्देश्य है। मीराबाई ने अपने भजनों में मातृत्व को कर्तव्य और प्रेम का प्रतीक बताया- **जननी सिखाए भक्ति के भाव, श्याम रंग में रँगी मैं पाव।**

(1) **संत सूरदास**- मां जमुनादास बाई के प्रति सूरदास ने गहरा सम्मान व्यक्त किया है। हालांकि वे बाल्यावस्था में ही दृष्टिहीन हो गए थे, उनकी माँ ने उनके अंदर भक्ति का संस्कार डाला। सूरदास ने अपने भजनों में यशोदा और बालकृष्ण के रिश्ते को मातृत्व का सर्वोच्च उदाहरण बताया **मैया मोरी, मैं नहीं माखन खायो।** अर्थात् सूरदास ने माँ को उस रूप में देखा जो संतान के दोषों को भी प्यार से माफ कर देती है।

❖ संत ज्ञानेश्वर- धार्मिक और आध्यात्मिक विचारों वाली महिला रुक्मिणी बाई ज्ञानेश्वर की माँ थीं। आपने ही ज्ञानेश्वर को वेदों और उपनिषदों के ज्ञान से पोषित करने में अहम भूमिका निभाई। ज्ञानेश्वर ने अपने साहित्य में माता को ब्रह्मांड का आधार बताते हुए लिखा है कि-**माता का स्नेह अमूल्य है, जो हर हृदय को पोषण देता है।**

❖ गुरु नानकदेव- तृप्ता देवी गुरु नानक देव की माँ थीं, जिन्होंने उन्हें धर्म, सत्य और करुणा का पाठ पढ़ाया। गुरु नानक ने माता को सृष्टि की जन्मदात्री और पालनहार बताया। नानक के भजनों में माँ की ममता और सहनशीलता का गुणगान मिलता है- **माता के आंचल में, प्रेम का सागर मिलता। वह ईश्वर का पहला रूप, हर जन को राह दिखाता।।**

❖ चैतन्य महाप्रभु- भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने वाली शचीदेवी चैतन्य महाप्रभु की माँ थीं। महाप्रभु ने अपनी माँ को अपने जीवन की पहली गुरु और भक्ति के मार्ग का प्रेरणा स्रोत बताया।

❖ संत एकनाथ- रुक्मिणी ने अपने पुत्र एकनाथ को सेवा, त्याग और विनम्रता का पाठ पढ़ाया। संत एकनाथ ने अपनी माँ के प्रेम को भक्ति के मूलभूत आधार के रूप में प्रस्तुत किया। वे मानते थे कि माँ के आशीर्वाद से ही उनकी आध्यात्मिक यात्रा शुरू हुई।

❖ **रैदास (रविदास)- सत्य, अहिंसा और समाज की सेवा का महत्व संत रैदास ने अपनी मां करमादेवी से समझा और उसका अनुसरण किया।**

(3) भारत की पावन धरा बहुत सारे महापुरुषों की जन्मस्थली के रूप में विख्यात है। भारत में जन्मे ईश्वरीय अवतार, शासक, सनातन ध्वजा वाहक, स्वतंत्रता सेनानी आदि महान विभूतियों ने अपने जीवन में माँ की उपस्थिति को विविध रूपों में अनुभव किया है-

❖ श्रीराम- मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने अपने जीवन में

पितृवचन पालन और मातृभक्ति को सर्वोच्च स्थान दिया। श्रीराम ने अपनी तीनों माताओं - कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा के प्रति सदैव गहरी भक्ति, प्रेम, आदर और सम्मान प्रदर्शित किया। श्रीराम के जीवन दर्शन से यह स्पष्ट होता है कि माताएं चाहे कुछ भी कहें और करें, पुत्र का धर्म उन्हें आदर और सेवा प्रदान करना है।

❖ श्रीकृष्ण- माता देवकी ने कृष्ण को जन्म दिया जबकि माँ यशोदा ने उनका पालन-पोषण किया। श्रीकृष्ण ने अपने दोनों माँओं के प्रति आदर और प्रेम प्रदर्शित किया। गीता के उपदेश में श्रीकृष्ण मातृभक्ति का महत्व स्पष्ट करते हुए कहते हैं- **पिताऽहमस्य जगतो माता धाता पितामह।** (भगवद्गीता 9.17)। यह श्लोक दर्शाता है कि माता-पिता ईश्वर के समान हैं तथा उनकी सेवा करना ईश्वर की सेवा करने के समान है।

❖ शिवाजी महाराज - माँ जीजाबाई का योगदान छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन में अद्वितीय रहा है। शिवाजी ने धर्म, शौर्य और न्याय की शिक्षा माँ जीजाबाई से प्राप्त की। आपका कहना था **माँ के सिखाये हुए धर्म और संस्कार ही मेरे शासन का आधार हैं।**

❖ अहिल्याबाई- होलकर राज्य की राजमाता और विख्यात शासक ने अपनी माता सुशीला शिंदे से धर्म और नारीत्व के महत्व की शिक्षा प्राप्त की। आपने अपनी माँ से सहनशीलता और न्यायप्रियता के गुण भी सीखे। अहिल्याबाई ने अपनी माँ के आदर्शों को अपने शासनकाल में प्रतिबिंबित भी किया।

(1) **रामकृष्ण परमहंस** - माँ चन्द्रमणि देवी के प्रेम और करुणा को रामकृष्ण परमहंस ईश्वर का स्वरूप बताते हैं। रामकृष्ण का मानना था कि **माँ की ममता और ईश्वर के प्रेम में कोई भेद नहीं है। दोनों ही निःस्वार्थ और शाश्वत हैं।** उनके अनुसार माँ के प्रति प्रेम ही ईश्वर की भक्ति का पहला चरण है।

❖ विवेकानंद - माँ भुवनेश्वरी देवी को विवेकानंद अपने जीवन का प्रेरणास्त्रोत मानते हैं। वे कहते थे कि **माँ केवल शारीरिक जन्म ही नहीं देती, बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक जीवन की नींव भी रखती है।** जीवन के आरंभिक समय में धर्म, नैतिकता और सेवाभाव के मूल्य आपने अपनी माँ से ही सीखे। विवेकानंद अपनी माँ को साक्षात् देवी दुर्गा का स्वरूप मानते थे। आपने कहा था यदि मैं अपने जीवन में महान कार्य कर पाया, तो इसका श्रेय मेरी माँ को है। माँ के विचार और उनका प्रेम ही मेरा सबसे बड़ा सहारा था।

❖ रवींद्रनाथ ठाकुर- साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने जीवन में अपनी माँ शारदा देवी के योगदान का विशेष उल्लेख किया है। वे कहते थे- **माँ की गोद वह स्थान है, जहां से बच्चा अपनी पहली कविता, पहला गीत और पहली प्रार्थना सीखता है।**

❖ **भगतसिंह -मां विद्यावती से भगतसिंह का गहरा लगाव था। उनकी माता ने उन्हें राष्ट्रप्रेम और बलिदान का महत्व सिखाया। भगतसिंह के पत्रों में मातृभूमि और अपनी माँ दोनों के प्रति प्रेम स्पष्ट झलकता है। भगतसिंह के एक पत्र का अंश इस प्रकार है मां! तुमने मुझे जन्म दिया है, तो इस बात पर गर्व करना चाहिए कि तुम्हारा बेटा मातृभूमि के लिए अपना जीवन समर्पित कर रहा है। मुझे खुशी है कि मैं तुम्हारे सपनों को पूरा कर रहा हूं। एक दूसरे पत्र में भगतसिंह अपनी माँ को लिखते हैं माँ! तुम्हारे संस्कार ही मुझे इस मुकाम तक लाएं हैं। यह तुम्हारी ही शिक्षा थी जिसने मुझे सिखाया कि सच्चाई के लिए खड़ा होना चाहिए, चाहे इसकी कीमत कुछ भी हो।** अंतिम पत्र में भगतसिंह लिखते हैं **माँ! मैं फाँसी के तख्ते पर सिर ऊँचा करके जाउंगा। तुम यह सोचकर गर्व करना कि तुम्हारा बेटा इस देश की आजादी के लिए मरा।**

❖ सुभाष चंद्र बोस- भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में विशिष्ट भूमिका निभाने वाले सुभाष चन्द्र बोस अपनी मां प्रभावती के आशीर्वाद को जीवन का मूल आधार मानते हैं। बोस ने अपनी मां को राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरणा का स्त्रोत माना।

❖ महात्मा गाँधी- भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने में प्रमुख भूमिका निभाने वाले महात्मा गाँधी ने अपनी माँ पुतलीबाई से सत्य और अहिंसा के मूलमंत्र सीखे जिनका पालन आपने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान निष्ठा और ईमानदारी से किया। वे अपनी माँ को आध्यात्मिकता और त्याग की मूर्ति मानते थे। गाँधीजी ने लिखा था - **माँ ने मुझे जो सिखाया, वह किसी विद्यालय में संभव नहीं था। उन्होंने मुझे ईश्वर में विश्वास और सेवा का महत्व समझाया।** महात्मा गाँधी ने कहा था कि माँ की गोद बच्चे का पहला स्कूल है। माता का प्रेम और उसके द्वारा दी गई शिक्षाएँ बच्चे को जीवनभर प्रेरित करती हैं।

❖ आचार्य रजनीश (ओशो)- अपनी माँ श्रीमती सरस्वती जैन को ओशो अपने जीवन का पहला शिक्षक मानते थे। आपके अनुसार **माँ बच्चे की पहली गुरु, स्नेह की मूर्ति और शुद्ध प्रेम का सर्वोच्च उदाहरण है।** ओशो कहते

थे- माँ का प्रेम निःस्वार्थ और शुद्ध होता है। यह किसी भी अपेक्षा से परे है। माँ का स्नेह ऐसा है जो हर स्थिति में बच्चा महसूस कर सकता है, भले ही वह उससे दूर क्यों न हो। ओशो का मानना था **अगर तुम माँ के प्रेम को गहराई से समझ सको, तो तुम ईश्वर के प्रेम को भी समझ सकते हो।**

(4) भारतीय वैज्ञानिकों का भारत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय वैज्ञानिकों के जीवन में भी माँ का विशिष्ट स्थान रहा है वे अपनी माँ को प्रेरणा का स्रोत मानते हैं और उनकी मेहनत, त्याग और मार्गदर्शन को अपनी उपलब्धियों का आधार बताते हैं। कुछ वैज्ञानिकों के अपनी माँ के बारे में विचार निम्नानुसार हैं-

❖ **डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम- भारत के पूर्व राष्ट्रपति और मिसाइलमैन के नाम से विख्यात डॉ. कलाम अपनी मां आशिअम्मा के बारे में कहते थे कि उन्होंने उन्हें ईमानदारी, सादगी और धैर्य का पाठ सिखाया, कठिन परिस्थितियों में परिवार की देखभाल की और उन्हें पढ़ाई के लिए प्रेरित किया।**

❖ सी.वी. रमन- भौतिकी में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित सी.वी. रमन अपनी माँ पार्वती अम्मल को बेहद बुद्धिमान, शिक्षित और संगीत प्रेमी महिला मानते थे, जिन्होंने उनकी वैज्ञानिक रुचि को प्रोत्साहित किया।

❖ होमी भाभा- भारत में परमाणु ऊर्जा के जनक होमी भाभा अपनी माँ महरबाई को प्रगतिशील, शिक्षा और संस्कृति को महत्व देने वाली महिला मानते थे। आपके अनुसार बौद्धिक क्षमता को विकसित करने तथा वैज्ञानिक सोच को प्रेरित करने में उनकी माँ का बड़ा योगदान रहा है।

अतः मैं निष्कर्ष रूप में यही कहना चाहता हूं कि भारतीय ज्ञान परंपरा संस्कृति में माँ केवल **'बायोलॉजिकल मदर'** ही नहीं है, बल्कि जीवन का आधार और प्रेरणा का स्रोत है। वह भौतिक और आध्यात्मिक दोनों स्तरों पर सृष्टि/पुत्र का पोषण करती है। यह परंपरा हर भारतीय को सिखाती है कि माँ का सम्मान करना और उसकी शिक्षाओं का पालन करना, व्यक्ति और समाज दोनों के लिए अत्यंत आवश्यक है। जिनके पास माँ का साया है, आशीर्वाद है वे खुशकिस्मत हैं। वे ईश्वर को इस उपहार के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करें और अपनी माँ की सेवा कर अपने आपको धन्य समझें, उन्हें जीवन के अंतिम पड़ाव में अकेला न छोड़ें, क्योंकि **पूत कपूत हो सकता है, लेकिन माता कभी कुमाता नहीं हो सकती।**

माँ संवेदना है

स्व.ओम व्यास ओम (उज्जैन)

माँ संवेदना है, भावना है, अहसास है माँ
माँ जीवन के फूलों में खुशबू का वास है माँ
माँ रोते हुए बच्चे का खुशनुमा पलना है माँ
माँ मरुस्थल में नदी या मीठा सा झरना है माँ
माँ लोरी है, गीत है, प्यारी सी थाप है माँ
माँ पूजा की थाली है, मंत्रों का जाप है माँ
माँ आँखों का छलकता हुआ किनारा है माँ
माँ गालों पर पप्पी है, ममता की धारा है माँ
माँ झुलसते दिनों में कोयल की बोली है माँ
माँ मेहंदी है, कुमकुम है, सिंदूर की रोली है माँ
माँ कलम है, दवात है, स्याही है माँ
माँ परमात्मा की स्वयं एक गवाही है माँ
माँ त्याग है, तपस्या है, सेवा है माँ
माँ फूंक से ठंडा किया हुआ कलेवा है माँ
माँ अनुष्ठान है, साधना है, जीवन का हवन है माँ
माँ जिंदगी है, मुहल्ले में आत्मा का भवन है माँ
माँ चूड़ी वाले हाथों पे मजबूत कंधों का नाम है माँ
माँ काशी है, काबा है, चारों धाम है माँ
माँ चिंता है, याद है, हिचकी है माँ
माँ बच्चे की चोट पर सिसकी है माँ
माँ चूल्हा, धुआँ, रोटी और हाथों का छाला है माँ
माँ जिंदगी की कड़वाहट में अमृत का प्याला है माँ
माँ पृथ्वी है, जगत है, धुरी है माँ
माँ बिना इस सृष्टि की कल्पना अधूरी है माँ
तो माँ की यह कथा अनादि है, अध्याय नहीं है
और माँ का जीवन में कोई पर्याय नहीं है
तो माँ का महत्व दुनिया में कम हो नहीं सकता
औ माँ जैसा दुनिया में कुछ हो नहीं सकता
तो मैं कला की पंक्तियाँ माँ के नाम करता हूँ
मैं दुनियाँ की सब माताओं को प्रणाम करता हूँ।

कल्पनाओं से परे एक व्यक्तित्व: सुधा मूर्ति

डॉ. मनीष काले, इंदौर

स्त्री ही समाज शक्ति का प्राण है और उसका सुंदर पवित्र जीवन ही प्रेम है। उसका यह प्रेम माँ-बाप के प्रति भक्तिरूप में, स्वामी के प्रति निष्ठारूप में, संतान के प्रति स्नेहरूप में, दुखियों के प्रति करूणा रूप में, शत्रु के प्रति क्षमा रूप में और संसार के प्रति जगद्धात्री रूप में स्थापित है। प्रेममयी स्त्री संसार के कार्य में आत्म-समर्पण करके कर्त्तव्य और स्नेह के भीतर अपने को विलीन कर सकती है, वह ही आदर्श स्त्री है। उनका पवित्र कर्म सदियों तक इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहता है। संसार उन शक्तिमयी जगद्धात्रियों के चरणों में प्रणत होता है और उनके चरणों से निकली अमृतधारा देशवासियों को अनंत काल तक शक्ति प्रदान करती है। विज्ञवर श्री नयनचंद्र मुखोपाध्याय के आदर्श महिला ग्रंथ में आदर्श महिला के स्वरूप को कुछ इन्हीं शब्दों में परिभाषित किया गया है। आदर्श महिला का यह स्वरूप विश्व पटल पर भारतीय महिला का प्रतिनिधित्व भी करता है और उसे स्थापित भी। **भारत की पावन भूमि पर समय-समय पर ऐसी महिलाओं ने जन्म लिया है, जिन्होंने आदर्श महिला की परिकल्पना को साकार किया है। ऐसा ही एक नाम है सुधा नारायण मूर्ति, जिन्होंने न केवल अपने जीवन को एक सार्थक आकार दिया,** बल्कि समाज में महिला सशक्तिकरण की पहचान के रूप में स्थापित भी किया। वास्तव में देखा जाए तो सुधाजी का जीवन एक अच्छी बेटी से लेकर एक वैश्विक सफल महिला उद्यमी के बीच का सफर है, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण भाग समाज के प्रति जिम्मेदारी का भी है। यह भाव ही सुधा मूर्ति को अन्य महिला उद्यमियों से अलग करता है।

भारत में अरबपति महिला उद्यमियों की लम्बी सूची है। इन महिला उद्यमियों की पहचान ही उनकी शान-शौकत और दौलत से है। इनका जीवन विलासिता में गुजर जाता है।

ये महिला उद्यमी अपने-अपने कार्यक्षेत्र में तो आदर्श नेतृत्व स्थापित करती हैं, लेकिन जब बात इसके साथ ही समाज के नेतृत्व की आती है, समाज को दिशा देने की आती है तो कुछ ही नाम सामने आते हैं। सुधा मूर्ति उन नामों में से ही एक है, जो समाज के लिये जी रही हैं और महिलाओं की रोल मॉडल हैं। सुधाजी का आरंभिक जीवन तो सामान्य महिलाओं की तरह ही रहा लेकिन उन्होंने अपने कर्म से इसे आदर्श बना दिया। सुधाजी ने इस मिथक को तोड़कर मिसाल कायम कर दी जिसमें कहा जाता था कि महिलाओं की अपनी एक सीमा और सामर्थ्य है। सुधाजी ने अपने मजबूत इरादों से हर उस मिथक को तोड़ा जो सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं के लिये बनाए गये थे। कर्नाटक के एक सामान्य परिवार में जन्मी सुधाजी आज नारी शक्ति की प्रतीक हैं।

आदर्श बेटीः मर्यादाओं को कभी नहीं लांघा

सुधाजी का जन्म 19 अगस्त 1950 को कर्नाटक के शिगगांव में हुआ। उनके पिता का नाम आरएच कुलकर्णी था, जो पेशे से चिकित्सक थे। माता का नाम विमला कुलकर्णी था। बेटी के रूप में भी आपकी पहचान एक आदर्श बेटी की ही रही। अपने माता-पिता के आदर्शों पर चलकर सुधाजी जी बड़ी हुई। खास बात यह रही कि सुधाजी ने बेटी की भूमिका में भी कभी अपनी सीमाओं को लांघा नहीं। बेटी की मर्यादा को कभी सुधाजी ने बंधन नहीं समझा और मर्यादाओं में रहकर ही खुद को संवारा। सुधाजी को घर से पूरी आजादी थी, लेकिन उन्होंने इसका दुरूपयोग नहीं किया। इसी बात ने उनमें आत्मविश्वास पैदा कर दिया, जो आज भी उनके व्यक्तित्व में झलकता है। सुधाजी का कहना है कि घर से पूरी आजादी थी, लेकिन मुझे पता था कि मुझे क्या करना है। एक बार लक्ष्य तय कर लिया तो फिर पूरी ईमानदारी से उस पर चलना ही तो होता है। यह मैंने बचपन से किया इसलिये जीवन में कोई परेशानी नहीं आयी।

आदर्श विद्यार्थी- हर डिग्री में स्वर्ण पदक

आपने बीवीबी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नालॉजी से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में बीई किया। यहां 150 विद्यार्थियों में दाखिला लेने वाली सुधाजी एकमात्र महिला थीं। इस डिग्री में आपने प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक जीता। कॉलेज में प्रवेश के समय ही प्रिंसिपल ने कुछ शर्तें उनके सामने रख दी थीं, जिसका पूरा पालन भी उन्होंने किया। इसके बाद भारतीय विज्ञान संस्थान से कम्प्यूटर विज्ञान में एमई किया और यहां भी स्वर्ण पदक पर अपना हक जमाया। यहां भी आपने अपने आदर्श स्वरूप को बनाए रखा। सुधाजी ने अपनी पढ़ाई के दौरान एक दिन भी क्लास नहीं छोड़ी।

आदर्श महिलाः

कॉर्पोरेट में महिलाओं की आवाज पढ़ाई पूरी करने के बाद आपने भारत की सबसे बड़ी ऑटो निर्माता इंजीनियरिंग कंपनी टेल्को में काम किया। टेल्को में काम करते हुए आप यहां की पहली महिला इंजीनियर बनीं। यह कामयाबी सुधाजी को तोहफे में नहीं मिली बल्कि उन्हें अपना हक मांगना पड़ा। दरअसल टेल्को, टाटा समूह की ऑटो मोबाइल कंपनी है। टेल्को ने इंजीनियरिंग की भर्ती के लिये एक विज्ञापन जारी किया, जिसमें केवल पुरूषों को ही आवेदन करने की पात्रता थी। सुधाजी ने जब यह विज्ञापन पड़ा तो उन्हें भावनात्मक रूप से ठेस पहुंची। उन्होंने टाटा समूह के प्रमुख शमशेरसिंह टाटा को पत्र लिखकर महिला को पात्रता क्यों नहीं होने का सवाल उठाया? सुधाजी ने महिलाओं के पक्ष में कई दलीलें भी दीं। आपका कहना था कि चयन के लिये योग्यता आधार होना चाहिये न कि महिला या पुरूष वर्ग। इस पत्र के बाद सुधाजी को साक्षात्कार के लिये बुलाया गया और उनका चयन भी हो गया। खास बात यह है कि सुधाजी के इस कदम के बाद टेल्को ने अपने भर्ती नियमों में बदलाव कर महिलाओं को भी आवेदन करने की पात्रता दी। कॉर्पोरेट जगत में सुधाजी महिलाओं की आवाज बनीं और आज एक बड़ी महिला वर्ग कॉर्पोरेट में काम कर रहा है।

आदर्श पत्नीः आर्थिक सहायता कर शुरू करवायी कंपनी

टेल्को में काम करने के दौरान ही आपकी मुलाकात श्री नारायण मूर्ति से हुयी और आप 1978 को विवाह सूत्र में बंध गयी। इस पवित्र रिश्ते में भी आपने आदर्श स्वरूप को ही स्थापित किया। कुछ समय नौकरी करने के बाद नारायण मूर्ति ने इंफोसिस नामक कंपनी बनाने का सपना देखा। नारायण मूर्ति को कंपनी की स्थापना में कुछ पैसे कम पड़ गये तो सुधाजी ने अपनी बचत से दस हजार रूपये अपने पति को दिये। इस समय सुधाजी अपने पति के साथ एक कमरे के घर में रहती थीं। सुधाजी की इस आर्थिक सहायता से ही नारायणमूर्ति अपनी कंपनी शुरू कर पाये। बाद में सुधाजी ने भी नौकरी छोड़ दी। नारायण मूर्ति अपनी सफलता में सुधाजी के दिये दस हजार रूपयों को ही श्रेय देते हैं। आज इंफोसिस कंपनी का मार्केट कैप 6 लाख 69 हजार करोड़ से अधिक का है। भारत के साथ ही कंपनी अमेरिका, इंग्लैंड सहित विश्व के कई देशों में कारोबार कर रही है। इंफोसिस आज टाटा समूह के टीसीएस के बाद भारत की सबसे बड़ी कंपनी और भारत की टॉप टेन वेल्यूएवल कंपनियों में शामिल है। नारायण मूर्ति और सुधाजी के बीच पति-पत्नी का रिश्ता भी बहुत मजबूत है। सुधाजी ने अपने पति का हर समय साथ दिया। वे पूरी तरह एक-दूसरे को समझते हैं।

सुधाजी का कहना है कि लड़कियों को यह समझना होगा कि वे अपने जीवनसाथी के साथ प्रतिस्पर्धा तो नहीं कर रही हैं। हमें अपने जीवन साथी का सहयोग करना है, न कि प्रतिस्पर्धा। यह बात लड़कों पर भी लागू होती है।

आदर्श मां - बच्चों को सिखाया सही खर्च करना

सुधाजी का जीवन एक मां के रूप में भी आदर्श ही रहा। आपने अपने दोनों बच्चों की परवरिश भी एक सामान्य परिवार वालों की तरह ही की। हर स्तर पर नैतिक मूल्यों के साथ ही एक अच्छा व्यक्ति बनने की सीख भी उन्होंने अपने बच्चों को दी। सुधाजी ने बच्चों के मन में यह अहसास ही नहीं होने दिया कि वे एक सफल उद्योगपति के बच्चे हैं और वो कुछ भी कर सकते हैं। जीवन की छोटी-छोटी सीख देने में भी सुधाजी पीछे नहीं थीं। सुधाजी ने आदर्श जीवन शैली की केवल बातें ही नहीं की बल्कि खुद भी जिया। सुधाजी के बेटे ने अपने जन्मदिवस पर एक पार्टी करना तय किया। वह चाहता था कि एक अच्छी पार्टी हो, जिस पर करीब 50 हजार रूपये का खर्च अनुमानित था। सुधाजी इसे व्यर्थ का खर्च मानती थीं। इसी दृष्टि से उन्होंने बेटे को सुझाव दिया कि वह एक छोटी पार्टी कर ले और बचे हुए पैसे अपने ड्रायवर के बच्चों की पढ़ाई हेतु दे दे। सुधाजी की बात सुनकर बेटे ने पहले तो मना कर दिया, लेकिन बाद में वह इसके लिये मान गया। कुछ सालों बाद ड्रायवर का बेटा अपनी स्कॉलरशिप लेकर खुद आया। उसने यह रुपए 2001 के संसद हमले में शहीद हुए जवानों के परिवारों की मदद के लिये दिये। सुधाजी कहती हैं कि बच्चों को पैसा लेने के साथ ही प्यार, त्याग, दया जैसे भाव भी सीखना चाहिये। मानवता के सभी गुण ही व्यक्ति को संपूर्ण बनाते हैं। सुधाजी की आदर्श मां की भूमिका में अपने बच्चों को दी गई सीख आज बच्चों के जीवन में भी दिखायी दे रही है। सुधाजी के दो बच्चे हैं। बेटा रोहन अमेरिका में एक कंपनी चलाता है।

बेटी अक्षता है, जो ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक की धर्मपत्नी है। दोनों ही बच्चों की पहचान विश्व पटल पर है, लेकिन किसी तरह का कोई शोर सुनायी नहीं देता है।

आदर्श साहित्यकारः तीन भाषाओं पर पकड़

सुधाजी ने खुद को साहित्यकार के रूप में भी स्थापित किया। मराठी, कन्नड़ और अंग्रेजी भाषा पर आपकी पकड़ है और इन्हीं तीनों भाषाओं में आपने किताबें भी लिखी हैं। हालाँकि कन्नड़ और अंग्रेजी साहित्य के लिये आपका विशेष योगदान रहा है। आपने विभिन्न विधाओं की 30 से अधिक किताबें लिखी हैं। आपकी कई किताबों का अन्य भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है। आपकी अधिकांश किताबें वास्तविक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। मराठी भाषा में आजीच्या पोतडीतील गोष्टी, परीध, पितृण, आयुष्याचे धड़े गिरवताना, बकुल आदि आपकी प्रसिद्ध किताबें है। तीन हजार टाके आपकी मराठी अनुवाद की चर्चित किताब है। अंग्रेजी भाषा में आपकी द मदर आई नेवर न्यू, थ्री थाउजेंड स्टिचेस, मैजिक ऑफ द लॉस्ट टेम्पल प्रमुख किताबें पाठकों की पसंद हैं। हिन्दी भाषा भी आप जानती हैं।

आदर्श समाजसेवेवी - बच्चों और महिलाओं के लिये समर्पित

सामाजिक कार्यों का आपका दायरा बहुत विस्तृत है। इंफोसिस की सफलता ने सुधाजी को समाजसेवा की ओर मोड़ दिया। कंपनी की ओर से इंफोसिस फाउंडेशन की स्थापना की गई और इसके माध्यम से सुधाजी ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में विकास कार्य को प्रोत्साहित किया। यह फाउंडेशन कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के तहत स्थापित किया गया था। फाउंडेशन के माध्यम से सुधाजी ने हर वर्ग के लिये काम किये। उनका फोकस गरीब बच्चों की शिक्षा और महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई पर था। आपने भारत की शिक्षा व्यवस्था को बेहतर करने के लिये पूरी ईमानदारी से मैदानी प्रयास किये। कर्नाटक के शिक्षण संस्थानों में कम्प्यूटर टेक्नालॉजी को बढ़ावा दिया। गांवों में ग्रंथालय भी खोले।

लक्ष्य 10 हजार ग्रंथालय खोलने का था लेकिन अभी तक 60 हजार से अधिक ग्रंथालय खोले जा चुके हैं। सुधाजी ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में भी मूर्ति क्लासिकल लायब्रेरी ऑफ इंडिया नाम से ग्रंथालय खुलवाया। गणितीय विज्ञान संस्थान के लिये कोष की स्थापना की, जिससे प्रतिभाशाली छात्रों को छात्रवृत्ति आसानी से मिल सके। साथ ही शिक्षकों के वेतन में भी वृद्धि हो सके। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान को भी आर्थिक सहायता की ताकि डॉक्टर विदेश जाकर शोध पत्र प्रस्तुत कर सकें। कर्नाटक के ग्रामीण क्षेत्रों में करीब 3 हजार शौचालय खुलवाये, जबकि लक्ष्य दस हजार शौचालय खोलने का रखा गया था। तमिलनाडु में आयी सुनामी के समय भी सुधाजी की इंफोसिस फाउंडेशन ने लोगों की खूब मदद की। सेक्स वर्कर्स के लिये काम करने की इच्छा सुधाजी की पहले से ही रही और उन्होंने फाउंडेशन के माध्यम से यह काम किया भी। आपने तीन हजार सेक्स वर्कर्स का जीवन बदल दिया, जबकि लक्ष्य एक हजार का था। फाउंडेशन ने अभी तक एक हजार करोड़ से अधिक राशि सामाजिक कार्यों में खर्च की है। आप स्वास्थ्य, शिक्षा, सार्वजनिक स्वच्छता, कला, संस्कृति और जमीनी स्तर पर गरीबी उन्मूलन जैसे क्षेत्रों में हजारों प्रोजेक्ट संचालित कर रही हैं। सुधाजी कहती हैं, एक दिन मेरी बेटी ने मुझ से पूछा कि अम्मा तुम्हारा कर्तव्य क्या है? मुझे अहसास हुआ

कि कुछ तो समाज के लिये करना चाहिये। मैंने गरीबों के लिये काम करना आरंभ किया तो मुझे पता चला कि भारत में गरीबी रेखा के नीचे जीवन जीने वाले लोगों में भी प्रतिभाशाली लोग हैं, जिन्हें आर्थिक सहायता की जरूरत है। और मैंने संकल्प लिया कि इन लोगों के लिये काम करूंगी। शिक्षा एक महत्वपूर्ण आयाम है और मेरा इस पर पूरा फोकस भी है। खास बात यह है कि समाजसेवा के लिये आपने भारत के कई गांवों का भ्रमण भी किया।

सम्मान में भी आदर्श सुधाजी को अपने सामाजिक कार्यों के लिये कई प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान भी मिले हैं। आप भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से भी सम्मानित हो चुकी हैं। 2006 में जहां आप को पद्मश्री से सम्मानित किया गया वहीं 2023 में आपको पद्मभूषण सम्मान मिला। साहित्य में विशेष योगदान के लिये आप आरके नारायण पुरस्कार से सम्मानित हो चुकी हैं। आपको साहित्य अकादमी का बाल साहित्य पुरस्कार भी मिला है। आप राजा लक्ष्मी पुरस्कार, दाना चिंतामणि अतीमब्बे, क्रॉसवर्ड बुक, ओजस्विनी, मिलेनियम महिला शिरोमणि पुरस्कार से भी सम्मानित हो चुकी हैं। सामाजिक कार्यों के लिये आपको बसवाश्री 2013 पुरस्कार मिल चुका है। समाज सेवा के लिये 2023 में ग्लोबल इंडियन अवार्ड भी आपको मिला हुआ है। यह अवार्ड अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिये हर साल एक भारतीय को दिया जाता है। भारत में कानूनी शिक्षा और छात्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिये आपको डॉक्टर ऑफ लॉ की डिग्री से सम्मानित किया गया, जबकि आईआईटी कानपुर ने उन्हें डॉक्टर ऑफ साइंस की मानद उपाधि भी प्रदान की है।

जीवन के सूत्र

❖ हर दिन सुबह उठने पर आपको सरप्राइज मिलते हैं। यह कभी अच्छे तो कभी बुरे होते हैं। जिंदगी इन्हीं सरप्राइजेस से मिलकर बनी है। जिंदगी तो एनालॉग वर्ल्ड है। प्रकृति ने हमें एक तय गति दी है। हमें उसी अनुसार चलना है, उससे तेज नहीं। तेज मत भागिए बल्कि प्रकृति से मिली गति से तालमेल मिलाकर चलिए।

❖ सफलता तुरंत नहीं मिलती है। आज का समय भले ही डिजिटल का हो लेकिन जिंदगी डिजिटल नहीं है। वह एनालॉग वर्ल्ड है। धैर्य रखिए और अपनी गति से ही चलिए। धैर्य एक तोहफा है, उसे अपनाएं।

❖ जिंदगी में हार्ड वर्क से बचनः का कोई उपाय नहीं है। उनके पति नारायण मूर्ति आज एक सफल व्यक्ति हैं लेकिन आज भी वे सप्ताह में 90 घंटे से ज्यादा काम करते हैं। इससे कम घंटे उन्होंने काम किया ही नहीं। इससे ज्यादा ही घंटे वे काम करते हैं। सफलता केवल और केवल हार्ड वर्क में ही है।

❖ आग, आग को नहीं बुझा सकती है। सिर्फ पानी से ही कुछ अंतर पड़ेगा।

❖ सोच हो पर उस पर काम न किया जाए तो ये बस सपना ही रह जाएगी। लेकिन सोच और काम को मिलाकर दुनिया बदली जा सकती है।

❖ युवाओं को परिस्थितियों से भागना नहीं चाहिए। आप पैदा होते ही सफल नहीं हो जाएंगे। इसमें समय लगेगा। जरूरी है कि आपका समय के साथ तालमेल सही हो।

❖ कोई भी व्यक्ति सुपर मैन या वूमन नहीं होता है। हर व्यक्ति की अपनी एक खासियत होती है। आपने आप को पहचानिए। आप जैसे हैं उसे वैसे ही स्वीकार करिए और खुश रहिये।

❖ अपने दिमाग को हर परिस्थिति में सकारात्मक रखिए। समाज की सकारात्मकता में योगदान कीजिये। ऐसा करने से आपको अच्छा महसूस होगा।

❖ आपको लगता है कि आप बहुत अमीर हैं तो आपके अंदर मानवता होना जरूरी है। तभी आप सही मायने में एक सफल और खुश इंसान बन सकते हैं।

❖ जीवन के कई रंग हैं। जीवन में आने वाली हर विविधता और एकता को हमेशा सेलिब्रेट करिये। यह भी अपने आप को खुश रखने का बहुत आसान तरीका है।

❖ **सफल होना है तो मन में धैर्य लाओ। आत्मविश्वास अपने आप आ जाएगा। ऐसे में कोई बात ऐसी नहीं रहेगी, जो आपको पीछे रखेगी। सभी मुश्किलों का सामना केवल धैर्य से ही किया जा सकता है।**

❖ सुधाजी के व्यक्तित्व के कई आयाम हैं, जिनका संबंध सीधे समाज से ही है। एक कमरे में अपने जीवनसाथी के साथ जीवन का श्रीगणेश करने वाली सुधाजी राज्यसभा में सांसद भी बनीं। इस बीच पूरे जीवन में ऐसा कोई पड़ाव नहीं आया, जब सुधाजी ने खुद को पीछे रखा हो। अरबों की दौलत होने के बाद भी एक सादगी के साथ आप जीवन जीते हुए आज भी सामाजिक कार्य कर रही हैं। एक आदर्श महिला के सारे चरित्रों को वे आज भी पूरी ईमानदारी से जी रही हैं। सुधाजी ने काशी में अपनी प्रिय वस्तु साड़ी नहीं खरीदने का संकल्प लेकर यह भी साबित कर दिया कि वे केवल भौतिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक स्तर पर भी एक आदर्श स्थिति में ही हैं। भारतीय संस्कृति और दर्शन में बसी सुधाजी वास्तव में आज के समय में आदर्श महिला का प्रतिनिधित्व करती हैं और नारी शक्ति का वास्तविक प्रतीक हैं।

प्रकृति माँ का आँचल

डॉ सोनल मेहता, भोपाल

माँ यह शब्द सुनते ही मन में सुरक्षा, स्नेह और बलिदान का एक अदृश्य आँचल फैल जाता है। माँ हमारी पहली गुरु, पहली मार्गदर्शिका, और जीवन की पहली पाठशाला होती है। लेकिन क्या कभी सोचा है कि प्रकृति भी माँ की तरह ही हमारा पालन-पोषण करती है? धरती की गोद, नदियों का अमृत, और वनों का स्नेह–सब हमें उस माँ की याद दिलाते हैं जो बिना कुछ मांगे, हमें सब कुछ देती है।

जब सुबह की पहली किरण हमें जगाती है, तो लगता है जैसे प्रकृति माँ हमें धीरे से कह रही हो, जागो, मेरे बच्चों, तुम्हारे लिए मैंने दिन सजा दिया है। जब ठंडी हवा हमारे चेहरे को छूती है, तो यह माँ की ममता की तरह ही सुखद लगती है। और जब बारिश की पहली बूँदें धरती को भिगोती हैं, तो वह दृश्य ऐसा लगता है मानो माँ हमें आशीर्वाद दे रही हो।

माँ और पर्यावरण -एक अनोखा रिश्ता

माँ और पर्यावरण का रिश्ता गहराई और त्याग से भरा हुआ है। जैसे माँ अपनी हर इच्छा का त्याग कर बच्चों के सपने पूरा करती है, वैसे ही प्रकृति माँ अपने संसाधनों को हमें सौंप देती है। धरती माँ हमें अनाज देती है, नदियाँ पानी का उपहार लाती हैं, और वायु जीवन के लिए साँसों का संदेश बनकर हमारे साथ चलती है। लेकिन हम, उसके अपने बच्चे, उसके इस निस्वार्थ प्रेम का आदर करना भूल गए हैं। माँ को दर्द हो, तो वह चेहरे पर नहीं लाती। लेकिन उसकी आँखों की कोरों में वह पीड़ा झलक जाती है। आज पर्यावरण माँ भी ऐसी ही पीड़ा से गुजर रही है। कटते जंगल, सूखती नदियाँ, और प्रदूषित हवा–सब माँ की चुप पुकार हैं, जिसे सुनना हमारी जिम्मेदारी है।

माँ का आँचल और प्रकृति की गोद

माँ का आँचल बच्चे के लिए सबसे सुरक्षित जगह होती है। वहाँ डर और दुःख का कोई स्थान नहीं होता। ठीक इसी तरह, पर्यावरण की गोद भी हमें सुरक्षा देता है। यह हमें आश्रय, पोषण और जीवित रहने का हर साधन प्रदान करता है। लेकिन जरा सोचिए, अगर माँ का आँचल फट जाए या पर्यावरण की गोद खाली हो जाए, तो क्या हम जी पाएँगे? क्या हम अपनी पीढ़ियों को वह सुखद संसार दे पाएँगे जो हमें मिला है?

माँ और पर्यावरण का संदेश

माँ हमें सिखाती है कि हर चीज का सम्मान करना चाहिए। भोजन की एक रोटी हो या एक बूंद पानी, वह सिखाती है कि इन्हें व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। प्रकृति माँ भी हमें यही पाठ पढ़ाती है। वह कहती है, मेरे संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करो। जो मैं तुम्हें दे रही हूँ, वह तुम्हारे जीवन का आधार है। लेकिन आज हम न माँ की सुनते हैं और न प्रकृति की। माँ की बात को अनसुना करना तो एक बच्चे की भूल है, पर प्रकृति की अनदेखी करना हमारे पूरे अस्तित्व को खतरे में डालता है।

माँ की तरह देखभाल करें

जैसे हम अपनी माँ का ख्याल रखते हैं, वैसे ही हमें पर्यावरण का भी ख्याल रखना होगा। वृक्षारोपण करना, पानी बचाना, और प्रदूषण कम करना यह सब प्रकृति माँ के प्रति हमारी श्रद्धा के छोटे-छोटे कदम हो सकते हैं। माँ अपने बच्चों को सिखाती है कि रिश्तों को कैसे संजोना है। हमें भी यह समझना होगा कि पर्यावरण के साथ हमारा रिश्ता कितना गहरा है। यह रिश्ता केवल लेने का नहीं, बल्कि लौटाने का भी है। माँ अपने बच्चों से प्रेम और सम्मान चाहती है, और यही पर्यावरण माँ भी हमसे अपेक्षा करती है।

एक भावपूर्ण आह्वान

आज जब भी आप किसी पेड़ की छाँव में बैठें, नदी का पानी पीएँ, या ताजी हवा में साँस लें, तो अपनी आँखें बंद करके प्रकृति माँ को धन्यवाद दें। उनसे वादा करें कि आप उनका आँचल हमेशा हरा-भरा रखेंगे। जैसे माँ का प्यार अनमोल है, वैसे ही प्रकृति माँ का योगदान भी। अगर हम अपनी माँ की तरह पर्यावरण माँ का भी सम्मान करेंगे, तो यह धरती हमेशा हमारे और हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए सुखदायी बनी रहेगी। माँ की ममता और प्रकृति के आँचल का संरक्षण हमारा धर्म है। आइए, इसे निभाएँ। माँ और पर्यावरण को प्रेम और आदर देना न केवल हमारा कर्तव्य है, बल्कि हमारे अस्तित्व का आधार भी।

जननी होना प्रकृति है, माँ होना संस्कृति

पं. श्याम मनावत

एक स्त्री की पूर्णता तब मानी गई, जब वह एक संतान का सृजन करती है। जब वह अपने प्राण दांव पर लगाकर प्रसव की असह्यपीड़ा में से एक शिशु को जन्म देती है, तब वह जननी बनती है। नौ मास शिशु को गर्भ में रखना, प्रसव में प्राणों को दांव पर लगाना और वक्षस्थल के रक्त को अपनी ममता से दूध में रूपांतरित कर दे, वह जननी है इसलिए भगवान श्री राम कहते हैं कि जननी जन्मभूमिश्च गरीयसी। जननी की अपनी महत्ता है, परंतु एक स्त्री का पूर्ण होना केवल जननी होने पर पूर्ण नहीं होता, बल्कि उसे माँ बनना होगा। जननी होना एक प्राकृतिक और शारीरिक घटना है, परंतु माँ होना एक सांस्कृतिक अनुष्ठान है। जननी तो नौ माह में बना जा सकता है, परंतु माँ बनने में उन्नीस वर्ष लग जाते हैं। बालक को मनुष्य का आकार जननी देती है, परंतु उसे मानवता के संस्कार माँ देती है।

माँ तन की जन्मदाता ही नहीं, मन की निर्माता भी है। माँ अपनी संतान को केवल आहार ही नहीं देती, बल्कि विचार भी देती है। माँ केवल देह ही नहीं गढ़ती, अपितु उसमें नेह भी भरती है। कोई शकुंतला जब सिंह के दांत गिनाकर बच्चे को दूध पिलाती है, तो उसके पुत्र भरत को वह पुरुषार्थ और पराक्रम भी पिलाती है। जब कोई व्यक्ति किसी को चुनौती देता है या ललकारता है, तो वह माँ के दूध को ही ललकारता है। वह कहता है कि यदि माँ का दूध पिया है, तो आजा मैदान में। अर्थात व्यक्ति को चुनौती पिता की खून पर नहीं, बल्कि माँ के दूध को मिलती है और व्यक्ति को भी अपने माँ के दूध की लाज रखना पड़ती है।

एक बिल्ली, एक चिड़िया और एक बंदरिया अपने बच्चों को दूध पिलाती है, परंतु यदि किसी अन्य बच्चों की माँ मर जाए तो बिल्ली, चिड़िया और बंदरिया उसके बच्चे का पालन नहीं कर सकती है, क्योंकि इनका दायरा केवल अपने पेट और कोख तक सीमित होता है। किसी अन्य के बच्चे का पालन पोषण तो कोई मनुष्य ही कर सकता है। महारानी कैकई और महारानी गांधारी इसलिए निंदनीय है कि उन्होंने केवल अपनी अपनी कोख के बच्चों का ध्यान रखा, परंतु कुल के बच्चों को अपना नहीं माना। इस संकीर्ण मानसिकता के कारण निंदा की पात्र बनी।

माँ केवल वह नहीं, जो तन को जन्म दे बल्कि तन को जन्म न देकर भी माँ बना जा सकता है। भारतीय संस्कृति में माँ यशोदा इसका उत्तम दृष्टांत है। माँ यशोदा जननी तो नहीं बनी, परंतु वह भगवान कृष्ण की माँ के रुप में विश्व वंदनीय है। रामकथा में भी भगवती जानकी, लक्ष्मण की माँ कही गई है । गोस्वामी जी लिखते हैं कि तात तुम्हारी मातु वैदेही पिता राम सब भांति सनेही, जबकि जानकीजी आयु में लक्ष्मण से छोटी है, फिर भी वे माँ है क्योंकि उनकी माँ जैसी भूमिका है, क्योंकि माँ एक दायित्व है, माँ एक कर्तव्य है, माँ एक भाव है, माँ एक समर्पण है। माँ जैसा कोई देवता भी नहीं, न मानो पर देवता।

धेनु ही धर्म

मुकेश मोलवा

नंदा सुमनसा सुशीलका वंदिनी,
कामीनी मेध्या हिरण्या नंदिनी।
धनदा दीर्घश्रृंगा वामनलम्बिका,
सकलप्रिया अरुणा गौरम्बिका।
तारा तोयिका सुपत्रिका धर्मदा,
शांता हरिद्रावर्ण सुनाशा नर्मदा।
सुपीक्षिका मनोरमा नीला जया,
चारुचम्पका शंखनी दूरविषहया।
भिन्नवर्ण कुंडोघनी धेनु अभिनता,
पंचवर्णिका स्वरूपा गौ विनता।
सुभद्रा बहूधा दिप्त आलोक मे,
माँ सुरभि संग वृषभ गौ लोक मे।
पर्जण्य नामक देवता क्षीरधार
कर्ण प्रदेश मे अश्विनी कुमार।
थनो मे लहराते चारो ही समुद्र,
पृष्ठभाग मे एकादश महारूद्र।
ललाट मे महागौरी माँ पार्वती,
नसीका मे कार्तिकेय सेनापति।
मुख मे वैदिक ऋचा की श्वास,
जिव्हा पर साक्षात् शारदा वास।

सहारा

सुधाकर मिश्र, महू

मां अब तुम्हे काम करने की कोई आवश्यकता नहीं है। अब तुम्हे आराम और केवल आराम करना है। अब अपने संघर्ष को विराम दो। अब तुम्हारा बेटा इस लायक हो गया है कि उसकी मां आराम का जीवन जिए। राजा एक सांस में यह सब बोल गया।

बेटा, मेरी तो आदत बन चुकी है यह सब करने की। चुपचाप बैठ कर अपने से न्याय नहीं कर पाऊंगी, ऊपर से दस बीमारियां जकड़ लेंगी वो अलग। अब तू आपने पांव में खड़ा हो गया है, यही मेरे लिए सबसे बड़ा आराम है।

मेरी प्यारी मां कहकर राजा मां से लिपट जाता है।

मीनू पुरानी यादों में खो जाती है...विवाह के साल भर बाद ही वह अपने पति को खो देती है। आस पड़ोस की औरतों के ताने सुनकर आत्महत्या तक की सोच लिया था। भला हो उसकी सास का, जो अपने बेटे को खोने के बाद भी मीनू के साथ चट्टान की भांति खड़ी रहीं। मीनू के सुरक्षित भविष्य के मद्देनजर उसे खिलौने और अन्य सजावटी सामानों की कारीगरी का प्रशिक्षण दिलवाकर, उसका भविष्य सुरक्षित कर दिया। अपनी गृहस्थी के पटरी पर आने के बाद अनाथालय से राजा को गोद लेकर अपना मातृत्व धर्म निभाया। साथ ही उसे शिक्षित कर एक जिम्मेदार नागरिक बनाया। राजा से उसने कसम ली की वह भी मां के पदचिन्हों पर चलेगा।

नदी माँ और मानव

डॉ. सुनीता फडनीस

मानव, कभी नदी के किनारे बैठता था, तो कभी नाव की सैर किया करता था। वह आज बैठा हुआ उसके बचपन के दिनों की भरी-भरी पानी से लबालब, उछलती, उफनती नदी माँ को याद कर रहा था। जब वह साफ नीले आकाश की छवि नदी में देखता था। सूरज की सुनहरी किरणें नदी के जल पर गिरकर, लहरों को वही सुनहरा रंग दे देती थी। जिसके आँचल में वह अक्सर अठखेलियाँ करता रहता था।

अब नदी माँ का पानी गंदा हो गया है। उसमें नीले आकाश की वह मनमोहक छवि नहीं दिखती है । दिखती है, तो पतली सूखी सी धार, जिसमें शैवाल, जलकुंभी भरी पड़ी है। मछलियाँ शनैः शनैः समाप्त होने लगी हैं।

मानव नामक पुत्र ने नदी की शाखाओं को पाट दिया है, और अपना घर बना कर, इमारतें, फैक्ट्रियां बना ली हैं। मानव अछूता है माँ के दर्द से । उसे नदी माँ के सिमटने का एहसास ही नहीं है। ना ही उसे माँ का कराहना सुनाई पड़ता है । वह मदमस्त है, उसके धन लाभ से, उसकी भरी हुई जेब से। साथ ही फैक्ट्री का विषाक्त जल भी वह आराम से नदी में बहा देता है।

नदी माँ मानव को बहुत लाड करती थी । आज उसने देखा की माँ बात नहीं कर रही और शांति से, उदास सी पतली धार में बह रही है। मानव नदी को कहता है- **तुम इतनी दुखी क्यों हो माँ ?**

नदी कहती है- एक तरफ मुझे माँ कहते हो और दूसरी ओर मेरा विस्तार खत्म करते हो ?

माँ इतनी नाराजगी ठीक नहीं

हाँ मैं नाराज हूँ , दुखी हूँ और इसलिए कभी-कभी अपना रौद्र रूप भी दिखा देती हूँ, तटबंधों को चीर कर बहा ले जाती हूँ।

मानव कहने लगा - लेकिन माँ मैंने तो समाज के भले के लिए यह फैक्ट्री डाली है।

देखो बेटा- तुमने मुझे कितना गंदा कर दिया है।

पर माँ मैं तुम्हारे किनारे, लोगों के उपयोग की वस्तुऐं बनाता हूँ पर तुम फैक्ट्री से निकलने वाले गंदे पदार्थों से भरा विषाक्त जल मुझ में बहा देते हो। इतने विकास के बाद भी, लोग मेरे ही किनारे मल- मूत्र विसर्जित करते रहते हैं। कपड़े धोते हैं, मवेशियों को नहलाते हैं। सोचो मेरा मन और मेरा तन कितना खराब और दूषित हो जाता है।

माँ, जनसंख्या बढ़ती जा रही है। मैं करूँ तो क्या करुँ ? इतना गुस्सा ना करो।

तो क्रोध करने का, लड़ाई- झगड़े का करने का हक सिर्फ क्या तुमको है? तुम तो मुझे माँ कहते हो ना ?

हाँ माँ , मैं तुम्हारा सम्मान करता हूँ ,पूजा भी करता हूँ , और चुनरी भी उढाता हूँ।

झूठ! झूठ बोलते हो तुम, यह तो सिर्फ दिखावा है। तुम सिर्फ मुझसे लेना जानते हो। यदि मेरा एहसान मानते हो तो कुछ लौटाना भी सीखो। नदी बिफर गई।

शांत रहो माँ

बेटा , मेरा ख्याल नहीं रखोगे तो एक दिन मेरा अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा और फिर तुम सिर्फ सिर धुनोगे।

हाँ माँ, तुम सही बोल रही हो, मैं सुधरने की कोशिश करूंगा। खुद भी समझूँगा, और सबको समझाऊँगा कि माँ के बिना बच्चे अस्तित्वहीन हैं।

मुझे पता चल गया है कि आज यदि तुम समाप्त हो जाओगी तो कल मैं और मेरा परिवार , समाज भी समाप्त हो जाएगा।आखिर इतिहास अपने आप को दोहराता है ।

परंपरागत पूजन से सदैव रहती है मां कुलदेवी की कृपा

रिंकेश बैरागी, झाबुआ

भारतीय समाज में कुलदेवी, या कुलमाता का परंपरानुसार पूजन करने का विधान है, कुलमाता के विधिविधान से किए गये पूजन में कुल की समृद्धि, उन्नति, प्रगति और निरोगी काया का विज्ञान समाया हुआ है। **मालवा क्षेत्र की बात करें तो यहां के समाज द्वारा कुलमाता को मायमाता के नाम से भी संबोधित किया जाता है, जिसकी पूजन विधि की परंपरा में कुल और उससे जुड़े सभी परिवार की मर्यादा बनी रहती है, कुल को माता का वात्सल्य प्राप्त होता है और घर परिवार के रोग, दोष का नाश होता है। समाज में प्रत्येक कुल की देवी अलग-अलग होती है,** उसी तरह कुल देवता भी सभी के भिन्न होते है और ऐसे ही सभी कुल के भैरव भी पृथक-पृथक होते है। बहुताय समाज में परीमाता और सतीमाता के साथ कुल के झुझारदेव भी होते है। कुलमाता या कुल की देवी वह होती है जिससे उस कुल की उत्पत्ती हुई होती है, और उस कुल की परंपरा, कुलदेवी पूजन उस घराने के प्रबुद्धजनों ने बहुत ही समझदारी से बनाया होता है, जिसमें वंशावली अनंत कालो तक निरोगी रहे ऐसी वैज्ञानिकता का समावेश किया गया होता है। परिवार में किसी प्रकार का कोई भी कार्यक्रम किया जाता है तब कुलदेवी को सर्वप्रथम आमंत्रित कर उन्हें भोग लगया जाता है, और कुलमाता के पूजन पर माता के आशिर्वाद से कार्यक्रम सहर्ष संपन्न हो जाता है। परिवारों में आने वाली विपदा, कष्ट और रोगों से छुटकारा पाने के लिए भी कुलदेवी का पूजन विधि विधान से किया जाता है।

कुलदेवी पूजन से कष्ट निवारण होता है यहां तक कि, रोगों से भी मुक्ति मिलती है, क्योंकि परंपरागत पूजन विधि में उस कुल को वातावरण से साथ अनुकुलित करने के लिए हवन, यज्ञ किया जाता है जिससे नकारात्मकता समाप्त होती है और मानसिकता से अवसाद दुर हो कर मष्तिष्क बल में बढ़ौत्तरी होती है, साथ ही साथ कुलमाता को चढ़ने वाला भोग प्रसाद भी उस गोत्र के लोगों की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देने वाला होता है, प्रसाद ग्रहण

करने से शारिरीक कष्ट प्रभावित होता है और पीढ़ादायक रोग समाप्त होता है। इसीलिए कहा जाता है कि, कुल की मर्यादा और कुल को बनाए रखने के लिए कुलदेवी का पूजनपाठ समयानुसार करना चाहिए। वर्तमान परिवेश में हम कुलदेवी-देवता के पूजन से दूर होते जा रहे हैं, हम आधुनिकता की अंधी दौड़ में आदिकाल से चली आ रही पूजन विधि को पीछे कर उसकी वैज्ञानिकता को समाप्त कर रहे हैं और इसी कारणवश आज के दौर में हर घर में पहला सुख निरोगी काया नहीं है। दूसरा मुख्य कारण ८०० वर्षो से अधिक की पराधिनता भी है, जिसने हमारी मानसिकता को बदलने की भरपूर कोशिश की और वे उसमें बहुत हद तक सफल भी हुए किंतु जब हम कुल की सार्थकता को देखते है तब उसमें एक बिखराव सा लगता है। बिखरे हुए कुल को फिर से एकजुट करने का सबसे सरल उपाय सामुहिक रुप से कुलदेवी का परंपरागत पूजन से किया जा सकता है।

जिस प्रकार परिवार में बुजुर्ग दादीमां अपने परिवार को संजोए रखती है मौसम के अनुरुप खाद्य पदार्थों में ऐसे भोजन का समावेश करती है जिससे प्रत्येक व्यक्ति की काया स्वस्थ्य रहकर प्रसन्न चित्त रहें, उसी प्रकार कुल की उत्पत्ती करने वाली कुलमाता भी अपने कुल की रक्षा, सुरक्षा सुनिश्चित किए रहती है, उनकी पूजन में ही कुल में निरंतर विकास की और अग्रसर होने की प्रेरणा प्राप्त होती रहती है। हिंदी साहित्य में 9 रस होते थे जिसके बाद मां की ममता के रस को भी जोड़ा गया, जो दसवां रस कहलाया, जिसे वात्सल्य रस कहा जाता है। एक मां अपने बच्चें से प्रेम करती है, उसके जन्म से उसका रखरखाव ध्यान से करती है उस पर आने वाली विपत्ती का विनाश करती है। विपदा के समय उसमें शक्ति का वर्धन करती है और उसी जीवनपथ पर बन रहने के लिए सक्षमता प्रदान करती है, मायमाता हमारे लिए वहीं माता है जो हमारे क्रमबद्ध उन्नती में सहायक होती है।

कुलमाता की पूजन परंपरा या संस्कृति को जीवन की अभूतपूर्ण जटिलताओं को समझकर बनाया गया है, स्वस्थ वंशावली को ध्यान में रखते हुए इसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाया गया है। अब हमारा कर्तव्य है कि पिछड़ गई इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाली परंपरा को पुर्नजागरण कर कुलदेवी पूजन को पुनः प्रारंभ किया जाए, जिससे प्रत्येक परिवार पहले की तरह फिर से स्वस्थ रहकर उन्नती की ओर अग्रसर रहें।

माँ

- नरेश शांडिल्य, दिल्ली

मंदिर की देहरी भजन गाती मंडली
दाना चुगती चिड़िया तुलसी का बिरवा
पीपल का पेड़ छड़ी वॉकर
अस्पताल का स्ट्रेचर... जब-जब भी दिखते हैं
याद आने लगती है -
माँ...

सब छोड़ गई माँ - अपना हॉल सा कमरा
ठसाठस अलमारी लदी-फदी टाँड
छापे लगी दीवारें भगवान का आला
दवाइयों से भरी स्लैब छोटे-बड़े मजबूत
पुराने ट्रंक और बक्से...
और उनमें बंद बेशुमार चीजें -
नये-पुराने सिक्कों की थैली
पोटलियों में बँधे मन्नत के पैसे बेटियों को देने के लिए
नीम के सूखे पत्तों में लिपटीं जुटाई-खरीदी साड़ियाँ
पीतल और काँसे के पुराने लोटे-गिलास-थालियाँ
हमारे बचपन के गंडे-ताबीज-तगड़ियाँ
यहाँ तक कि बचपन में जिनसे खेला करते थे हम
वे कंचे और लट्टू भी... सब छोड़ गई माँ -
अपनी यादों की तरह !

आज... जामुन खरीदते वक्त
आँखें भर आईं मेरी कितने चाव से खाती थी जामुन
माँ ...

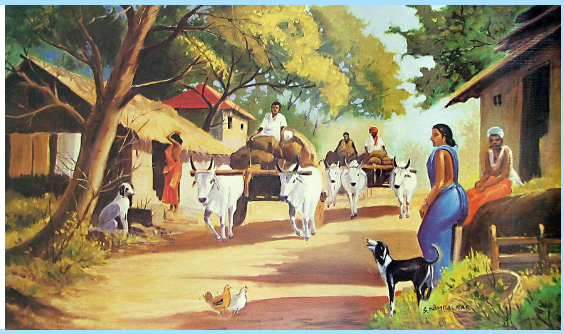

मातृभूमि की संकल्पना

अनिल वानखेडे, बुरहानपुर

मातृभूमि की संकल्पना एक ऐसी भावना है जो हमें अपने देश, अपनी जमीन, और अपनी संस्कृति से जोड़ती है। यह एक ऐसी भावना है जो हमें अपने देश के प्रति गर्व, सम्मान, और समर्पण की भावना से भर देती है।

मातृभूमि की संकल्पना का अर्थ है।

अपने देश को अपनी माता के रूप में देखना और उसके प्रति वही प्यार, सम्मान, और समर्पण दिखाना जो हम अपनी माता के प्रति दिखाते हैं। यह एक ऐसी भावना है जो हमें अपने देश की सेवा करने, उसकी रक्षा करने, और उसके विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित करती है। हमारे दैनिक जीवन में, धरती को माँ मानना तब शुरू होता है जब हम जागते हैं। हिंदू सुबह उठते ही उसे **समुद्र वासने देवी पर्वता स्थान मंडले** के रूप में याद करते हैं और पद स्पर्श क्षमास्वमे कहकर उसके पैर छूने के लिए माफ़ी मांगते हैं। इस तरह का नज़रिया प्रकृति और आस-पास के वातावरण के प्रति सम्मान को दर्शाता है और प्रेरित करता है। और ऐसे नज़रिए वाले लोग सृष्टि के अविभाजित हिस्से की तरह जीते हैं, न कि उन लोगों की तरह जो इसे जीतने शासन करने आए हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि आज इस तरह के नज़रिए की कमी है, इसलिए हम समाज में कई समस्याएँ देखते हैं जैसे पारिस्थितिकी असंतुलन और मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्यों का शोषण करने की कोशिश। इस नज़रिए को अपनाना और इसे हर रोज़ जीने की कोशिश करना, इन समस्याओं का समाधान है।

वेद में केवल भूमि ही नहीं, बल्कि राज्य समाज की भी देवी-माता के रूप में प्रशंसा की गई है । वागाभरीणी सूक्त के तीसरे मंत्र में माँ कहती हैं ! **अहम राष्ट्री** । वह आगे कहती हैं कि वह लोगों की भलाई और समृद्धि का कारण बनती हैं, मनुष्यों और देवताओं के सभी कार्य उनसे प्रेरित होते हैं, और वह उन कार्यों का उद्देश्य हैं।

मातृभूमि की संकल्पना का महत्व इस प्रकार है-

1. राष्ट्रीय एकता - मातृभूमि की संकल्पना हमें अपने देश के साथ एकता की भावना से भर देती है। यह हमें अपने देश के विभिन्न समुदायों, संस्कृतियों, और धर्मों के साथ एकता की भावना से जोड़ती है।

2. देशभक्ति- मातृभूमि की संकल्पना हमें अपने देश के प्रति देशभक्ति की भावना से भर देती है। यह हमें अपने देश की रक्षा करने, उसकी सेवा करने, और उसके विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित करती है।

3. सांस्कृतिक विरासत - मातृभूमि की संकल्पना हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति गर्व और सम्मान की भावना से भर देती है। यह हमें अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, और अपने रीति-रिवाजों को संरक्षित करने और उनका प्रसार करने के लिए प्रेरित करती है।

4.विकास और प्रगति - मातृभूमि की संकल्पना हमें अपने देश के विकास और प्रगति के लिए काम करने के लिए प्रेरित करती है। यह हमें अपने देश की आर्थिक, सामाजिक, और राजनीतिक व्यवस्था को सुधारने के लिए काम करने के लिए प्रेरित करती है।

मातृभूमि की संकल्पना को बढ़ावा देने के लिए हमें निम्नलिखित कदम उठाने चाहिए -

1.शिक्षा - हमें अपने बच्चों को मातृभूमि की संकल्पना के बारे में शिक्षित करना चाहिए। हमें उन्हें अपने देश के इतिहास, संस्कृति, और रीति-रिवाजों के बारे में सिखाना चाहिए।

2. सांस्कृतिक कार्यक्रम - हमें सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए जो मातृभूमि की संकल्पना को बढ़ावा देते हैं। हमें अपने देश के संगीत, नृत्य, और कला को प्रदर्शित करना चाहिए।

3. देशभक्ति कार्यक्रम - हमें देशभक्ति कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए जो मातृभूमि की संकल्पना को बढ़ावा देते हैं। हमें अपने देश के झंडे को फहराना चाहिए और अपने देश के राष्ट्रीय गीत को गाना।

4.अंततः जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

मातृभूमि की संकल्पना एक ऐसी भावना है जो हमें अपने देश के प्रति जिम्मेदार बनाती है और हमें उसके प्रति समर्पित करने के लिए प्रेरित करती है। हमें अपने देश की संस्कृति, इतिहास, और परंपराओं का सम्मान करना चाहिए और अपने देश के प्रति गर्व और सम्मान की भावना रखनी चाहिए।

भारतीय समाज में माता का स्थान

सनी राजपूत, उज्जैन

भारतीय समाज में माता का स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण और सम्मानजनक रहा है। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में माताओं को विशेष आदर दिया गया है। भारतीय समाज में माँ को घर-परिवार की धुरी माना जाता है, और उसकी भूमिका केवल बच्चों की देखभाल तक सीमित नहीं है, बल्कि वह बच्चों के मानसिक, भावनात्मक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास में भी गहरी भूमिका निभाती है। इतिहास में हम कई उदाहरणों को देख सकते हैं जहां भारतीय माताओं ने अपने बच्चों को विशेष रूप से आकार दिया, उनके जीवन के मार्गदर्शक बने और भारतीय समाज और संस्कृति में अमूल्य योगदान दिया। इस लेख में हम इतिहास में भारतीय माताओं के अपने बच्चों पर प्रभाव के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरणों और उनके योगदान पर चर्चा करेंगे।

1. माँ गंगा और भगीरथ

भारतीय इतिहास में माँ गंगा का स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। वे सिर्फ एक नदी नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और जीवन की प्रतीक मानी जाती हैं। गंगा के साथ-साथ उनके पुत्र भगीरथ की कहानी भी महत्वपूर्ण है। भगीरथ ने माँ गंगा से पृथ्वी पर आकर मानवता को लाभ पहुँचाने का आग्रह किया था। गंगा की आशीर्वाद से भगीरथ ने एक महान कार्य पूरा किया, और उनका यह प्रयास भारतीय संस्कृति में तप, विश्वास, और माँ के प्रति श्रद्धा का प्रतीक बन गया। यह कहानी इस बात का प्रतीक है कि भारतीय माताएँ अपने बच्चों को धार्मिक, मानसिक और नैतिक दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

2. माँ जीजाबाई और शिवाजी महाराज

माँ जीजाबाई और उनके बेटे शिवाजी महाराज के संबंध भारतीय इतिहास में एक प्रेरणास्त्रोत माने जाते हैं। जीजाबाई ने शिवाजी को अपने जीवन के शुरुआती वर्षों में धर्म, संस्कृति, कर्तव्य, और भारतीय वीरता के महत्व से परिचित कराया। उनके सशक्त नेतृत्व के कारण ही शिवाजी महाराज ने अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता और अस्मिता की रक्षा की। जीजाबाई की ममता और दृढ़ता ने शिवाजी महाराज को एक महान शासक और योद्धा के रूप में ढाला। उनकी शिक्षा और संस्कारों ने एक स्वतंत्र भारत की नींव रखी। जीजाबाई की मातृत्व की शक्ति ने एक बच्चे को अपने समय का महान शासक बना दिया।

3. माँ अहिल्याबाई होलकर

माँ अहिल्याबाई होलकर, इंदौर की रानी और महान शासिका थीं। उनका जीवन मातृत्व, शिक्षा और धर्म के प्रति समर्पण का प्रतीक है। अहिल्याबाई ने अपने बेटे मल्हार राव होलकर के बाद राज्य की बागडोर संभाली और एक मजबूत प्रशासन स्थापित किया। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, और समाज सेवा के क्षेत्र में कई सुधार किए। उनके नेतृत्व में, इंदौर और आसपास के क्षेत्रों में सांस्कृतिक और धार्मिक समृद्धि आई। अहिल्याबाई का प्रभाव उनके बच्चों के अलावा समग्र समाज पर था,

और उनकी शक्ति और दृष्टिकोण ने इतिहास में उन्हें एक अमिट स्थान दिलाया।

4. माँ द्रौपदी और उनके पुत्र

महाभारत की प्रसिद्ध पात्र द्रौपदी को भारतीय माताओं का आदर्श माना जाता है। उन्होंने अपने पाँचों पुत्रों को युद्धकला, नैतिकता, और धर्म का पाठ दिया। उनका समर्पण और त्याग भारतीय महिलाओं के लिए एक उदाहरण है। द्रौपदी ने अपने बच्चों को न केवल शारीरिक, बल्कि मानसिक रूप से भी मजबूत बनाया। उनके बच्चों ने महाभारत युद्ध में वीरता दिखाई, और उन्होंने धर्म और कर्तव्य के मार्ग पर चलने का प्रयास किया। द्रौपदी का मातृत्व सिर्फ उनकी व्यक्तिगत देखभाल तक सीमित नहीं

था, बल्कि वह अपने बच्चों के जीवन में नैतिक और धार्मिक दिशा देने वाली शक्ति थीं।

5. माँ सुधा मूर्ति और उनके बच्चें

समकालीन भारतीय समाज में भी माताओं का बच्चों पर गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। प्रसिद्ध लेखक और समाजसेवी सुधा मूर्ति की भूमिका उनकी संतान, विशेष रूप से उनके बेटे, नारायण मूर्ति (इन्फोसिस के सह-संस्थापक) के जीवन में महत्वपूर्ण रही है। सुधा मूर्ति ने अपने बच्चों को सामाजिक जिम्मेदारी, नैतिकता, और कड़ी मेहनत के महत्व से अवगत कराया। उन्होंने अपने परिवार को सरल और सादा जीवन जीने की प्रेरणा दी। उनकी शिक्षा और संस्कारों ने उनके बच्चों को भारतीय समाज में एक सम्मानजनक स्थान दिलाया।

6. माँ रानी दुर्गावती और उनके वीर पुत्र

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में रानी दुर्गावती का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। रानी दुर्गावती, जिनका जन्म 16वीं शताब्दी में हुआ था, ने अपने पुत्र वीर नारायण को बहादुरी और प्रशासन की कला सिखाई। रानी दुर्गावती के नेतृत्व में, गोंडवाना राज्य ने मुगलों और अन्य आक्रांता शक्तियों से संघर्ष किया। रानी ने अपने पुत्र को देश की रक्षा और परिवार की प्रतिष्ठा बनाए रखने का महत्व समझाया। उन्होंने अपने बच्चों को युद्ध, साहस, और राष्ट्र प्रेम की शिक्षा दी, जो बाद में वीरता के रूप में प्रकट हुआ।

7. माँ रामकृष्ण परमहंस की पत्नी शारदामणि देवी

रामकृष्ण परमहंस की पत्नी शारदामणि देवी का जीवन भारतीय माता की विशेष भूमिका को प्रदर्शित करता है। उन्होंने अपने जीवन में धर्म, सेवा और त्याग की शिक्षा ली। उन्होंने अपनी आत्मीयता और भक्ति के साथ अपने परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाया। शारदामणि देवी का प्रभाव रामकृष्ण परमहंस और उनके अनुयायियों पर भी पड़ा, जिससे उन्होंने जीवन में संतुलन, शांति और ध्यान की दिशा अपनाई।

निष्कष- भारतीय इतिहास में माताओं का अपने बच्चों पर गहरा और व्यापक प्रभाव रहा है। माताओं ने न केवल अपने बच्चों के जीवन की नींव रखी, बल्कि उन्हें नैतिक, धार्मिक, और समाजिक दिशा भी दी। इन माताओं ने अपने संतान को शिक्षा, संस्कार, और प्रेरणा के माध्यम से भारतीय समाज को एक नया दृष्टिकोण दिया। भारतीय माताओं की यह भूमिका आज भी हमारे समाज में प्रासंगिक है और उनके योगदान को हम हमेशा याद रखते हैं।

सर्वदेवमयी माँ

जय शंकर पाठक 'प्रदग्ध'

माँ! आज तुम्हारे चरणों में,
यह गीत समर्पित करता हूँ।

यह मध्यरात्रि, यह अन्धकार,
ठहरी सुधियाँ, गूँजा दुलार।
मैं पथिक! थका, हारा, निराश,
तुम बनी मार्ग, तुम दिशाकाश।

मैं आज तुम्हारी ममता से -
ममता को उपमित करता हूँ।
माँ! आज तुम्हारे चरणों में,
यह गीत समर्पित करता हूँ।

मैं शिलालेख, तुम वर्ण-वर्ण,
मैं पौध नवल, तुम पर्ण-पर्ण।
तुमसे इस जीवन में प्रभात,
मैं पुष्प! और तुम पारिजात!

मैं आज तुम्हारे सौरभ से -
उपवन को सुरभित करता हूँ।
माँ! आज तुम्हारे चरणों में,
यह गीत समर्पित करता हूँ।

कामना मात्र मेरी अशेष,
देखूँ तुमको नित निर्निमेष।
करनी थी तुमसे और बात,
पर गुजर गई यह शुचित रात।

मैं आज तुम्हारे सपनों से,
निज सपने कुसुमित करता हूँ।
माँ! आज तुम्हारे चरणों में,
यह गीत समर्पित करता हूँ।

भारतीय संस्कृति में मातृत्व का महत्व

निलेश कटारा, झाबुआ

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति व सभ्यता है जिसे विश्व भर की सभी संस्कृति की जननी माना जाता है भारत हमेशा से धर्म अर्थ काम और मोक्ष की प्रति भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र रहा है। मां को मानवता की जन्मदात्री माना जाता है। मां ब्रह्मांड में ईश्वर की सबसे अच्छी रचना है मां शब्द अपने आप में ही परिपूर्ण है मां शब्द नारी को पूर्णताओं का बहुत करवाता है। **मां का अस्तित्व हर एक के लिए बहुत मायने रखता है क्योंकि कोई भी बच्चा अपनी सांस, पहला भोजन और अपने अस्तित्व के लिए जो भी जरूरी क्रिया होती है वह अपनी मां की कोख में ही करता है इसलिए हम सब का यह शरीर हमारी मां की देन है। गर्भ से ही बच्चे का मन के साथ भावनात्मक जुड़ा होता है एक तरफ से बच्चों के लिए उसकी मां ही भगवान होती है। कहते कि भगवान हर जगह नहीं हो सकते इसलिए उन्होंने मां बनाई। एक मां अपने बच्चों को अनकंडीशनल प्यार करती है** उस दिन से लेकर जब से मातृत्व का पहली बार एहसास होता है अपनी अंतिम सांस तक। मां बनने का एहसास बहुत ही सुखद होता है। मां अपने बच्चों की मां दर्शन संरक्षक होती है। मां बिना किसी शिकायत के अपने बच्चों के सब कुछ काम करती है अपने बच्चों की हर सुख सुविधा का ध्यान रखती है एक बच्चे को अच्छे संस्कार देने की जिम्मेदारी हो या फिर उसके स्कूल के होमवर्क हो हर काम को बहुत शालीनता से करती है। एक मां अपने बच्चों की पहली मित्र स्कूल और शिक्षक होती है जब कोई बच्चा छोटा होता है तो उसके लिए उसकी सारी दुनिया उसकी मां होती है मन ही उसकी पहले शिक्षक होते हैं क्योंकि बच्चा स्कूल जाने से पहले जो भी सिखाते हैं ज्यादातर अपनी मां से ही सीखते हैं।

मां का प्यार ऐसा होता है कि कई बार बच्चे शब्दों में अपनी बात नहीं कर पाते लेकिन एक मां उनकी भाषा समझ लेती है छोटे बच्चों के होठों पर ईश्वर का नाम उसकी मां होती है भारतीय संस्कृति में भी मन को बहुत महत्व दिया गया है वेदों पुराणों उपनिषदों धर्म ग्रंथो में मां की भूरि भूरि प्रशंसा की गई है वेदों में मातृ शब्द का अर्थ है

नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गतिः।नास्ति मातृसमं त्राण, नास्ति मातृसमा प्रिया।

महर्षि वेदव्यास **संकद पुराण**

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

मित्र, धन्य, धान्य आदि का संसार में बहुत अधिक सम्मान है। (किन्तु) माता और मातृभूमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊपर है।

परंपराओं और मूल्यों का संरक्षण

सांस्कृतिक विरासत को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने में माताएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं

कहानी सुनाना- माताएं पारंपरिक कहानियां, लोककथाएं और महाकाव्य साझा करती हैं, सांस्कृतिक मूल्य, नैतिक शिक्षा और ऐतिहासिक ज्ञान प्रदान करती हैं।

धार्मिक प्रथाएँ- माताएँ अपने बच्चों को धार्मिक अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों में शामिल करती हैं, जिससे उनमें सांस्कृतिक पहचान और अपनेपन की भावना बढ़ती है।

कला और संगीत- कई माताएं अपने बच्चों को नृत्य और संगीत जैसी पारंपरिक कलाओं से परिचित कराती हैं, जिससे इन सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण होता है।

माताएं अपने बच्चों के नैतिक दिशा-निर्देश और नैतिक संहिता को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं

ईमानदारी और सच्चाई- माताएं ईमानदारी और सच्चाई के महत्व पर जोर देती हैं तथा बच्चों को ईमानदार और नैतिक व्यक्ति बनना सिखाती हैं।

करुणा और उदारता- माताएं दयालुता और करुणा के कार्यों को प्रोत्साहित करती हैं, जिससे उनके बच्चों में सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना बढ़ती है।

बड़ों और शिक्षकों का सम्मान- बड़ों और शिक्षकों का सम्मान भारतीय संस्कृति में गहराई से समाया हुआ है। माताएँ अपने बच्चों में यह मूल्य भरती हैं, जिससे पदानुक्रम की भावना और अधिकार रखने वाले व्यक्तियों के प्रति सम्मान को बढ़ावा मिलता है।

अनुशासन और आत्म-नियंत्रण - माताएं मार्गदर्शन और अनुशासन प्रदान करती हैं, जिससे बच्चों को आत्म-नियंत्रण, जिम्मेदार व्यवहार और मजबूत कार्य नैतिकता विकसित करने में मदद मिलती है।

माँ शबरी की ममता

श्री गोपाल सोनी, उज्जैन

भारतवर्ष तपस्वियों, ऋषियों, महात्माओं की भूमि है। अनादि काल से यहां पर एक से बढ़कर एक महान तपस्वियों ने जन्म लेकर इस अपनी भक्ति और तपस्या के मानव जगत के सामने आदर्श प्रस्तुत किये हैं। इन्हीं तपस्यिों में से एक तपस्विनी ऐसी भी हैं जिनका नाम संपूर्ण भारतवर्ष में बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है वह है माता शबरी।

माता शबरी का जन्म भील समुदाय में हुआ था और उनके पिता भीलों के राजा थे। माता शबरी का असली नाम शबरी न होकर श्रमणा था। बचपन से ही माता शबरी करूणामयी थी। जब शबरी विवाह योग्य हुई तो उनके पिता ने उनके लिये वर ढूंढा। भील समुदाय की प्रथा के अनुसार विवाह में जानवरों की बलि देने की प्रथा है।

इस हेतु शरबी के पिता भी बलि देन के लिये कई जानवर लेकर आए लेकिन जब शबरी को इस बात का पता लगा तो उन्होंने सभी जानवरों भगा दिया और खुद भी वहां से भाग गई। घर से भाग जाने के बाद शबरी एक ऋषि मतंग मुनि के आश्रम में रहकर सेवा करने लग गई। मतंग ऋषि बहुत ही तपस्वी थे। एक दिन शबरी को उन्होंने कहा कि भगवान विष्णु के अवतार श्री राम जब धरती पर अवतरित होंगे तो इस मार्ग से होते हुए इस आश्रम पर अवश्य आएंगे और तुम्हें दर्शन प्रदान करेंगे। ऋषि के वचनों में विश्वास रखकर माता शबरी नित्य रूप से भगवान की प्रतीक्षा करने लगी। जिस स्नेह और करूणा के साथ माता अपने पुत्र के लिये भोजन तैयार करती है उसी स्नेह के साथ माता शबरी रोजना वनों में जाकर भगवान श्रीराम के लिये मीठे बैर तोड़कर लाती, प्रभु को बैर खट्टे न लगे इसके लिये खुद एक-एक करके सभ बैरों को चखती और एकत्रित करके लाती, आश्रम में आने वाले मार्ग पर रोजाना झाड़ू लगाकर उसको फूलों से सजाती ताकि भगवान के पैरों में किसी भी प्रकार का कोई कंकर-पत्थर अथवा कांटा न चुभे। माता शबरी के इस नित्य कर्म को देखकर आसपास के लोग उन्हें कहते कि 'कोई नहीं आये तू व्यर्थ ही इतना कष्ट रोज करती है' परन्तु अपने गुरु के वचनों में श्रद्धा रखकर माता शबरी रोजना ही प्रभु की प्रतीक्षा में जीवन बीताने लगे। एक दिन प्रतीक्षा समाप्त हुई और भगवान श्रीराम माता सीता की खोज करते-करते स्वयं शबरी के आश्रम तक पधार गये। माता शबरी प्रभु श्रीराम को पहचान नहीं पाई और पूछा कि कौन हो तुम तब भगवान श्रीराम ने कहा **माई मैं ही तुम्हारा राम हूँ**। यह सुनते ही माता शबरी अपने अश्रुओं को रोक न सकी और प्रभु के श्रीचरणों में नतमस्तक हो गई। प्रणाम करने के उपरांत उन्हें आसन पर बैठाया और वनों से लाये हुए भगवान को बैर सामने रख दिये। भगवान श्रीराम ने माता शबरी की करूणा और ममता से प्रसन्न उनके झूठे बैर खाये।

करूणा और भक्ति में इतनी शक्ति होती है कि वो भगवान को भी खींचकर भक्त के पास लेकर आ जाती है। वैसे तो अधिकांश लोग ये जानते हैं कि भगवान श्रीराम ने पृथ्वी पर अवतरण रावण और राक्षसों का नाश करने के लिये लिया था परन्तु कम ही लोग इस गुप्त रहस्या को जानते हैं कि प्रभु श्रीराम ने माता शबरी का उद्धार करने के लिये भी इस पृथ्वी पर जन्म लिया था। माता शबरी के जीवन का अगर हम अध्ययन करेंगे तो पाएंगे कि प्रभु की भक्ति किसी भी व्यक्ति की कोई जाति और समाज नहीं होता है अगर भक्ति में सच्चाई और तपस्या है और प्रभु उसके पास नंगे पैर दौड़े चले आते हैं। वर्तमान समय में भारतीय संस्कृति को तोड़ने के लिये जात-पात और ऊँच-नीच को आधार बनाकर हिंदुओं में भेदभाव करने का बड़ा षडयंत्र किया जा रहा है और हमारे हिंदू वर्ग में जो लोग इन कथाओं को नहीं जानते हैं उन्हें ये लोग बड़ी ही आसानी से तोड़कर अलग करने में लगे हुए है हमारे भारतीय समाज के प्रत्येक परिवार को चाहिये कि वे अपने-अपने परिवार के सदस्यों से इन प्रेरक प्रसंगों पर चर्चा अवश्य करें जिससे उनके में भारतीय संस्कृति की गहरी समझ और पेठ जम सके और हमारे सामाजिक ताने-बाने को बाहरी और आंतरिक शत्रुओं से सुरक्षा मिल सके।

संचार का सर्वोच्च माध्यम है माँ हिंदी

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

भाषा परस्पर संवाद और संचार की माध्यम होती हैं, जिनकी व्यापकता इस बात से सिद्ध होती है कि उनमें कितना सृजन लोकमंगल को समर्पित है। वैश्विक रूप से हिन्दी वर्तमान ही नहीं अपितु अपने जन्म से ही सुदृढ़, सुस्थापित और सुनियोजित संपदा का बाहुल्य है।

स्वतंत्रता के बाद से लगातार हिन्दी को हीनता बोधक दिखाने की यह कुदृष्टि वर्तमान में जाकर कमजोर हो रही है, जब अमेरिका या जापान का कोई व्यापारी हिन्दुस्तान में दुनिया का सबसे महँगा फ़ोन बेचना चाहता है तो उसका विज्ञापन हिन्दी में तैयार करवाता है, जब सोशल मीडिया की अलग दुनिया बसाई जाती है तो उसके भी भाषाई तरकश में हिन्दी का तीर अनिवार्यत रखा जाता है।

सिलिकॉन वैली में बैठने वाले इंजीनियर भी हिन्दी भाषा के घटकों को एकत्रित करने के लिए प्रोग्रामिंग करते हैं और गूगल जैसा दुनिया का सबसे तेज सर्च इन्जन भी हिन्दी की महत्ता को स्वीकार करता है। कई वैश्विक संस्थाएँ अपने संवाद की भाषाओं में हिन्दी को भी स्थान देती है ताकि विश्व के सबसे बड़े देश तक अपनी बात आसानी से पहुँचा सके।

आज जब सरकारें और यूँ कहें कि सारा देश भारत की स्वाधीनता का अमृत महोत्सव मना कर अमृत काल की ओर बढ़ रहा है, देश से गुलामी के प्रतीकों को हटाया जा रहा है, ऐसे शहरों और स्थानों का नाम बदला जा रहा है जो गुलाम भारत की यादों को ताजा करते हैं, उस दौर में गुलामी की भाषा को कण्ठहार बनाना कौन-सी समझदारी है! बहरहाल, यदि हिन्दी की वैश्विक स्थिति देखी जाए तो गर्व करने के सैंकड़ों अवसर उपलब्ध हैं। साथ ही, भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ फिज़ी की भी राजभाषा है। मॉरिशस, त्रिनिदाद, गुयाना, और सूरीनाम में हिन्दी को क्षेत्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है।

एथनोलॉग के मुताबिक, हिन्दी दुनिया की तीसरी सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा है और आँकडों पर नजर दौड़ाई जाए तो 140 करोड़ लोगों की भाषा होने के कारण हिन्दी विश्व में अग्रणीय भाषा है। अमेरिका के ८० से ज़्यादा विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई की सुविधा है। हिन्दी का कथा साहित्य, फ्रेंच, रूसी, और अंग्रेज़ी से अग्रणी है।

भारत इस समय विश्व का सबसे बड़ा बाजार है, और सबसे बड़े बाजार की भाषा सबसे बड़ी होती है। अंग्रेज़ी विश्व बाजार में पाँचवें स्थान से भी नीचे है। हिन्दी के समृद्ध साहित्य में वसुधैव कुटुंबकम् जैसी लोकमंगल की कामनाएँ विपुल है। किन्तु भारत के कई राज्यों में यहाँ तक कि कई हिन्दी भाषी राज्यों में भी अंग्रेज़ी विद्यालयों में बच्चों को हिन्दी बोल भर देने पर दंडित कर दिया जाता है, यह दुर्भाग्य है। आज मध्यप्रदेश सहित छत्तीसगढ़ इत्यादि राज्यों में मेडिकल व इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी अब हिन्दी में होने लग गई, लोकाचार की भाषा के रूप में हिन्दी की लोक स्वीकृति है। समग्रता के झण्डे को थामे चलने वाली एकमात्र जनभाषा हिन्दी होने के बाद भी अपने ही देश में आज हिन्दी के साथ दुर्व्यव्यवहार जारी है। अब जबकि विश्व ने भी भारतीय संस्कृति की पहचान और परिचय के रूप में हिन्दी को स्वीकृति दे ही दी है, फिर हमें क्या आवश्यकता है गुलामी के मुकुट को माथे पर धारण करने की? अब तो तत्काल हिन्दी को स्वीकार कर भारतीय भाषाओं के वैभव को उन्नत करना चाहिए। अंग्रेज़ी, फ्रेंच, मैंडरिन, जर्मनी अथवा अन्य विदेशी भाषाओं को सीखना-सिखाना चाहिए किन्तु उन्हीं भाषाओं को सबकुछ मानकर अपनी जनभाषा से दूरी बनाना न तो तार्किक है और न ही न्यायोचित। हिन्दी की वैश्विक स्थिति को और अधिक समृद्ध करने के लिए, विधि, विज्ञान, वाणिज्य, और नई तकनीक के क्षेत्र में पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। इसके लिए सभी को मिलकर हिन्दी के विकास में योगदान देना होगा। हमें स्वाधीन और विश्व गुरु राष्ट्र की तरह व्यवहार करते हुए लोकमंगल की भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

वैदिक वाग्मय में मातृत्व भाव

डॉ. अभिषेक पाण्डेय

संस्कृत में मातृ या माता शब्द मान् धातु से उत्पन्न है। इसके अनुसार जो श्रेष्ठ हो, सम्माननीय हो, पूजनीय हो वह माता है। 'मान्यते पूज्यते या सा माता। संपूर्ण कार्यो के निर्वहण करते हुए अपनी सन्तान का निर्माण, पालन पोषण आदि करने के कारण इन्हें ब्रह्म की संज्ञा भी दी गई है- **स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ** (ऋग्वेद 8/133/19) निरुक्तकार महर्षि यास्क इसकी व्याख्या करते हुए कहते हैं कि पुरुष ही उसके पास जाते हैं, सम्मानपूर्वक बात करते हैं। उसे पुरुष से अनुनय की आवश्यकता नहीं पड़ती। भाष्यकार महर्षि पतंजलि के अनुसार **स्त्यास्यति अस्यां गर्भ इति स्त्री।** उसके भीतर गर्भ की स्थिति होने से उसे स्त्री कहा गया है। अतएव भारतीय संस्कृति में माता, स्त्री, नारी आदि नामों से व्यवहृत उस मातृत्व के भाव को अत्यन्त सम्मानजनक माना गया है। कई स्थानों पर ईश्वर के समतुल्य तो कहीं पर देवता से भी अधिक पूज्य कहा गया है- माता किल मनुष्याणां देवतानां च दैवत। (मध्यमव्यायोग 1.8) तैत्तिरीय उपनिषद में माता को देवता बताया गया है - मातृ देवो भवः। एक प्रेरक सुभाषित में तो यहाँ तक कहा भी गया है कि जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं- यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण के ब्रह्मखण्ड के अध्याय 10 में कहा गया है कि जिसे भी माता कहकर एक बार भी संबोधित कर दिया, वह माता की समान ही पूजनीया है। भारती समाज में जन्म देने वाली, स्तनपान कराने वाली, भोजन देने वाली, गुरु पत्नी, इष्टदेव की पत्नी, पिता की पत्नी (विमाता), स्वयं की पत्नी, स्व कन्या, सहोदरा या सौतेली बहन, पुत्र पत्नी, सास, माता की माँ, पिता की माँ, भाई की पत्नी, माता-पिता की बहन, मामी ये सोलह माताएँ बताई गई हैं।

स्तनदात्री गर्भधात्री भक्ष्यदात्री गुरुप्रिया ।
अभीष्टदेवपत्नी च पितुः पत्नी च कन्यका ॥
सगर्भजा या भगिनी पुत्रपत्नी प्रियाप्रसूः ।
मातुर्माता पितुर्माता सोदरस्य प्रिया तथा ॥
मातुः पितुश्च भगिनी मातुलानी तथैव च ।
जनानां वेदविहिता मातरः षोडश स्मृताः ॥

(ब्रह्मवैवर्त्त गणपतिखण्ड कार्त्तिकेय- संवाद अध्याय 15)

निरुत 8/3 में पितृव्य (चाचा) की पत्नी, राजा की पत्नी, पुरोहित की पत्नी, गौ तथा पृथ्वी को भी माता कहा गया है। वेदवाक्यों के अनुगमन में माता के श्रेष्ठत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि जन्मदाता और पालनकर्ता होने के कारण से पिता पूज्य हैं। जन्मदाता से भी अन्नदाता पिता श्रेष्ठ है। इन सभी से सौगुनी श्रेष्ठ और वन्दनीया माता है, क्योंकि वह गभर्धारण तथा पोषण करती है।

जनको जन्मदातृत्वात् पालनाच्च पिता स्मृतः।
गरीयान् जन्मदातुश्च योऽन्दाता पिता मुने।।

तयोः शतगुणे माता पूज्या मान्या च विन्दता। गभर्धारणपोषाडयां सा च ताडयां गरीयसी।। (ब्रह्मवैवर्त्त गणपतिखण्ड कार्त्तिकेय- संवाद अध्याय 40)

ऐसे ही गरुड़ पुराण के 94 वें अध्याय के अन्तर्गत माता की महत्ता गुरु से अधिक कही गई है। वैदिक वाङ्मय में माँ की महिमा का उल्लेख अत्यन्त गंभीरता के साथ किया है। संहिता ब्राह्मण आरण्यक, उपनिषद् आदि मातृ भाव के अपार गुणगान से भरे पड़े हैं। ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों ने भी माँ के प्रति अनुभूतियों को लिपिबद्ध करने का भरसक प्रयास किया है, तथापि माता और मातृत्व की संपूर्ण व्याख्या अवर्णनीय है। ऋग्वेद में नारी विषयक 400 से अधिक मंत्र अध्ययन में दृष्टिगोचर हुए हैं। संहिता आदि ग्रन्थों में माता को मातृ, अम्बा, अम्बिका, अम्मा, जननी, जीवनदायिनी, जनयत्री, जन्मदात्री, धात्री, प्रसू, दुर्गा, देवी, सरस्वती, शक्ति, ज्योति, पृथ्वी, स्त्री, नारी आदि नामों से संबोधित किया गया है। गोपथ ब्राह्मण 1/34 में स्त्री को श्री कहा है। अथर्ववेद में स्त्री को घर केंद्र बताकर गृहस्थी का आधार कहा है। शतपथ ब्राह्मण का कथन है कि जब तक मनुष्य का विवाह नहीं होता है, तब तक वह अपूर्ण है। पत्नी को प्राप्त करने पर ही वह पूर्ण होता है।

'यावत् जायां न विन्दते, असर्वो हि तावद् भवति।
(शतपथ ब्राह्मण - 5.2.1.10)

दशस्मृति में पत्नी को घर का मूल कहा है। तैत्तिरीय ब्राह्मण में कहा गया है कि यज्ञ आदि धार्मिक अनुष्ठान पत्नी के साथ ही किए जाते है। स्त्री सहधर्मिणी हैं, अतः कोई भी यज्ञ पत्नी के बिना पूरा नहीं होता है।

'अयज्ञो वा एषः योऽपत्नीकः। (तैत्तिरीय ब्राह्मण - 2.1.2.6)

आजीवन साहचर्य की आकांक्षा का सुंदर चित्रण करते हुए ऋग्वेद 10 वें मण्डल को 85 वें सूक्त के विवाह से सम्बन्धित मंत्रों कहा है कि पतिगृह में रहते हुए हम दोनों एक साथ आजीवन सुख का उपभोग करते हुए पुत्रों व पौत्रों के साथ खेलें तथा आनन्द मनाएँ, विश्वदेवा हम दोनों को एक करें, हम दोनों के हृदयों को प्रीति से जोड़ दें। गृहस्थ आश्रम के समस्त कर्तव्यों का साथ-साथ निवर्हन करते हुए सौभगत्व अर्थात् सुख, समृद्धि, आनन्दादि का उपभोग करें तथा दोनों का साहचर्य जीवन बना रहे।

वैदिक काल में स्त्रियों को ललित कलाओं की शिक्षा दी जाती थी। वे नृत्य, संगीत, शिल्प, वाद्य आदि में निपुण होती थीं। उस समय में नारी को शक्तिशालिनी, दानशीला, अन्नपूर्णा, विद्यायुक्त और अक्षय सुख का भण्डार कहा है। वेदों का अध्यापन कराने वाली स्त्रियों को आचार्या और उपाध्याया कहा गया है। राजकार्य में महिलाओं के संरक्षण की विशेष व्यवस्था थी, उनको भोजन, वस्त्र आदि के द्वारा सम्मानित किए जाने की भी परम्परा थी। वैदिक वाङ्मय में वैज्ञानिक व्याख्या करने हुए स्त्री एवं पुरुष क्षेत्र एवं बीज के समान कहा गया है। सोम देवता ने नारी को पवित्रता दी, गन्धर्व ने मधुर वाणी और अग्नि ने सब प्रकार से पवित्र होने की शक्ति दी। जैमनीय उपनिषद में स्त्री को वेदमाता गायत्री के तुल्य पवित्र और पूज्य कहा है।

तैत्तिरीय तैत्तिरीय ब्राह्मण - 3.1.4.7 और शतपथ ब्राह्मण 13.2.6.7 में पत्नी को गृह की प्रतिष्ठा माना है। स्त्री को अर्धांगिनी अर्थात् पुरुष का आधा भाग कहा गया है। स्त्री पुरुष की आत्मा का अंश है।

अर्धो वा एष आत्मनः यत् पत्नी। (तैत्तिरीय ब्राह्मण - 3.3.35)

वैदिक काल में मातृशक्ति युद्धकला में सिद्धहस्त थीं। ऋग्वेद 7/80/2 में महिलाओं में नेतृत्व क्षमता थी, वे निर्भीक होती थी, उनमें किसी भी विषय में यह भावना नहीं होती थी कि वे स्त्री है और संकोच करें। जैसे पुरुष युद्ध के समय सेनापति के रूप मे सेना का नेतृत्व करते थे, उसी प्रकार महिलाओं की पृथक से सेना होती थी और वे सेनापति के रूप में सेना का नेतृत्व करती थी तथा शत्रुओं का संहार कर विजय प्राप्त करती थी। यजुर्वेद 13/26 में कहा गया है कि स्त्री अजेय (अषाढा), विजेता (सहमाना) सहस्त्रों प्रकार के पराक्रम करने वाली (सहस्त्रवीर्या) होती थी- 'अषाढा सहमाना सहस्त्रवीर्या।'

ऋ ग्वेद 10/151/5 में स्त्री को शत्रुरहित (असपत्ना), शत्रुनाशक (सपत्नीहनी) विजयिनी (जयन्ती), अभिभूवरी (शत्रुओं को हराने वाली) कहा गया है- असपत्ना सपत्नीध्नी, जयन्ती-अभिभूवरी। इन्द्राणी को पराक्रमी महिला सेनापति के रूप में प्रस्तुत किया है। इन्द्राणी के विषय में कहा है कि इन्द्राणी युद्ध में सदा अजेय रही हैं। उनको कोई युद्ध में परास्त नहीं कर सका है वे युद्ध में सैन्य शस्त्रों को धारण कर शत्रु सेना को तलवार से काटती हुई आगे बढती थी और युद्ध में विजय प्राप्त करती थी। ऋग्वेद के दशम मण्डल (10/59/2) में इन्द्र की पत्नी शची का उल्लेख मिलता है। वह कहती हैं- **मैं ज्ञान में अग्रगण्य हूँ। मैं उच्चकोटि की वक्ता हूँ। मुझ विजयिनी की इच्छानुसार ही मेरा पति आचरण करता है।**

तैत्तिरीय संहिता में इन्द्राणी को सेना की देवता कहा है। इन्द्राणी की नेतृत्व क्षमता इतनी प्रखर है कि वह अपने पराक्रमी, ओजस्वी वाणी से सेना में प्राणों का संचार कर देती और सेना उसके नेतृत्व में अजेय हो जाती है- **इन्द्राणी वै सेनायै देवता। सैवास्य सेना संश्यति।** (तैत्तिरीय संहिता 2.2.8.1)

वैदिक काल मे मातृ भाव के दो प्रकार थे - सद्योद्वाहा एवं

ब्रह्मवादिनी- जो स्त्रियाँ तपश्चर्या पूर्वक ब्रह्मचर्य आश्रम के बाद विवाह कर गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट हो जाती थीं, वे सद्योद्वाहा कहलाती थीं। वहीं जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर तपस्यामय जीवन निर्वाह करती थीं, वे ब्रह्मवादिनी कहलाती थी। ब्रह्मवादिनी यज्ञोपवीत अग्नि होत्र, वेदाध्ययन तथा स्वगृह में भिक्षा करती थीं।

इन दोनों प्रकार की महिलाओं में उच्चतम अध्ययन और शिक्षण युक्त योग्यता होती थी। अथर्ववेद में कन्या द्वारा ब्रह्मचर्य आश्रम में शिक्षा प्राप्ति का उल्लेख मिलता है। कौषिकी ब्राह्मण में अनेक विदुषी स्त्रियों का वर्णन प्राप्त होता है। पणिनि ने तो महिला शिक्षण विद्यालयों का उल्लेख किया है। जिसमें शिक्षा ग्रहण केवल महिलाएँ ही किया करती थीं। इसी प्रकार अष्टाध्यायी पर लिखी काशिकावृत्ति में आचार्या एवं उपाध्याया शब्दों की व्युत्पत्ति प्राप्त होती है।
सद्योद्वाहा एवं ब्रह्मवादिनी दोनों प्रकार की नारियाँ तपश्चर्या को विकसित कर दिव्य आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत हो जाती थीं। इनका स्तर इतना ऊँचा भी हुआ कि इन्होंने मंत्र तत्त्व को प्राप्त भी किया। ऋग्वेद में जैसे पुरुष ऋषि मंत्र के दृष्टा थे वैसे ही स्त्रियाँ भी थीं। इन मंत्र दृष्टा ऋषिकाओं ने मंत्रों का साक्षात्कार करके वैदिक साहित्य के संवर्धन में योगदान दिया। ऋग्वेद मे सर्वप्रथम ऋषिकाओं में रोमशा का उल्लेख मिलता है। उन्होंने निम्नांकित मंत्र का दर्शन किया और इस मंत्र के द्वारा पुरूषों के बीच में प्रखर बौद्धिक क्षमतावाली स्त्री की प्रतिष्ठा की।
उपोष मे परामर्श में दभ्राणि मन्यथाः। सर्वाहसस्मि रोमशा गन्धारीणामिवाविका।

इस प्रकार लोपामुद्रा (महर्षि अगत्स्य की पत्नी) ने ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के सूक्त 179 के दो मंत्रो का साक्षात्कार किया। वहीं चतुर्थ मण्डल में देवमाता अदिति का उल्लेख है। इन्होंने 18 वें सूक्त सातवें मंत्र का साक्षात्कार किया। पाँचवें मण्डल में सम्पूर्ण 28 वें सूक्त का साक्षात्कार विश्वास आत्रेयी ने किया। इसमें छः मन्त्र है। इनके अतिरिक्त विश्ववारा, अपाला, उपनिषत्, निषत्, उर्वशी, सार्पराज्ञी, सरस्वती, गायत्री, आपालात्रेयी, यमी वैवस्वती, जुहू, अदिति, इन्द्राणी, सरमा, श्रद्धा-कामायनी, घोषा, यमी, शाश्वती, सूर्या सावित्री, गोधा आदि के नाम मंत्र दृष्टा ऋषिकाओं के रूप में प्रमुखता से लिए जाते हैं।
ऋग्वेद के 10-39, 10-40, 8-91, 10-95, 10-107, 10-109, 10-154, 10-159, 10-189, 5-28, 8-91 आदि सूक्तों की मंत्र दृष्टा ऋषिकाएँ ही हैं।

डॉ. माधवी शर्मा के शोधपत्र अनुसार परिवार, समाज, व राष्ट्र के सुख, समृद्धि व विकास के लिए वैदिक साहित्य में सम्मान के आधार पर स्त्री के तीन पद निर्धारित किए गये थे -
गृहिणीपद 2. मातृपद व 3. सहचरीपद
गृहिणीपद- परिवार के सदस्य के द्वारा घर में रहकर - जो कुछ भी किया जाता है वह सब परिवार के आन्तरिक जीवन में समाविष्ट हो जाता है। स्त्री व पुरुष के विवाह बंधन में बंधकर एक साथ रहने से ही पारिवारिक जीवन का प्रारम्भ होता है। परिवार में संतति की वृद्धि से परिवार का विकास होता है। यह पारिवारिक जीवन पूर्णरूपेण स्त्री से ही सम्बन्धित है। वैदिक काल में गृहिणीपद अत्यन्त ही महत्वपूर्ण था, क्योंकि उस समय का सामाजिक जीवन स्वावलम्बन के सिद्धान्त पर ही स्थित था। वेदों में नारी को ही घर कहा गया है। (ऋग्वेद 3/53/4) तदनुसार गृहिणी के द्वारा ही गृह का अस्तित्व है। यही भाव एक संस्कृत सुभाषित में कहा गया है कि गृहिणी ही घर हैं **गृहिणी गृहमुच्यते**।

स्त्री गृह के आन्तरिक जीवन की शासनकर्त्री थी। इसीलिए यहाँ तक कह दिया कि **'जायेदस्तं'** (स्त्री ही घर है) ऋग्वेद में इन्द्र के सुखद गृह का उल्लेख है जिसमे सर्वगुण सम्पन्न प्रेयसी का प्रभुत्व स्थापित था और जहाँ पर उसके माधुर्यपूर्ण शब्द गुंजायमान होते थे। इन्द्र को सम्बोधित करते हुए ऋषि कहते हैं कि- **हे इन्द्र तुमने सोमपान किया है, अब तुम अपने घर जाओ, जहाँ तुम्हारी कल्याणकारी पत्नी है जो आनन्द का भण्डार है।** (ऋग्वेद - 4/58/8)। ऋषि के इस वक्तव्य से तत्कालीन पारिवारिक सौम्य का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत हुआ है।

ऋग्वेद में सूर्या-सावित्री के विवाह के वर्णन के अवसर पर स्त्री के गृहिणीपद का सुन्दर विवेचन प्राप्त होता है। इस प्रकरण में नवविवाहिता वधू को कहा है कि गृहान्गच्छ गृहपत्नी यथासो वषिनी त्वं विदथ मा वदासि। (ऋग्वेद - 10/85/25)
अर्थात ''अपने घर में प्रवेश करो, और गृहपत्नी (गृहिणी) बन कर सब पर शासन करो।'' सन्तान द्वारा तुम्हें समृद्धि प्राप्त हो तथा इस घर में गार्हपत्य (अग्निदेव) के प्रति तुम सदैव जागरुक रहो। ''संतान द्वारा तुम्हें समृद्धि प्राप्त होवे तथा इस घर में गार्हपत्य के प्रति तुम सदैव जागरुक रहो।'' गार्हपत्यादि शब्दों में स्त्री के गृहिणी पद से सम्बन्धित कर्त्तव्यों का उल्लेख है। गार्हपत्याग्नि पारिवारिक जीवन की विभिन्न प्रवृत्तियों का केन्द्र थी और गार्हपत्य शब्द में गृहिणी विषयक

समस्त प्रवृत्तियों का समावेष हो जाता है।

मातृपद - मातृ शब्द पारिवारिक जीवन के लिए अमृत का भण्डार है। माता परिवार के लिए त्याग, तपस्या व प्रेम की त्रिवेणी है। माता व संतान का परस्पर प्रेम ही पारिवारिक सुख की आधारशिला है। मातृत्व का पद ही उसे पारिवारिक जीवन का केन्द्र बनाता है। उसका जीवन बच्चों के लिए समर्पित हो जाता है।

ऋग्वेद में अनेक स्थलों पर स्त्री के मातृत्व का सुन्दर चित्रण किया है। उषा के प्रसंग में कहा गया है- ''पुत्र जिस प्रकार माता के देदीप्यमान मुख की ओर आकर्षित होते हैं उसी प्रकार हम भी तुम्हारी तरफ आकर्षित होते हैं।'' एक अन्य स्थल में उल्लेख है- जिस प्रकार आकाश में स्थित बादल क्रीड़ा कर रहे हैं उसी प्रकार महल के प्रासाद पर स्थित बच्चे क्रीड़ा करते हैं।''

एक अन्य स्थल पर विश्वदेवा की स्तुति में कहा है- ''जिस प्रकार पुत्र अपनी माता की गोद में आकर बैठ जाते हैं, उसी प्रकार विश्वदेवा भी प्रेमपूर्वक यज्ञस्थली में आकर बैठ जाएँ।'' सूर्या-सावित्री के विवाह के प्रसंग में भी स्त्री के मातृपद का मधुर चित्रण किया है। पति अपनी नवविवाहित पत्नी के बारे में कहता है- ''अग्नि ने मुझे यह पत्नी, पुत्र, धन आदि प्रदान किये हैं।'' ''रयिं च पुत्रांष्चादादग्नि र्मह्ममथो इमा।'' (ऋग्वेद - 10/85/41)

वर-वधू को सम्बोधित करते हुए कहा है- यहाँ पर सांसारिक वैभवों का उपभोग करो, अपने घर में अपने पुत्रों-पौत्रों आदि के साथ खेलते हुए व आनन्द मनाते हुए जीवन यापन करो। इहैव स्तं मा वि यौष्टं विष्वभायुर्व्यष्नुत। (ऋग्वेद - 10/85/42)

पति ने पुनः कहा है- प्रजापति हमें सन्तान प्रदान करे व आजीवन हमें एक साथ रखे। अर्यमा ने यह कल्याणकारी पत्नी प्रदान की है। ''इन्द्र से प्रार्थना करते हुए कहा है- ''हे इन्द्र इस नवविवाहित पत्नी को अच्छे पुत्र वाली तथा सौभाग्यवाली बनाओ। इसे दस पुत्र प्रदान करो।''

''इमां त्वमिन्द्रमीढ्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु।
दषास्यां पुत्राना धेहि पतिमेकादषं कृधि।'' (ऋग्वेद - 10/85/43)

वैदिक काल में पितृपक्ष प्रधान परिवार प्रथा के अनुसार पुत्र प्राप्ति के महत्व के कारण स्त्री का मातृपद महत्वपूर्ण था। वेदों में प्रयुक्त होने वाला जाया शब्द मातृपद का ही द्योतक है।

सहचरी - गृहिणीपद और मातृपद के अतिरिक्त स्त्री का एक तीसरा सहचरी का पद था। गृहिणी तथा मातृपद के उत्तरदायित्व का निर्वहन करते हुए जीवन में नीरसता न आ जाए, इसीलिए वह पति की सहचरी बनकर जीवन का आनन्द लेती थी। प्रकृति प्रदत्त सौन्दर्य व मधुर प्रेम से अथक प्रयासों से ललित कला आदि में परिणत कर जीवन के दुःखों को विस्मृत करने में सक्षम होती थी। स्त्री के अंग प्रत्यंग से बहने वाला सौन्दर्य व मधुर तथा स्निग्ध एवं निश्चल प्रेम पति की दिन भर की परेशानियों, चिन्ताओं को भस्मसात करने में सक्षम होता था। यह साहचर्य किसी एक दिशा तक ही सीमित नहीं था अपितु यह जीवन के प्रत्येक पहलू से सम्बन्धित था।

इन तीनों पदों के निवर्हन के साथ ही स्त्री को यह भी अधिकार था कि व आत्मविकास के पथ पर अग्रसर होते हुए राष्ट्र की नागरिकता के उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक विकास की धारा से जुड़कर समाज सेवा में अपना सहयोग निभाए।

निष्कर्षत स्पष्ट होता है कि वेदकाल में मातृत्व भाव के रूप में नारी अपने आत्मविकास और उत्थान के लिए जितनी स्वतन्त्र थी, उतनी कभी भी नहीं रही। वह उन्मुक्त होकर वनांचलों में ऋचाओं का गान करती थीं। अध्यात्म की परमावस्था को प्राप्त होकर मन्त्रदृष्टा भी होती थी। इस समय में महिलाएँ निर्भीकता के साथ तत्वचिन्तन के लिए संगोष्ठियों और दार्शनिक वाद- विवादों में सम्मिलित होती थीं, परिचर्चा में भाग लेती थीं तथा निर्णायक की भूमिका में भी होती थीं। कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति की निर्मात्री, सभ्यता का स्रोत और वैवाहिक जीवन की आधारशिला है। सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक समाज की धूरी रही है जो संतति की, समाज की जननी है। इसलिए वेदों में स्त्री को ब्रह्मा की संज्ञा दी गई है। वैदिक काल में कन्याओं को वेदाध्ययन का अधिकार था और उन्हें विविध प्रकार की शिक्षा दी जाती थी, उस समय के साहित्य में बहुत सी विदूषी स्त्रियों के नाम मिलते हैं। युवतियाँ मुक्त वातावरण में जीवन व्यतीत करती थी। परिवार में पत्नी का गौरवमय स्थान था और पुनर्विवाह का अधिकार था। वैदिक समाज में स्त्रियों के सम्मान के अतिशय प्रमाण प्राप्त होते हैं। वेदों में प्राप्त स्त्री विषयक प्राप्त असंख्य नारी विषयक मंत्र है, जो कि मातृभाव के द्योतक हैं। इनमें महिलाओं के त्याग, तप तथा मातृत्व भाव के अनेकानेक कार्यों ने जो आदर्श स्थापित किया है, आज का समाज उन्हीं आदर्शों पर चले तो ही भारतवर्ष परम वैभव के पद पर पुनः स्थापित हो सकेगा।

माँ नर्मदा

श्रीधर जोशी, इन्दौर

माँ और नर्मदा - परस्पर पर्यायवाची हैं। माँ जितने प्यार से पालन-पोषण करती है ,उतने ही प्यार से यह हमारा लालन-पालन करती है. इस नदी को हिंदू धर्म में माँ के रूप में पूजा जाता है, जो अपने बच्चों को प्यार, स्नेह और पोषण प्रदान करती है।नर्मदा नदी को माँ के रूप में क्यों पूजें ? भाई यह पोषण और स्नेह देती है। अपने किनारे बसे लोगों को पानी और भोजन देती है। माई नर्मदा ऐसे संसाधन प्रदान करती है, जो उनके जीवन को सुगम बनाते हैं। यह शुद्धि और पवित्रता देती है, जो आत्मशुद्धि और मोक्ष प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण है। भगवती नर्मदा की आराधना से आत्मशुद्धि और मोक्ष प्राप्ति तो होती ही है सुख और समृद्धि भी प्राप्त होती है। इसके किनारे अगणित पवित्र तीर्थ हैं नर्मदा नदी को माँ के रूप में पूजने की परंपरा हिंदू धर्म में बहुत पुरानी है, जो आज भी जारी है।

धार्मिक रूप से यह कितनी प्राचीन व महत्वपूर्ण है - यह इस बात से ही पता चलता है कि; गंगा का जन्म नर्मदा के तट पर ही हुआ है. महाराज बलि नर्मदा के तट पर ही तो अश्वमेध यज्ञ कर रहे थे। जब भगवान वामन ने दर्शन देकर त्रिविक्रम रूप धारा था। तब ही तो भगवन के अंगुष्ठ धोकर ब्रह्मा ने कमंडल में रख लिया और भगीरथ महाराज को वही गंगा रूप में मिली। नर्मदाजी वैराग्य की अधिष्ठात्री मूर्तिमान स्वरूप है। गंगाजी ज्ञान की, यमुनाजी भक्ति की, ब्रह्मपुत्रा तेज की, गोदावरी ऐश्वर्य की, कृष्णा कामना की और सरस्वतीजी विवेक के प्रतिष्ठान के लिए संसार में आई हैं। सारा संसार इनकी निर्मलता और ओजस्विता व मांगलिक भाव के कारण आदर करता है व श्रद्धा से पूजन करता है। मानव जीवन में जल का विशेष महत्व होता है। यही महत्व जीवन को स्वार्थ, परमार्थ से जोडता है। प्रकृति और मानव का गहरा संबंध है।

यह नदी विश्व की पहली ऐसी नदी है जो अन्य नदियों की अपेक्षा विपरीत दिशा में बहती है और डेल्टा नहीं बनाती है। ऐसी इकलौती नदी है जिसकी परिक्रमा होती है। परिक्रमण के प्रकार भी कई हैं। जैसे 3 वर्ष 3 माह और 13 दिन में होने वाली संन्यासी परिक्रमा। अनिश्चित समय तक चलने वाली गृहस्थ परिक्रमा। जलधारी परिक्रमा, खंड परिक्रमा आदि प्रमुख हैं। नर्मदा नदी का उल्लेख प्राचीन हिंदू ग्रंथों जैसे कि ऋग्वेद, महाभारत और पुराणों में मिलता है। इसकी पवित्रता का वर्णन करते हुए स्कन्दपुराण रेवाखंड में कहा गया है -

गङ्गा कनखले पुण्या, कुरुक्षेत्रे सरस्वती।
ग्रामे वा यदि वारण्ये, पुण्या सर्वत्र नर्मदा ।।

अर्थात गंगास्नान का पुण्य केवल कनखल में ही मिलता है। सरस्वती स्नान का फल केवल कुरुक्षेत्र में मिलता है।

(अपनी नर्मदा माई कितनी दयालु और पवित्र है कि-) गाँव हो या जंगल, नर्मदा सभी घाट पर पुण्य प्रदान करने वाली है। नर्मदा नदी मध्यप्रदेश और गुजरात की जीवन रेखा है, परंतु इसका अधिकतर भाग मध्यप्रदेश में ही बहता है। मध्यप्रदेश के तीर्थ स्थल अमरकंटक से इसका उद्गम होता है और नेमावर नगर में इसका नाभि स्थल है। इस नदी की जीवन्तता का प्रमाण यह है कि परिक्रमावासियों को यह माई ना केवल दर्शन देती है, अपितु मार्गदर्शन भी करती है। भूखे को भोजन और प्यासे को पानी भी देती है।

माँ नर्मदा की स्तुति करते हुए आदि शंकराचार्य कितने भाव विभोर हो रहे हैं - रेवे कृपा किन्न विधीयते त्वया दीनो भवनेष जनः प्रतीक्षते। दृष्ट्वा रुदन्तं शिशुमात्मजं न किं कारुण्यपूर्णा जननी त्वरायते।।

- अर्थात हे मातु नर्मदे, तुम कृपा क्यों नहीं करतीं? दीन हुआ यह प्राणी सदैव प्रतीक्षा कर रहा है। बिलखते हुए अपने निराधार शिशु को देखकर भी करुणामय मां क्या आतुर हुई नहीं जातीं?

माँ और मातृभूमि एक दूजे के पर्याय

- डॉ विकास दवे

सर्वमान्य एवं स्वयंसिद्ध तथ्य है कि माँ और मातृभूमि दोनों का मानव जीवन में महनिय योगदान है। यदि माँ के बिना मानव जीवन की कल्पना संभव नहीं है तो मातृभूमि के बिना जीवन के आधार और अस्मिता की कल्पना असंभव है। इसीलिए जननी और जन्मभूमि दोनों को स्वर्ग से महान माना जाता है।

भार उठाने और धैर्य धारण करने में हमारी माताएं भी धरती माँ के समान हैं। उदारता में फलों से लदे वृक्षों के समान, प्रेम में अथाह सागर के तुल्य और दुष्टों का नाश करने में वह दुर्गास्वरूप है। **मातृ देवो भव**, **माँ स्वर्ग से भी महान है** आखिर इन उक्तियों में कौन से गुण और अभिप्राय निहित हैं? **स्वर्ग** की कल्पना यह आभास दिलाती है कि वहाँ दुःख लेश मात्र हैं और वहां सुख व आनंद का साम्राज्य होगा। माँ का आँचल भी बच्चों को एक ऐसी ही सुखद अनुभूति का अहसास कराता है। इसकी तुलना इस पृथ्वी पर अन्य किसी चीज से नहीं की जा सकती।

बच्चे के सुख और हित के लिए माँ अपना सर्वस्व न्योछावर करने को भी तत्पर रहती है। सर्वप्रथम तो वह बच्चे को अपने गर्भ (कोख) में रखती है; और गर्भावस्था की असह्य पीड़ा को भी सुखद मानती है। बच्चे को जन्म देने के सुख की प्राप्ति हेतु वह सारे कष्टों को भूल जाती है। बच्चा उसकी सृष्टि है, उसके शरीर का भाग है। यह भावना उसमें बच्चे के प्रति अपार प्रेम और संरक्षण की भावना भर देती है। कुछ परिस्थितियों में जब चिकित्सक महिला को गर्भधारण करने से बचने की सलाह देते हैं, तो भी महिला अपनी जान पर खेलकर बच्चे को जन्म देना चाहती है। भला इतना त्याग सृष्टि में और कौन कर सकता है?

नारी में ही यह क्षमता होती है कि वह अपने परिवार को स्वर्ग के समान बना देती है, क्योंकि वह बच्चे के जन्म से ही उसे अच्छे संस्कार देती है। इतना ही नहीं माँ के गर्भ में भी बच्चा सीखता है। माता **सुभद्रा** की कोख में अभिमन्यु द्वारा चक्रव्यूह भेदने की कला सीखने का अप्रतिम उदाहरण हमारे सामने है। माँ को प्रथम शिक्षक व उसके सानिध्य को

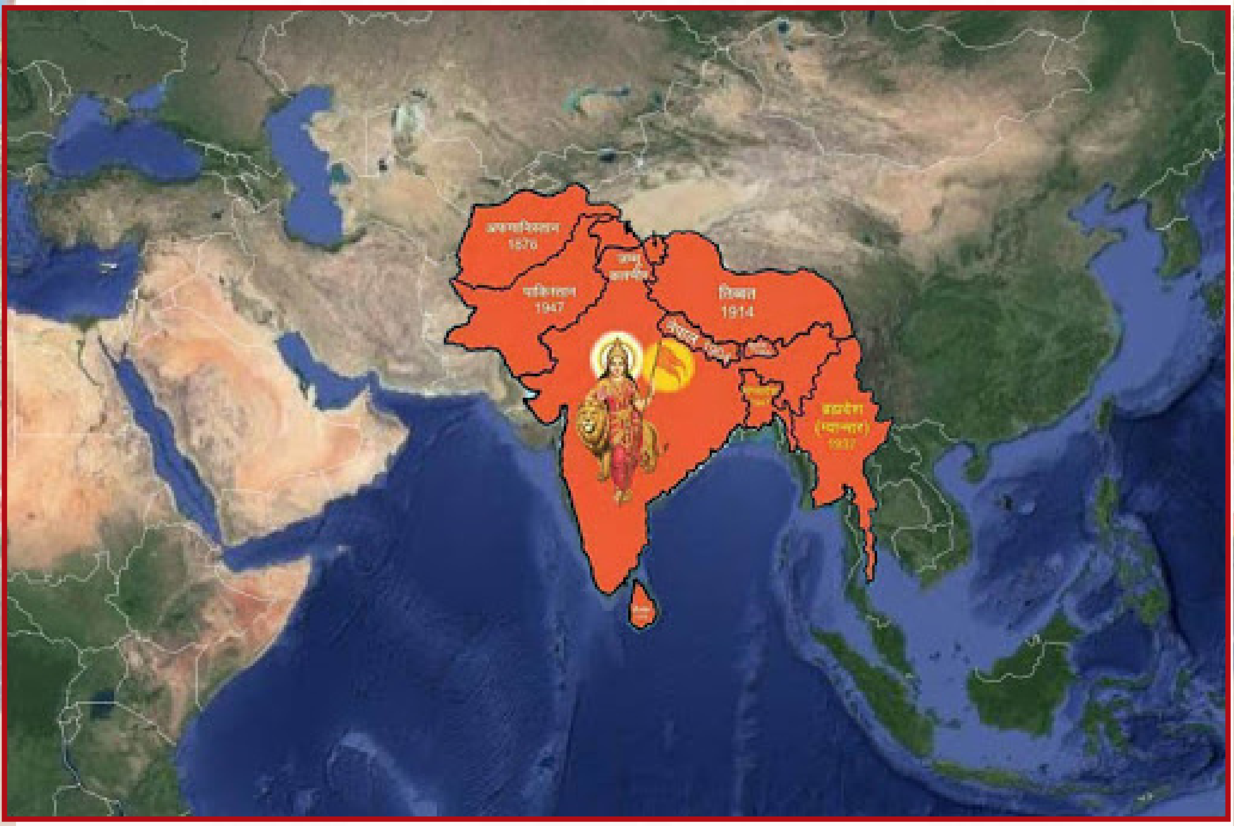

बच्चे की पहली पाठशाला माना जाता है। अपने ममत्व व आत्मीय व्यवहार से वह शिशु व परिवार के सदस्यों में परस्पर प्रेम एवं सहयोग के भाव जागृत करती है। अपने बच्चों में परस्पर बाँटने की प्रवृत्ति पैदा करती है, फिर चाहे वह धन हो, खाद्य पदार्थ हो या अन्य कोई चीज। शिशु का भावी जीवन माँ के तमाम सद्गुणों से ओत-प्रोत होता है। इसीलिए देखा गया है कि किसी भी युग पुरुष के व्यक्तित्व निर्माण में उनकी माता का योगदान सबसे खास रहता है फिर चाहे वीर शिवाजी की माता जीजाबाई हो, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की माँ पुतलीबाई हो, मुसोलिनी की माँ सिन्योर हो, लेनिन की माता रोजा हो या जार्ज वाशिंगटन की माँ मेरी हों।

माँ सृष्टिकर्ता है, पालनकर्ता है और परिस्थिति विशेष में वह संहारकर्ता भी बन जाती है। प्रातः स्मरणीया माँ देवी अहिल्याबाई होल्कर इसकी उदाहरण हैं। प्रकारांतर से माँ के उक्त तीन स्वरूप ब्रह्मा, विष्णु, महेश की भूमिका वाले ही हैं। इन स्वरूपों को अपने में समेटने वाली माँ पूज्य मानी गई है। नारी के सभी रूपों (माँ, कन्या, बहन, पत्नी, भाभी) में से मातृरूप को सबसे महान माना गया है।

माँ के मातृत्व भाव को कौशल्या के पुत्र प्रेम में देखिए। जिस **भरत** के कारण भगवान राम को वन जाना पड़ा, राजा दशरथ ने प्राण त्याग दिए, उसी भरत के प्रति विशाल हृदया माँ कौशल्या ने मन में जरा भी कड़वाहट नहीं आने दी, हालांकि **भरत** स्वयं **राम** की प्रतिमूर्ति बन गए थे। दूसरी ओर रानी कैकेयी थी, जिन्होंने राम के प्रति अपने स्नेह को तिलांजलि देकर उनके वनवास का वर माँगा और जीवन भर आत्मग्लानि तथा भर्त्सना का कारण बनीं। इसके विपरीत लक्ष्मण की माता सुमित्रा ने संकट की घड़ी में धैर्य नहीं खोया और राम के साथ लक्ष्मण को भी वन भेज दिया। पुत्र के कर्तव्य के आगे सुमित्रा ने अपने पुत्र प्रेम को भुला दिया। ऐसा ही अद्वितीय उदाहरण है झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और अमर-अजर बनी पन्ना धाय का। जहाँ रानी लक्ष्मीबाई अपने नन्हे-से पुत्र को पीठ पर बाँधकर रणभूमि में कूद पड़ीं वहीं पन्ना धाय ने राज-पुत्र उदयसिंह की जान बचाने के लिए अपने पुत्र चंदन की बलि चढ़ा दी। इससे यह पता चलता है कि माँ यदि अपने पुत्र पर सर्वस्व न्योछावर कर सकती है वहीं देश की, जन्मभूमि की रक्षा की खातिर अपने लाड़ले की आहुति भी दे देती है। आजादी के संग्राम से लेकर मौजूदा आतंकवाद के खिलाफ सेना के युद्ध संग्राम तक ऐसी असंख्य माताएँ अपने लाडलों को देश पर आहूत कर चुकी हैं।

आधुनिक संस्कृति के रंग में रंगे युवक माँ के प्रति अपने कर्तव्यों को भुलाकर उसे वृद्धाश्रम की शरण लेने पर विवश कर रहे हैं, फिर भी ममतामयी माँ के मन में अपने बच्चे के प्रति कोई दुर्भावना नहीं होती। वह सदा उसके हित की ही कामना करती है। एक कथा बहुत प्रसिद्ध है कि किसी प्रेयसी ने अपने प्रेमी से कहा कि यदि वह उसे सच्चा प्यार करता है तो अपनी माँ का हृदय लाकर दे। प्रेमी जब माँ का हृदय निकालकर ले जा रहा था तो रास्ते में उसे ठोकर लगी, इस पर माँ के हृदय से आवाज आई **बेटा संभलकर चलो, तुम्हें चोट तो नहीं आई।** ऐसा विशाल हृदय माँ के सिवाय और किसका हो सकता है? इसीलिए कहा जाता है कि पूत कपूत हो सकता है, पर माता कुमाता नहीं हो सकती।

यदि शब्दों की दृष्टि से अर्थ निकाले जाएँ तो जननी का अर्थ होता है वह नारी जिसने आपको जन्म दिया है और जन्मभूमि यानी वह भूमि जहां आपने जन्म लिया है परंतु वास्तव में देखें तो इन दोनों शब्दों का एक ही अर्थ है - **मां**। जननी अपने बच्चों को 9 महीने अपने गर्भ में रखती है और जन्म के बाद वह अपनी जन्मभूमि की गोद में आ जाता है।

जन्मभूमि को हर युग में बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है। माँ से भी ऊंचा। इसलिए जब भगवान राम को उनके छोटे भाई लक्ष्मण ने लंका विजय के बाद वहीं स्वर्णमयी लंका में रहने की बात कही तो राम ने उसे यह कहकर ठुकरा दिया था कि- **स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।**

प्रभु राम द्वारा कही गई यह बात सिद्ध करती है कि उनकी दृष्टि में जनभूमि का स्थान कितना ऊँचा था? परन्तु कभी-कभी प्रश्न आता है कि जननी व जन्मभूमि में से किसका स्थान ज्यादा ऊंचा माना गया है? हालांकि प्रश्न कठिन है लर कुछ प्रसंगों में उसका भी उत्तर प्राप्त हो जाता है। जब चंद्रशेखर आजाद को उनके क्रांतिकारी मित्रों ने उनके माता-पिता की दयनीय अवस्था बताकर यह आग्रह किया कि क्रांतिकारी दल की थोड़ी संपत्ति माता-पिता को दे दें तो उन्होंने स्पष्ट कहा - **जिस दिन माता-पिता मेरी कमजोरी बनने लगेंगे उस दिन एक-एक गोली उनके सीने में उतारकर उन्हें कष्टों से मुक्ति दे दूंगा परंतु मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए एकत्र धन का व्यक्तिगत हित में दुरुपयोग नहीं होने दूंगा।**

प्रकृति ने माँ और पुत्र का रिश्ता ही ऐसा बनाया है कि यदि बेटे को जन्मभूमि की गोद में आना है, तो पहले उसे जननी की गोद में ही आना होगा और हम ये नौ महीने का समय

तो भूल ही नहीं सकते हैं, जब बच्चा अपनी माँ के गर्भ में रहता है। तब वह धूल, शोर, लोभ, लालच व हिंसा और परेशानियों से मुक्त होता है। जब न उसे भूख प्यास की चिंता होती है, न तेज धूप व तीखी हवाएं सहनी होती है। इन नौ महीनों के काल में वह हर चिंता से मुक्त होता है। वह उसकी जननी ही तो है, जो उसकी रक्षा कवच होती है, और उसे अपना रक्त देकर पालती है ताकि वह जन्मभूमि को अपना रक्त अर्पण करने के लिये इस भूमि पर आ सके।

ये नौ महीनों का समय वह सिर्फ अपने बच्चे के लिये जीती है। उसका हर काम बच्चे के हित के लिये होता है। यहां तक की उसका खान-पान भी बच्चे के स्वास्थ के हित में होता है और इन सारी क्रियाओं में अभिमन्यु कब चक्रव्यूह भेदने के लिये तैयार हो जाता है, स्वयं अभिमन्यु को भी पता नहीं चलता है।

जन्मभूमि के लिये अपने प्राण न्यौछावर करने वाले छत्रपति शिवाजी महाराज जब केवल नन्हें शिवा थे, तब उन्हें किसने राष्ट्रभक्ति का पाठ पढ़ाया ? उनकी जननी जीजा माता ने। और उन्हें 13 वर्ष की उम्र में ही दूर खड़ा एक किला मांगकर उन्हें नन्हें शिवा से छत्रपति शिवा बना दिया था।

जब हम जननी को जन्मभूमि से कम मानते हैं तो शायद हम उसके विराट रूप को या उसके महान सहयोग को देख नहीं पाते हैं, जो उसने अपने बेटे को राष्ट्रभक्त बनाने के लिये दिया है। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि संतानों के लिये कुछ भी करने वाली माता का रिश्ता अन्य रिश्तों से छोटा कैसे हो सकता है? हम सुबह उठकर जन्मभूमि को तो इस भाव के साथ प्रणाम करते हैं कि तू धीरज की मूर्ति है, हमें धारण करती है, हमें अन्न जल देती है परन्तु उसी समय अपनी उस जननी को भूल जाते हैं, जो पूरा जीवन हमारे भोजन की चिंता में रहती है। बचपन की स्मृतियाँ चाहे कितनी ही धुंधली हो जाएं हम यह कैसे भूल सकते हैं कि-

हकीकत है, कोई दिलजोई नहीं,
माँ के जैसा कोई नहीं।
एक लम्हा नींद में चौंका था मैं,
मेरी माँ फिर मुद्दतों सोई नहीं।

वर्तमान समय में शायद जन्मभूमि के नाम पर गौरवगान करना, जयकारे लगाना, जीने मरने की कसमें खाना एक फैशन हो गया है, किन्तु उसी उत्कटता से शायद जननी के प्रति हमारी जो जिम्मेदारियां हैं उन पर हमारा ध्यान नहीं जाता है। जन्मभूमि की सीमाओं पर बढ़ते खतरों पर हम बड़े -बड़े लेख लिखते हैं, भाषण देते हैं, कविताएँ पढ़ते हैं, परन्तु घर में बैठी जननी की तार-तार होती साड़ी पर हम ध्यान नहीं देते हैं। हम ऐसा नहीं कहते हैं कि जननी का स्थान जन्मभूमि से बड़ा है परंतु छोटा भी नहीं है।

जन्मभूमि यदि हमें गोद देती है, तो जननी हमें उस गोद तक लाती है। और जन्मभूमि के लिये कुछ करने का भाव भी तभी पैदा हो सकता है, जब जननी के लिये हम कुछ करें। वैसे भी जननी व जन्मभूमि दोनों हमसे कुछ नहीं मांगती हैं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उनको कुछ देने का मन ही न बनायें। जननी वही होती है, जो पुत्र के माथे पर विजय तिलक लगाकर उसे रणभूमि के लिये विदा करती है। जननी पुत्र को जन्म देकर ही जन्मभूमि के लिये सब कुछ कर देती है। जननी के लिये जीना ही हमें जन्मभूमि के लिये जीना स्वतः सिखा देता है।

वेद, पुराण, स्मृति और दर्शन तक हर धर्मग्रंथ माँ का यशोगान करते हैं। हिन्दू धर्म ग्रंथ कहते हैं-

न मातु पर देवतम अर्थात माँ से बड़ा कोई देवता नहीं है। अभिप्राय यह है कि ममता का अनंत स्रोत माँ , बालक की प्रथम शिक्षिका माँ, संस्कारों का जीवंत उदाहरण माँ, और मानवता की संवाहक माँ सभी के आदर की अधिकारिणी है माँ। उसी के आँचल में पलती है सभ्यता और खिलती है संस्कृति। इसीलिए हम उसे जन्मभूमि कहें, मदरलैंड कहें या मादरे वतन कहें सबके लिए जन्मभूमि माँ के समान ही है। मातृभूमि के लिए हमारा रोम रोम ऋणी है। अतः हर सांस में हमें उसका हित चिंतन करना चाहिए।

नारी !!

तुम पीड़ा नहीं, तुम प्रहार हो,
तुम सृजन, तुम ही संस्कार हो
राधा की मुस्कान भी तुम,
सीता का बलिदान भी तुम।
लक्ष्मी का वरदान भी तुम,
सरस्वती का ज्ञान भी तुम ।
हो शबरी की मासूमियत भी,
और काली-कृत्य प्रचंड शत्रु-संहार भी तुम

सोनम उपाध्याय 'नौमी'

माँ की सनातन संकल्पना

डॉ. सुब्रतो गुहा

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

अर्थात् उस मातृ स्वरूपा देवी को निरंतर नमस्कार जो समस्त प्राणियों के आत्मा में विराजित हैं। सनातन हिंदू धर्म में प्राचीन काल से ही ईश्वर की संकल्पना देव एवं देवी दोनों स्वरूपों में की गई है। ईश्वर रूप में देवी को भक्तों के लिए माता माना जाता है। इसलिए हम सनातनधर्मी भारतवासी अपनी जन्मभूमि भारतवर्ष को भारत माता कहते हैं और श्रद्धापूर्वक सिर झुकाते हैं। पुण्यभूमि भारत अर्थात भारत माता की सीमाओं पर जब- जब देश के शत्रुओं ने आक्रमण किया है तब-तब भारत माता के सपूतों ने भारत माता की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों का भी बलिदान किया है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय भी विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष करते हुए लाखों स्वाधीनता संग्राम सेनानी अपनी भारत माता को विदेशी गुलामी की जंजीरों से मुक्त करने हेतु बलिदानी पुत्र- पुत्री बने अपने मुख से वंदे मातरम् और भारत माता की जय नारों का उद्घोष करते हुए भारत की सनातन सभ्यता- संस्कृति तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का मुख्य आधार मातृभूमि की भारत माता के रूप में संकल्पना रही है।

भारत के अनेक शहरों में भारत माता मंदिर है, जहाँ राष्ट्रभक्त सनातनधर्मी भारत माता की आरती में सहभागी बनते हैं। मालवा प्रान्त के उज्जैन शहर में भी भव्य भारत माता मन्दिर है। प्रतिदिन भारत माता मंदिरों में पूजा अर्चना करते हुए सभी जातियों के हिंदू नर-नारियों में समरसता का भाव जागृत होता है, क्योंकि हम सभी भारतवंशी एक ही माता भारत माता की संतान हैं- तब भला कोई ऊंचा या नीचा कैसे हो सकता है?

अखंडता भारत का मानस, और एकता है मिसाल,
हाथ थामकर एक जानकर, भेदभाव की गिरे दीवाल।

हमारे मालवा प्रान्त के नर नारी आज भी मालवा में होलकर वंश की महानतम महारानी अहिल्याबाई होल्कर का पुण्य स्मरण माता अहिल्याबाई के रूप में करते हैं। सन् 1725 से 1795 के अपने 60 वर्षीय जीवनकाल में एक विदुषी, प्रजापालक, आध्यात्मिक शासक के रूप में उन्होंने इतिहास के पृष्ठों पर अमित छाप छोड़ी है ।

माता अहिल्या केवल महामानव नहीं,
बल्कि एक कालजयी शासक है,
प्रणाम देवी स्वरूपा माता अहिल्या को,
जिन का जयकारा भारतवर्ष लगाता है।

वर्ष 2024- 25 में कृतज्ञ भारतवंशी माता अहिल्या की 300 वीं जयंती मना रहे हैं। सन 1767 से 1795

तक अपने यशस्वी शासनकाल द्वारा महारानी अहिल्या ने प्रमाणित किया कि नारी भी पुरुषों के समान शासन की बागडोर संभाल सकती है और पुरूष शासकों से भी अधिक उपलब्धियां अर्जित करने में सक्षम है । जिस प्रकार एक आदर्श माता अपने सभी संतानों के प्रति सामान्य स्नेह भाव रखती है उसी प्रकार महारानी अहिल्या ने स्वयं को प्रजा का शासक न मानकर प्रजा की माता माना एवं समस्त जाति के प्रजाजनों के कल्याण हेतु कार्य किया। होलकर राज्य के वंचित वर्ग, श्रमिकों, भूमिहीन कृषकों, की विधवाओं को न्याय दिलवाने हेतु उनके सार्थक प्रयास सदैव याद किए जाएंगे ।सल्तनत कालीन एवं मुगलकालीन विदेशी आक्रांता शासकों द्वारा ध्वस्त किए गए मंदिरों में से समूचे भारत के सैकड़ों मंदिरों का उन्होंने जीर्णोद्धार किया एवं पुनर्निर्माण करवाया - जिनमें काशी विश्वनाथ, सोमनाथ, बद्रीनाथ, रामेश्वरम, द्वारिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस तरह सनातन धर्म के पुनर्जागरण में माता अहिल्या का योगदान हम कभी नहीं भूल सकते।

मालवा भूमि को समृद्ध किया,
मस्तक सनातन धर्म का ऊंचा किया,
ऐसी अमर हमारी अहिल्या माता,
जिसपर गर्व करें भारत माता।

चतुर्वेद-उपनिषद एवं पुराणों में माँ-
'या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता'

डॉ. कामना लाड़

सनातन शास्त्रों में अनेक उल्लेख मिलते हैं, जिनमें माता केवल जन्म देने से ही प्रतिष्ठित नहीं होती अपितु पालन करने वाली माता को भी समुचित सम्मान एवं स्थान मिला है। मातृत्व के भाव से परिपूर्ण हर स्त्री को माता के समान ही सम्मान प्राप्त होता है। माँ वह अलौकिक शब्द है जिसके स्मरण मात्र से ही रोम-रोम पुलकित हो उठता है। हृदय में दिव्य भावनाओं का ज्वार उमड़ आता है। माँ की ममता, स्नेह, प्रेम, त्याग और वात्सल्य की छाया को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना संभव नहीं है। संतान के निर्माण एवं पालन-पोषण में माँ का पुरुषार्थ, धैर्य तथा संघर्ष शब्दों की सीमा में बांधा नहीं जा सकता। माँ ही वह व्यक्तित्व है जिससे बच्चा प्रतिपल मानसिक रूप से जुड़ा हुआ होता है। माताएं ही किसी भी राष्ट्र का वास्तविक आधार स्तंभ होती हैं। वे देश को उन्नति के शिखर पर ले जा सकती हैं। महापुरुष सदा ही श्रेष्ठ माता संतान हुआ करते हैं। हमारे वेद, पुराण, स्मृतियां, महाकाव्य, उपनिषद् माँ की अपार महिमा के गुणगान से भरे पड़े हैं। वेद में माँ को संतान की निर्माणकर्ता माना गया है। माँ के माध्यम से ही संतान में तप, ज्ञान, शक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। माँ की स्नेहमयी गोद में रहकर ही बच्चा अमूल्य संस्कारों को ग्रहण करता है। महाभारत में वेदव्यास जी ने माँ की विशिष्टता को वर्णित करते हुए कहा है- **नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मैत्री समं गति।**
नास्ति मातृसमं त्राणं, नास्ति मैत्री समं प्रिया।।

अर्थात- जीवन में माता के समान कोई छाया नहीं है, उसके समान कोई सहारा और रक्षक नहीं है तथा माँ के समान कोई प्रिय अथवा जीवनदाता नहीं है। माता के सानिध्य में ही मनुष्य ज्ञानवान और संस्कारवान बनता है। माँ संस्कारों की पाठशाला है। 'मनसा, वाचा, कर्मणा' प्रतिपल माँ अपनी संतान को समर्पित रहती है। अथर्ववेद में माँ की महिमा का गुणगान करते हुए कहा गया है **-तीर्थ तरन्ति प्रवतो महिः।**
अर्थात- माँ पृथ्वी के समान सब तीर्थों से युक्त है। माँ के चरणों में ही सभी तीर्थों का निवास है। मनुस्मृति में मनु महाराज जी कहते हैं- 'दस उपाध्याओं से एक आचार्य, सौ आचार्यों के समान एक पिता, हजार पिताओं से अधिक एक माता गौरवपूर्ण होती है।' माँ का प्यार, दुलार, ममता सब अतुलनीय है. इसलिए भगवान श्रीराम भी वाल्मीकि रामायण में अपने श्रीमुख से जननी का महत्व बताते हुए भ्राता लक्ष्मण को कहते हैं-

अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥

अर्थ- लक्ष्मण! भले ही यह लंका सोने से निर्मित हो, लेकिन फिर भी इसमें मेरी कोई रुचि नहीं. क्योंकि जननी (माँ) और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती हैं। महाभारत में यक्ष धर्मराज युधिष्ठर से पूछते हैं कि- भूमि से भी अधिक भारी क्या है, तब युधिष्ठिर कहते हैं- **माता गुरुतरा भूमेरू।** यानी माता इस भूमि से भी अधिक भारी है।

वेदों-उपनिषदों में माँ का स्वरूप - भारतीय संस्कृति में माता को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। वेदों में माँ को केवल जन्मदात्री ही नहीं, बल्कि पालन-पोषण करने वाली, संस्कारों को संजोने वाली, तथा संपूर्ण जीवन का आधार माना गया है। चारों वेदों **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद** में माता के विभिन्न रूपों का विस्तार से उल्लेख किया गया है। इन वेदों में पृथ्वी, गौ, नदियों, देवी और गृहलक्ष्मी के रूप में माँ को सम्मानित किया गया है।

❖ **पृथ्वी माँ (भू-माता) -** वेदों में पृथ्वी को माँ का दर्जा दिया गया है, क्योंकि वह सभी जीवों का भरण-पोषण करती है। पृथ्वी को सहनशीलता और धैर्य का प्रतीक माना गया है। माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। (अर्थात - यह पृथ्वी हमारी माता है और हम इसके पुत्र हैं।) - अथर्ववेद 12.1.12

❖ **गौ-माता -** गाय को भारतीय संस्कृति में माँ के समान स्थान प्राप्त है। वेदों में गाय को समस्त विश्व की माता कहा गया है। गावो विश्वस्य मातरः। (अर्थात-गाएँ संपूर्ण विश्व की माताएँ हैं।) - ऋग्वेद 6.28.1 गाय का दूध केवल शारीरिक पोषण नहीं देता, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक शुद्धि भी प्रदान करता है। इसी कारण गौ-सेवा को वेदों में पुण्यदायी माना गया है।

❖ **नदियों को माँ का स्थान -** भारत में नदियों को माँ के

रूप में पूजा जाता है। गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, गोदावरी आदि नदियाँ जीवनदायिनी, मोक्षदायिनी मानी गई हैं।

इमा न उर्वीरमृतस्य धारा, समुद्राद्रूर्मिमुदियर्ष्यन्तीः।
इदं पदं देवयज्याय पूर्व, नृचक्षसं पश्यतः पूर्वमेव ॥- ऋग्वेद 7.49.2 (अर्थात - ये नदियाँ अमृत की धाराओं के समान हैं, जो समुद्र से उत्पन्न होकर सभी को जीवन देती हैं।)

वेदों में माता का सामाजिक एवं धार्मिक महत्व -

❖ **मातृदेवो भव** - वेदों में माता को देवता के समान पूजनीय बताया गया है।

❖ **मातृ देवो भव।**
(अर्थात - माता देवता के समान होती है।) - तैत्तिरीय उपनिषद् 1.11.2
यह सूक्ति दर्शाती है कि माता का स्थान भगवान से भी ऊँचा है। संतान पर माता की कृपा सदा बनी रहती है।

❖ **गृहलक्ष्मी माँ के रूप में स्त्री** - वेदों में गृहलक्ष्मी को घर की माता के रूप में वर्णित किया गया है। स्त्री केवल परिवार की संरक्षिका ही नहीं, बल्कि पूरे समाज की उन्नति का आधार भी है।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥
(अर्थात - जो देवी सभी प्राणियों में माता के रूप में स्थित हैं, उन्हें बार-बार प्रणाम।) - देवीसूक्तम्, ऋग्वेद

उपनिषदों में माँ का उल्लेख कई जगहों पर मिलता है, जहां माँ को जीवन की उत्पत्ति और पालन-पोषण की शक्ति के रूप में वर्णित किया गया है। यहाँ कुछ उदाहरण हैं -

1. छांदोग्य उपनिषद्: छांदोग्य उपनिषद् में माँ को **धात्री** यानी पालन-पोषण करने वाली कहा गया है। इसमें कहा गया है कि माँ हमें जीवन देती है और हमारा पालन-पोषण करती है।

❖ **माता धात्री पिता जनिता** (छांदोग्य उपनिषद्, 6.9.3) - अर्थात् माँ हमें पालती है और पिता हमें जन्म देता है।

❖ **माता पुत्राणां प्राणाधारा** (छांदोग्य उपनिषद्, 6.9.4) - अर्थात् माँ पुत्रों के लिए प्राणों का आधार है।

2. तैत्तिरीय उपनिषद्: तैत्तिरीय उपनिषद् में माँ को **जननी** यानी माता कहा गया है। इसमें कहा गया है कि माँ हमें जीवन देती है और हमारा पालन-पोषण करती है।

❖ **माता जनयित्री पिता जनक** (तैत्तिरीय उपनिषद्, 1.9.1) - अर्थात् माँ हमें जन्म देती है और पिता हमें पैदा करता है।

❖ **माता पुत्राणां रक्षित्री** (तैत्तिरीय उपनिषद्, 1.9.2) - अर्थात् माँ पुत्रों की रक्षक है।

3. बृहदारण्यक उपनिषद्: बृहदारण्यक उपनिषद् में माँ को ❖ **प्रजापति** यानी सृष्टि की उत्पत्ति करने वाली कहा गया है। इसमें कहा गया है कि माँ हमें जीवन देती है और हमारा पालन-पोषण करती है।

❖ **माता प्रजापति** (बृहदारण्यक उपनिषद्, 1.4.1) - अर्थात् माँ प्रजापति (सृष्टि की उत्पत्ति करने वाली) है।

माता सर्वभूतानां जनयित्री (बृहदारण्यक उपनिषद्, 1.4.2) - अर्थात् माँ सभी जीवों को जन्म देने वाली है।

4. कठ उपनिषद्: कठ उपनिषद् में माँ को **उमा** यानी माता कहा गया है। इसमें कहा गया है कि माँ हमें जीवन देती है और हमारा पालन-पोषण करती है।

❖ **उमा तु माता** (कठ उपनिषद्, 1.11) - अर्थात् उमा

(माँ) ही हमारी माता है।

❖ **माता पुत्राणां सुखदा** (कठ उपनिषद्, 1.12) - अर्थात् माँ पुत्रों के लिए सुखदायिनी है।

उपनिषदों में माँ का उल्लेख करने से यह स्पष्ट होता है कि माँ को जीवन की उत्पत्ति और पालन-पोषण की शक्ति के रूप में माना जाता है। माँ की महत्ता और महिमा को उपनिषदों में विशेष रूप से वर्णित किया गया है। वेदों-पुराणों में माँ की आध्यात्मिक शक्ति - पुराणों में माँ को देवी के रूप में दर्शाया गया है। विभिन्न पुराणों में माँ दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, अन्नपूर्णा आदि के रूप में माँ का विस्तृत वर्णन मिलता है। देवी स्तुति एवं देवी महापुराण में देवियों की स्तुति केवल देवी स्वरूप में न होकर माँ के स्वरूप में की गई है। माता का यह रूप ब्राह्मणी से लेकर प्रकृति तक चराचर जगत में व्याप्त है।

❖ **माँ सरस्वती- ज्ञान की देवी** - सरस्वती देवी को वेदों में ज्ञान और संगीत की देवी माना गया है।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला, या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा, या श्वेतपद्मासना॥

(अर्थात - जो देवी कुंद फल और चंद्रमा के समान उज्ज्वल हैं, जो वीणा धारण करती हैं और श्वेत वस्त्र धारण किए हुए हैं, वे माँ सरस्वती हमारी बुद्धि को प्रकाशित करें।) - ऋग्वेद माँ सरस्वती को विद्या, बुद्धि और वाणी की अधिष्ठात्री देवी कहा गया है। वेदों में उनका अत्यधिक महत्त्व है।

❖ **माँ लक्ष्मी-समृद्धि की देवी** - पद्म पुराण में माता लक्ष्मी के उदय का वर्णन है। विष्णु पुराण और पद्म पुराण में माँ लक्ष्मी को धन, ऐश्वर्य और समृद्धि की देवी कहा गया है। पुराणों में माँ लक्ष्मी के 8 स्वरूपों का वर्णन है, जिन्हें अष्टलक्ष्मी कहा जाता है। माँ के अष्टलक्ष्मी स्वरूप (आदि लक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, गजलक्ष्मी, संतानलक्ष्मी, वीरलक्ष्मी, विजयलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी) सुख, समृद्धि प्रदान करते हैं।

नमस्तेस्तू महामाये श्रीपिठे सूरपुजिते ।
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तूते ॥1॥

माँ दुर्गा - शक्ति का स्वरूप - मार्कंडेय पुराण में माँ दुर्गा की स्तुति की गई है।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

वेदों में माँ दुर्गा को शक्ति का प्रतीक माना गया है। वे समस्त सृष्टि की रक्षक और संहारक दोनों हैं।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तु ते॥

(अर्थात - हे माता, आप सभी प्रकार के मंगलों की अधिष्ठात्री हैं। आप सभी प्राणियों की रक्षा करती हैं, आपको बार-बार नमन है।)- यजुर्वेद

❖ **माता के नव-रूपों की साधना** - भारतीय धर्म शास्त्रों में देवी अर्थात माता की आराधना के लिए चार नवरात्रों का प्रावधान मिलता है। जिनमें से दो नवरात्र गुप्त माने गए हैं एवं दो शारदीय एवं चैत्र नवरात्र में माता के नव-रूपों की साधना एवं आराधना की जाती है । नवरात्र में दसवां दिन विजयादशमी के रूप में मनाया जाता है जिसे एक ओर रावण के संहार के रूप में दशहरा; तो दूसरी ओर महिषासुर का मर्दन करने के कारण देवी माता की आराधना के लिए जाना जाता है।

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति. चतुर्थकम्॥
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति. महागौरीति चाष्टमम्॥
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मनाः॥

अर्थ- पहली शैलपुत्री, दूसरी ब्रह्मचारिणी, तीसरी चंद्रघंटा, चौथी कूष्मांडा, पांचवी स्कंध माता, छठी कात्यायिनी, सातवीं कालरात्रि, आठवीं महागौरी और नौवीं सिद्धिदात्री। ये माँ दुर्गा के नौ रुप हैं। भगवान शिव के अर्द्धनारीश्वर स्वरूप में जो देवी हैं, सिद्धिदात्री माता ही हैं। देवी सूक्त में माता के 10 रूपों का उल्लेख है, जो इस प्रकार हैं -

1. **धात्री** (पालन-पोषण करने वाली)- धात्री त्वं हि सर्वस्य जगतः प्रसूतिः (देवी सूक्त, 1.4)
2. **जननी** (जन्म देने वाली)- जननी त्वं हि सर्वस्य जगतः प्रसूतिः (देवी सूक्त, 1.5)
3. **प्रजापति** (सृष्टि की उत्पत्ति करने वाली)-प्रजापतिः त्वं हि सर्वस्य जगतः प्रसूतिः (देवी सूक्त, 1.6)
4. **उमा (माता)**- उमा त्वं हि सर्वस्य जगतः प्रसूतिः (देवी सूक्त, 1.7)
5. **गौरी** (शुभ्र और सुंदर)- गौरी त्वं हि सर्वस्य जगतः प्रसूतिः (देवी सूक्त, 1.8)
6. **सरस्वती** (ज्ञान की देवी)- सरस्वती त्वं हि सर्वस्य जगतः प्रसूतिः (देवी सूक्त, 1.9)
7. **लक्ष्मी** (समृद्धि की देवी)- लक्ष्मी त्वं हि सर्वस्य जगतः प्रसूतिः (देवी सूक्त, 1.10)
8. **पार्वती** (शिव की पत्नी)- पार्वती त्वं हि सर्वस्य जगतः

प्रसूतिः (देवी सूक्त, 1.11)
9. दुर्गा (संकट से रक्षा करने वाली)-दुर्गा त्वं हि सर्वस्य जगतः प्रसूतिः (देवी सूक्त, 1.12)
10. काली (समय की देवी)- काली त्वं हि सर्वस्य जगतः प्रसूतिः (देवी सूक्त, 1.13)

❖ **शास्त्रों में माँ के आदर्श रूप -** भारतीय संस्कृति में माँ को देवी स्वरूप में पूजा जाता है। शास्त्रों में माँ के विविध रूपों का वर्णन मिलता है, जो मातृत्व, त्याग, प्रेम, करुणा और शक्ति का प्रतीक हैं। वेदों, पुराणों और महाकाव्यों में माँ के आदर्श रूप, उनके त्याग और उनके द्वारा निभाई गई भूमिकाओं का विस्तृत वर्णन है ।

❖ **माता अदिति-** अदिति को वेदों में देवताओं की माता कहा गया है। वे असुरों से देवताओं की रक्षा करती हैं और सभी जीवों की संरक्षिका मानी जाती हैं। माता सती- सती ने अपने पिता दक्ष के अपमान से आहत होकर आत्मदाह कर लिया। उनकी कथा आत्मसेमान और मातृत्व की गरिमा का प्रतीक है। माता पार्वती- पार्वती माता ने भगवान गणेश और कार्तिकेय जैसे पुत्रों को जन्म दिया। गणेश जी के सिर कटने और पुनः हाथी का सिर लगाने की कथा मातृत्व के प्रेम और सहिष्णुता का प्रतीक है। माता काली- काली माता को शक्ति और संहार का प्रतीक माना जाता है। जब राक्षसों का अत्याचार बढ़ गया, तब देवी ने काली रूप धारण कर संहार किया। वे मातृत्व की उस शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो अपने संतानों की रक्षा के लिए संहारक रूप भी धारण कर सकती है। माता कौशल्या- वाल्मीकि रामायण में माता कौशल्या का उल्लेख श्रीराम की माता के रूप में मिलता है। माता कौशल्या ने श्रीराम को धर्म, नीति और करुणा का पाठ पढ़ाया। माता सीताऋ सीता माता ने अपने पति राम के साथ वनवास भोगा और अग्नि परीक्षा दी। उन्होंने अपने बच्चों का पालन वन में रहकर किया। उनका जीवन त्याग, धैर्य और प्रेम का सर्वोच्च उदाहरण है। माता देवकी- देवकी श्रीकृष्ण की जन्मदात्री माता थीं। उन्होंने कंस के अत्याचारों का सहन किया उनका धैर्य मातृत्व के आदर्श का प्रतीक है। माता यशोदा- भागवत पुराण में माता यशोदा के वात्सल्य और श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का सुंदर वर्णन मिलता है। माता कुंती- कुंती ने कठिन परिस्थितियों में अपने पुत्रों का पालन-पोषण किया। उन्होंने नीति और ममता के बीच संतुलन बनाए रखा। उनकी कहानी मातृत्व के धैर्य और संघर्ष की गाथा है। माता अनुसूया- माता अनुसूया (पतिव्रत धर्म और तपस्या के लिए प्रसिद्ध) और ऋषि अत्रि (सप्तऋषियों में से एक) का नाम अत्यंत श्रद्धा के साथ लिया जाता है। उनकी कीर्ति सुनकर देवी लक्ष्मी, पार्वती और सरस्वती को यह अभिमान हो गया कि उनके पति ही सर्वश्रेष्ठ हैं। उन्होंने त्रिदेवों ब्रह्मा, विष्णु और महेश से माता अनुसूया की परीक्षा लेने का अनुरोध किया। उनकी भक्ति, तपस्या और निःस्वार्थ प्रेम के कारण त्रिदेवों ने उनके पुत्र रूप में जन्म लिया, जिन्हें भगवान दत्तात्रेय कहा जाता है।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु- गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

भारतीय शास्त्रों में माँ के त्याग, प्रेम, धैर्य और शक्ति को इन कथाओं में व्यापक रूप से उकेरा गया है। ये कथाएं आज भी समाज को प्रेरणा देती हैं कि माँ केवल जन्म देने वाली ही नहीं, बल्कि सृष्टि की रक्षक, पोषक और संरक्षिका भी होती है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति व सेयता है, जिसे विश्व भर की सभी संस्कृति की जननी माना जाता है। माँ को मानवता की जन्मदात्री माना जाता है। माँ ब्रह्मांड में ईश्वर की सबसे अच्छी रचना है। केवल माँ शब्द के उच्चारण मात्र से ही ईश्वरीय कृपा की अनुभूति होती है, क्योंकि माँ की धन्य धारा से ही तो समस्त सृष्टि का सृजन हुआ है।

शतपथ ब्राह्मण की सूक्ति के अनुसार- अथ शिक्षा प्रवक्ष्यामः मातृमान् पितृमानाचार्यवान पुरुषो वेदः।
अर्थ- जब तीन उत्तम शिक्षक माँ, पिता और आचार्य हो तभी मनुष्य ज्ञानवान हो सकता है।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

सुस्वागतम
नर्मदा साहित्य मंथन
भोजपर्व

नर्मदा साहित्य मंथन

भोजपर्व

नर्मदा साहित्य मंथन
भोजपर्व

भोजपर्व

नर्मदा साहित्य मंथन
भोजपर्व

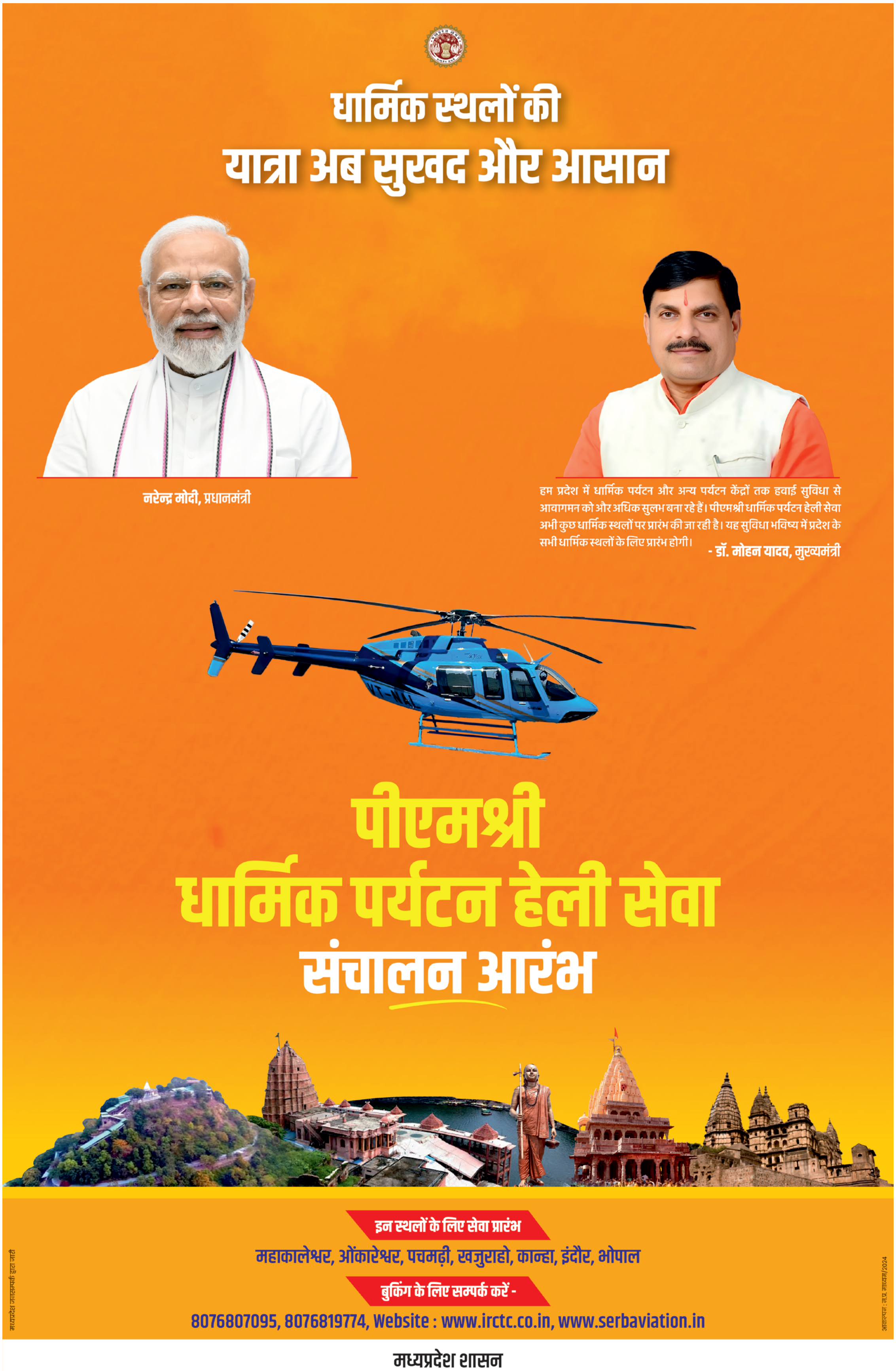

धार्मिक स्थलों की
यात्रा अब सुखद और आसान
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
हम प्रदेश में धार्मिक पर्यटन और अन्य पर्यटन केंद्रों तक हवाई सुविधा से आवागमन को और अधिक सुलभ बना रहे हैं। पीएमश्री धार्मिक पर्यटन हेली सेवा अभी कुछ धार्मिक स्थलों पर प्रारंभ की जा रही है। यह सुविधा भविष्य में प्रदेश के सभी धार्मिक स्थलों के लिए प्रारंभ होगी।
- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
पीएमश्री
धार्मिक पर्यटन हेली सेवा
संचालन आरंभ
इन स्थलों के लिए सेवा प्रारंभ
महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर, पचमढ़ी, खजुराहो, कान्हा, इंदौर, भोपाल
बुकिंग के लिए सम्पर्क करें -
8076807095, 8076819774, Website : www.irctc.co.in, www.serbaviation.in
मध्यप्रदेश शासन

FLYOLA
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
भोपाल, इंदौर, ग्वालियर
जबलपुर, रीवा, उज्जैन, खजुराहो
और सिंगरौली से
अंतरराज्यीय उड़ान
मध्यप्रदेश में पर्यटन
अब नयी ऊंचाइयों पर
पीएमश्री पर्यटन वायु सेवा
संचालन प्रारंभ
बुकिंग काउंटर
भोपाल, इंदौर और जबलपुर एयरपोर्ट
ऑनलाइन बुकिंग
www.flyola.in
ग्वालियर
खजुराहो
रीवा
सिंगरौली
उज्जैन
भोपाल
जबलपुर
इंदौर
“प्रदेश में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विकास के निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। पीएमश्री पर्यटन वायु सेवा प्रदेश के पर्यटन को नयी पहचान देगी। हमारे प्रदेश के नागरिकों एवं देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों को यह सेवा और अधिक सुविधा प्रदान करते हुए पर्यटन क्षेत्र को नये आयाम देने में सफल साबित होगी।”
- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश शासन
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी
आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2024